Creation Autonomous Academy

हिंदी व्याकरण

लेखक
डॉ० रामराज डेविड

विषय - सूची

अध्याय 1 भाषा और व्याकरण 3
अध्याय 2 वर्ण-विचार 6
अध्याय 3 संधि 15
अध्याय 4 शब्द-विचार 18
अध्याय 5 उपसर्ग 24
अध्याय 6 प्रत्यय 26
अध्याय 7 समास 28
अध्याय 8 अर्थ के आधार पर शब्द-भेद 31
अध्याय 9 संज्ञा तथा संज्ञा की व्याकरणिक कोटियाँ 34
अध्याय 10 सर्वनाम तथा सर्वनाम के भेद 48
अध्याय 11 विशेषण तथा विशेषण के भेद 53
अध्याय 12 क्रिया तथा क्रिया की व्याकरणिक कोटि – काल 60
अध्याय 13 अव्यय या अविकारी शब्द 65
अध्याय 14 वाक्य तथा वाक्य-संरचना 70
अध्याय 15 वाक्यगत अशुद्धियाँ और अशुद्धि शोधन 73
अध्याय 16 विराम-चिह्न 74
अध्याय 17 मुहावरे एवं लोकोक्तियाँ 77
अध्याय 18 अपठित गद्यांश 82
अध्याय 19 अपठित काव्यांश 84
अध्याय 20 संवाद-लेखन 86
अध्याय 21 सार-लेखन 88
अध्याय 22 अनुच्छेद-लेखन 92
अध्याय 23 पत्र – लेखन 94
अध्याय 24 निबंध-लेखन 98
अध्याय 25 चित्र-वर्णन तथा कहानी-लेखन 102
अध्याय 26 मौखिक अभिव्यक्ति 105

Creation Autonomous Academy

अध्याय 1 भाषा और व्याकरण
(Language and Grammar)

भाषा (Language)

जब भी हमें अपने मन की बात किसी दूसरे व्यक्ति तक पहुँचानी होती है तब हम या तो बोलकर या लिखकर अपनी बात दूसरों तक पहुँचाते हैं. अर्थात अपने मन की बात या अपने विचार दूसरों तक पहुँचाने के लिए हम किसी न किसी भाषा का सहारा लेते हैं। सोचिए, ईश्वर ने मनुष्य को अपनी बात दूसरों तक पहुँचाने के लिए भाषा के रूप में कितना बड़ा साधन दिया है। यदि हमारे पास भाषा जैसा साधन न होता तो हमारी स्थिति भी पशु-पक्षियों जैसी होती। आपने देखा होगा कि पशु-पक्षी बोलकर आवाजें तो निकाल लेते हैं, लेकिन हमारी तरह बातचीत नहीं कर सकते। इसका कारण यही है कि उनके पास भाषा नहीं है। अब आप समझ गए होंगे कि भाषा बातचीत करने का एक साधन है।

भाषा की परिभाषा

भाषा वह साधन है, जिसके द्वारा मनुष्य अपने मन की बातों. भावों और विचारों को दूसरों तक पहुँचाता है और दूसरों की बातों, भावों और विचारों को ग्रहण करता है।

इशारों को भाषा नहीं कह सकते

इस चित्र में अध्यापिका पड़ा रही हैं और दो बच्चे इशारों में बातचीत करने की कोशिश कर रहे हैं। इशारों से हम अपने मन की बात दूसरों तक पहुँचा तो सकते हैं, पर इशारों जैसे साधन को भाषा नहीं कहा जा सकता। ध्यान रखिए भाषा का संबंध केवल मनुष्य के मुख से उच्चारित होने वाली ध्वनियों से बने शब्दों और वाक्यों से होता है। यही भाषा के बोलचाल का रूप (spoken form) है। यह रूप उच्चारित होते ही समाप्त हो जाता है, क्योंकि यह रूप अस्थायी (unstable) है। भाषा को स्थायी रूप प्रदान करने के लिए लिखित भाषा (written language) का विकास हुआ, क्योंकि लिखित भाषा में जो बात आ जाती है, वह कभी समाप्त नहीं होती। इस तरह हर भाषा के दो रूप होते हैं-बोलचाल का रूप या उच्चारित रूप तथा लिखित रूप।

भाषा के रूप

1. मौखिक भाषा (Oral Language)
   यह भाषा के बोलचाल का रूप है। भाषा का यही रूप प्रमुख और पुराना है। जिस दिन से मनुष्य ने जन्म लिया होगा, उसी दिन से बोलना शुरू कर दिया होगा। परंतु भाषा के इस रूप की कमी यह है कि उच्चारित होते ही यह समाप्त हो जाता है। वक्ता श्रोता आमने-

Creation Autonomous Academy

सामने हैं तब तो बातचीत की जा सकती है, पर श्रोता कहीं दूर है तब हम बोलकर अपनी बात श्रोता तक नहीं पहुँचा सकते। मौखिक भाषा का आधार मनुष्य के मुख से उच्चारित होने वाली ध्वनियाँ होती हैं, क्योंकि इन्हीं ध्वनियों के मेल से शब्द बनते हैं और शब्दों से वाक्य।

2. लिखित भाषा (Written Language)
   भाषा के लिखित रूप का विकास तब हुआ होगा, जब मनुष्य ने यह सोचा होगा कि वह अपने मन की बात दूर बैठे व्यक्ति तक या आगे आने वाली पीढ़ी के लोगों तक भी पहुँचा सके। इस कार्य के लिए मौखिक भाषा को ध्वनियों के लिए तरह-तरह की आकृति वाले लिखित चिह्न बनाए गए होंगे। उच्चारित ध्वनियों के लिए विकसित ये लिखित चिह्न हो लिपि-चिह्न या वर्ण कहे जाते हैं।

व्याकरण (Grammar)

जब कोई व्यक्ति किसी भाषा को सीखता है तो वह अनेक प्रकार की ग़लतियाँ करता है। शुद्ध रूप में भाषा का प्रयोग करने के लिए उस भाषा के नियमों की जानकारी होनी बहुत जरूरी है। भाषा के ये नियम ही हमें यह बताते हैं कि कौन-सा वाक्य शुद्ध है और कौन-सा अशुद्ध तथा कोई वाक्य शुद्ध है या अशुद्ध है तो क्यों है? उदाहरण के लिए हिंदी तथा अंग्रेजी के निम्नलिखित वाक्य देखिए-

• बच्चा घर जाते हैं। She is eat mango. (दोनों वाक्य अशुद्ध हैं।)

इन दोनों वाक्यों को पढ़कर आप कह सकते हैं कि ये दोनों वाक्य ग़लत हैं। सही वाक्य होंगे-

• बच्चे घर जाते हैं। She is eating mango.

अब प्रश्न उठता है कि ये वाक्य क्यों ग़लत हैं? आप बता सकते हैं कि हिंदी के वाक्य की क्रिया यदि बहुवचन में है तो कर्ता भी बहुवचन में होगा अर्थात बच्चा के स्थान पर बच्चे का प्रयोग होना चाहिए। इसी तरह अंग्रेजी का वाक्य Present Continuous Tense में है, अतः इसकी क्रिया में eat के स्थान पर eating का प्रयोग होना चाहिए। इस तरह भाषा सीखने का अर्थ है, उस भाषा के नियमों की सही जानकारी प्राप्त करना।

अब प्रश्न उठता है कि भाषा के नियमों की जानकारी हमें कहाँ से मिलेगी? भाषा के नियमों की जानकारी उस भाषा के व्याकरण से मिलती है। व्याकरण भाषा के नियमों का संग्रह होता है। व्याकरण हमें यह बताता है कि भाषा का कौन-सा रूप सही है और कौन-सा ग़लत तथा कोई रूप सही या गलत क्यों है? अतः ध्यान रखिए- व्याकरण, वह शास्त्र है, जिसके अंतर्गत किसी भाषा के नियमों का अध्ययन किया जाता है।

Creation Autonomous Academy

व्याकरण की परिभाषा

भाषा के समस्त नियमों का अध्ययन जिस शास्त्र के अंतर्गत किया जाता है, उसे व्याकरण कहते हैं।

व्याकरण के अंग

- वर्ण-विचार
- शब्द-विचार
- वाक्य-विचार

Creation Autonomous Academy

अध्याय 2 वर्ण-विचार
(Orthography)

ध्वनि तथा वर्ण (Phone & Alphabet)

पिछले अध्याय में आप मौखिक और लिखित भाषा के बारे में पढ़ चुके हैं। आपको बताया गया था कि मौखिक भाषा का आधार मनुष्य के मुख से उच्चारित ध्वनियाँ होती हैं तथा लिखित भाषा में इन्हीं ध्वनियों के लिए कुछ चिह्न बना लिए जाते हैं, जिन्हें लिपि-चिह्न या वर्ण कहते हैं। अतः यदि वर्ण किसी ध्वनि का लिखित रूप है तो ध्वनि उस वर्ण का उच्चारित रूप। हर भाषा में ये ध्वनियाँ दो तरह की होती हैं-स्वर तथा व्यंजन।

स्वर तथा व्यंजन ध्वनियाँ (Vowels & Consonants)

स्वर

स्वर वे ध्वनियाँ हैं, जिनके उच्चारण में वायु बिना किसी रुकावट के मुख से बाहर निकल जाती है।

स्वरों के उदाहरण हैं-अ, आ, इ, ई, उ, ऊ आदि।

आप इन स्वरों को बोलकर देखिए। आपको पता चल जाएगा कि स्वरों के उच्चारण में मुख से वायु बिना किसी रुकावट के बाहर निकल रही है। जीभ ऊपर-नीचे तो आती-जाती है, पर इतना ऊपर नहीं जाती कि बाहर निकलने वाले वायु के रास्ते में रुकावट पैदा कर सके।

व्यंजन

परंतु जब आप किसी व्यंजन का उच्चारण करते हैं तब मुख से बाहर निकलने वाली वायु के मार्ग में रुकावट पैदा की जाती है। निचला होंठ या जीभ ऊपर उठकर मुँह के ऊपरी जबड़े में किसी न किसी स्थान पर बाहर निकलने वाली वायु के रास्ते में रुकावट पैदा करते हैं।

Creation Autonomous Academy

उदाहरण के लिए आप प् व्यंजन का उच्चारण करके देखिए। आपको पता चलेगा कि आपका निचला होठ ऊपर उठकर ऊपरी होठ को जाकर छूता है और इस तरह से मुख से बाहर निकलने वाली हवा के रास्ते में रुकावट पैदा हो जाती है। कहने का तात्पर्य यही है कि-

व्यंजन वे ध्वनियाँ हैं, जिनके उच्चारण में मुख से बाहर निकलने वाली वायु के रास्ते में रुकावट या अवरोध पैदा किया जाता है।

इसके अलावा व्यंजन को एक विशेषता यह भी है कि जब भी किसी व्यंजन का उच्चारण स्वतंत्र रूप से किया जाता है. हमेशा किसी न किसी स्वर की सहायता से हो होता है।

वर्णमाला

वर्ण के विषय में आपको पिछले अध्याय में भी बताया जा चुका है। भाषा की ध्वनियों (स्वर तथा व्यंजन) के लिए बनाए गए लिखित चिह्न वर्ण कहलाते हैं। अतः ध्यान रखिए 'वर्ण' स्वयं में 'ध्वनि' नहीं है, बल्कि किसी 'ध्वनि' के लिए बनाया गया लिखित चिह्न है। इस तरह से हर लिपि में दो तरह के वर्ण होते हैं-स्वर वर्ण तथा व्यंजन वर्ण।

लिखित चिह्नों या वर्षों के व्यवस्थित समूह को वर्णमाला कहते हैं।

हिंदी की वर्णमाला

स्वर-वर्ण	:	अ, आ, इ, ई, उ, ऊ ऋ, ए, ऐ, ओ, औ							
अनुस्वार	:	अं							
विसर्ग	:	अः							
आगत स्वर	:	ऑ							
अनुनासिक	:	अँ, आँ, ई. ई, उ, ऊँ, एँ. ऐ, ओ, औं							
व्यंजन-वर्ण	:	(क-वर्ग)	क	ख	ग	घ	ड		
		(च-वर्ग)	च	छ	ज	झ	ञ		
		(ट-वर्ग)	ट	ठ	ड	ढ	ण	ड़	ढ़
		(त-वर्ग)	त	थ	द	ध	न		
		(प-वर्ग)	प	फ	ब	भ	म		
			य	र	ल	व			
			श	ष	स	ह			
आगत व्यंजन	:		ज़	फ़					

मात्रा-चिह्न

Creation Autonomous Academy

आप जानते हैं कि संसार की हर भाषा में जब भी व्यंजनों का उच्चारण किया जाता है, तब हमेशा स्वरों के साथ मिलाकर ही किया जाता है परंतु जहाँ तक लिखने की बात है, हिंदी को छोड़कर सभी भाषाओं में स्वरों तथा व्यंजनों को अलग-अलग करके ही लिखा जाता है।

उदाहरण के लिए अंग्रेजी में सिट (sit) शब्द के सि का उच्चारण हमेशा व्यंजन स् तथा स्वर इ को मिलाकर ही किया जाता है, पर जब लिखते हैं तो को अलग तथा। को अलग लिखते हैं। पर हिंदी की स्थिति भिन्न है। हिंदी की लेखन-व्यवस्था इतनी अधिक वैज्ञानिक है कि इसमें जिस तरह व्यंजन और स्वर को मिलाकर बोलते हैं, वैसे ही व्यंजन और स्वर को मिलाकर लिखते भी हैं। हम यदि कि (क्+इ) बोलते हैं तो कि लिखते भी हैं। इसीलिए हमारी वर्णमाला में

स्वर ध्वनियों के लिए दो तरह के वर्ण बनाए गए। स्वतंत्र रूप से उच्चरित स्वरों के लिए अलग वर्ग तथा व्यंजनों के साथ मिलाकर बोले जाने वाले स्वरों के लिए अलग वर्ण। व्यंजनों के साथ मिलाकर लिखे जाने वाले स्वर वर्णों को मात्रा-चिह्न कहा जाता है।

सेट-1	सेट-2
अ, आ	X, ा
इ, ई	ि, ी
उ, ऊ	ु, ू
ऋ	ृ
ए. ऐ	े, ै
ओ, औ	ो, ौ

चूँकि अ स्वर हिंदी के प्रत्येक व्यंजन वर्ण में मिला हुआ है, अतः अ स्वर को मिलाकर लिखे जाने वाला वर्ण नहीं बनाया गया।

मात्रा-चिह्नों को व्यंजनों के साथ कहाँ तथा कैसे मिलाया जाता है, इससे संबंधित नियमों को आप छोटी कक्षाओं में सीख चुके हैं। अतः यदि आपको किसी शब्द में स्वर का उच्चारण स्वतंत्र रूप में करना है तो आप उसे सेट-1 के स्वर-वणों से लिखेंगे तथा यदि व्यंजन के साथ मिलाकर करना है तो सेट-2 के स्वर-वर्ण के साथ जैसे-अमर, आग, इत्र, ईख, उधार, ऊन, ऋषि, एक, ऐनक, ओस, औरत आदि (सेट-1 के वर्ण) तथा पल, पान, पिन, दीन, पुल, मूली, मृग, केक, पैसा, चोर, मौका आदि (सेट-2 के वर्षों के साथ मिलाकर)।

महत्वपूर्ण ध्वनियाँ और उनके वर्ण

ऋ-स्वर

यह पहले भी बताया जा चुका है कि संस्कृत में ऋ एक स्वर था। अन्य स्वरों की तरह हो इसके उच्चारण में भी वायु बिना किसी रुकावट के मुख से बाहर निकलती थी। हिंदी तक आते-आते स्वर के रूप में इसका उच्चारण समाप्त हो गया। हिंदी भाषा-भाषी इसका उच्चारण व्यंजन 'र्' स्वर 'इ' (रि) के रूप में करने लगे हैं। इस तरह हिंदी में रिक्त तथा ऋचा शब्दों की पहली ध्वनि के उच्चारण में कोई अंतर नहीं रह गया है, पर संस्कृत के ऋ स्वर वाले जो शब्द हिंदी में आ गए हैं, उनका लेखन आज भी संस्कृत की ही भाँति ऋ वर्ण से ही किया जाता है; जैसे ऋतु, ऋषि, मृग, दृश्य आदि।

Creation Autonomous Academy

अनुनासिक

संस्कृत से हिंदी को जो स्वर ध्वनियाँ मिली थीं, वे निरनुनासिक [Non Nasal] या मौखिक थों अर्थात् उनके बोलने में हवा केवल मुख से ही बाहर निकलती थी। हिंदी में आकर

सभी स्वरों का उच्चारण मुँह के साथ-साथ नाक से भी हवा बाहर निकालकर किया जाने लगा। इस तरह हिंदी में दो तरह के स्वर हो गए-निरनुनासिक स्वर तथा नासिक्यीकृत स्वर। नासिक्यीकृत स्वरों को ही अनुनासिक कहा गया। अनुनासिक शब्द की रचना दो शब्दों से मिलकर हुई है-अनु तथा नासिक। अनु का अर्थ है-अनुगमन करना या पीछे-पीछे चलना तथा नासिक शब्द का अर्थ है-नासिका या नाक। इस तरह स्वरों का उच्चारण करते समय जब हवा मुख के साथ-साथ नासिका मार्ग से होकर बाहर निकलती है तो वे स्वर अनुनासिक कहलाते हैं। अतः-

अनुनासिक वे स्वर हैं, जिनके उच्चारण में वायु मुख के साथ-साथ नाक से भी बाहर निकलती है। चूंकि अनुनासिकों का विकास हिंदी में हुआ था, इसलिए इनको लिखकर व्यक्त करने के लिए दो चिह्न बनाए गए-'चंद्रबिंदु' (ँ) तथा 'बिंदु' (ं)।

बिंदु तथा चंद्रबिंदु लगाने के नियम

ध्यान रखिए-

• जिन स्वर-वर्षों को शिरोरेखा के ऊपर स्थान खाली है अर्थात् मात्रा-चिह्न का कोई अंश नहीं है. उनके ऊपर अनुनासिक के लिए चंद्रबिंदु लगाया जाएगा; जैसे गाँव, आँख, चाँद, भाँग, पूँछ, मूंछ आदि।

• जिन स्वर-वर्षों की शिरोरेखा के ऊपर मात्रा का कोई अंश है तो उस वर्ष के ऊपर बिंदु लगाया जाएगा; जैसे-गोंद, बोच, केंचुली, चौंतीस, में आदि।

अनुस्वार

यदि अनुनासिक एक नासिक्यीकृत-स्वर है तो अनुस्वार एक नासिक्य व्यंजन है। इसके लिए भी बिंदु चिह्न (-) बनाया गया है। वर्णमाला में इसे अ स्वर के ऊपर बिंदु लगाकर अं के रूप में दिखाया जाता है। लेकिन यह व्यंजन अन्य व्यंजनों की तरह स्वतंत्र रूप से उच्चारित नहीं होता। इसका उच्चारण इस बात पर निर्भर करता है कि शब्द में यह कहाँ आ रहा है। यह शब्द में दो स्थानों पर आ सकता है-

(क) शब्द के अंत में - जब भी अनुस्वार, शब्द के अंत में आता है. हमेशा म् के रूप में उच्चारित किया जाता है; जैसे-स्वयम् (स्वयं), अहम् (अहं), पुस्तकम् (पुस्तकं) आदि।

(ख) शब्द के बीच में - शब्द के बीच में अनुस्वार जिस व्यंजन के पहले आता है, उसी व्यंजन के वर्ग के नासिक्य के रूप में इसका उच्चारण किया जाता है; जैसे क्-वर्ग के समस्त व्यंजनों के पहले इसका उच्चारण ङ् के रूप में, च्-वर्ग के व्यंजनों के पहले ज् के रूप में; ट्-वर्ग के

Creation Autonomous Academy

व्यंजनों के पहले ण् के रूप में; त-वर्ण के व्यंजनों के पहले न् के रूप में तथा प-वर्ग के व्यंजनों के पहले म् के रूप में किया जाता है।

देखिए निम्नलिखित उदाहरण-

गङ्गा - गंगा
चञ्चल - चंचल
कण्ठी - कंठी
चन्दा - चंदा
चम्पक - चपक
पंङ्कज - पंकज
पञ्जाव - पंजाव
भिण्डी - भिंडी
सन्तरा - संतय
लम्बा – लंबा

मानक वर्तनी के नियमों के अनुसार अनुस्वार का लेखन 'बिंदु' लगाकर करना चाहिए, उसके वर्ण से नहीं। अतः ध्यान रखिए 'गङ्गा', 'चञ्चल', 'पण्डित', हिन्दी, 'चम्पा' मानक नहीं हैं। इनके मानक रूप है-गंगा, चंचल, पंडित, हिंदी तथा चंपा।

विसर्ग

हिंदी की वर्णमाला में विसर्ग को भी अ स्वर के साथ अः के रूप में लिखकर दिखाया जाता है। संस्कृत में ह का उच्चारण दो तरह से होता था। एक तरह के उच्चारण के लिए ह चिह्न बनाया गया था तथा दूसरे के लिए विसर्ग। हिंदी में विसर्ग का उच्चारण समाप्त हो चुका है। इसे भी सब लोग ह के रूप में ही बोलते हैं। पर विसर्ग युक्त संस्कृत के जो शब्द हिंदी में आ गए हैं, उनका लेखन संस्कृत की ही तरह विसर्ग लगाकर किया जाता है; जैसे-प्रायः, प्रातः, अतः, स्वतः, गतिः आदि; पर हिंदी में उच्चारण के स्तर पर प्रातः तथा सुबह की अतिम व्यंजन ध्वनि के उच्चारण में कोई अंतर नहीं रह गया है।

Creation Autonomous Academy

आगत ध्वनियाँ तथा उनके वर्ण (Borrowed Phones & their Alphabets)

आगत शब्द का अर्थ होता है-आई हुई। अर्थात् आगत ध्वनियाँ वे ध्वनियाँ हैं, जो हिंदी में अन्य भाषाओं; जैसे-अरबी, फ़ारसी, तुर्की, अंग्रेजी आदि के शब्द आ जाने के कारण आ गई हैं। इनमें स्वर तथा व्यंजन दोनों ही प्रकार की ध्वनियाँ हैं। चूँकि ये ध्वनियाँ पहले से हिंदी में नहीं थीं, अतः इनके लिए नए वर्ण भी बना लिए गए हैं। ये ध्वनियाँ और इनके लिए विकसित वर्ण इस प्रकार हैं-

आगत स्वर - 'ऑ' उदाहरण-पॉकेट, डॉक्टर, कॉफ़ी, ऑर्डर, ऑफिस आदि।

आगत व्यंजन - ज़् फ़्।

आगत ध्वनियों से बनने वाले शब्दों का लेखन जहाँ तक हो सके उनके लिए बनाए गए वों से ही करना चाहिए; जैसे-सता, राज, मजा, जरा, सफर, फ़ायदा, फ़ोन, सफ़ाई आदि।

हिंदी की वर्तनी या लेखन-व्यवस्था

हिंदी-वर्तनी की प्रमुख विशेषताएँ इस प्रकार हैं-

1. हिंदी की वर्तनी में समस्त व्यंजनों एवं स्वरों को मिलाकर उसी तरह लिखा जाता है जिस तरह से मिलाकर उच्चारण किया जाता है। इसीलिए मिलाकर लिखे जाने के लिए स्वर वर्णों के अलग चिह्न विकसित किए गए हैं, जिन्हें मात्राएँ कहा गया है। व्यंजनों को सभी मात्राओं के साथ इस प्रकार लिखा जाता है-

   प पा पि पी पु पू पृ पे पै पो पौ

   त ता ति ती तु तू तृ ते तै तो तौ आदि।

2. संयुक्त व्यंजन-शब्दों में जब दो व्यंजनों को मिलाकर एक साथ बोला जाता है तो उन्हें मिलाकर ही लिखा भी जाता है; जैसे-बच्चा, पक्का, मिट्टी, गन्ना आदि। संयुक्त व्यंजनों को मिलाकर लिखे जाने के नियम व्यंजन-वर्णों की आकृति को ध्यान में रखकर बनाए गए हैं जो इस प्रकार हैं-

नियम 1-जिन व्यंजन-वर्णों के मध्य में पूरी खड़ीपाई आती है (जैसे क्, फ़ूफ़ु आदि) उनको अन्य व्यंजनों के साथ मिलाते समय खड़ीपाई के बाद आने वाले अंश को सीधी छोटी रेखा के रूप में कर दिया जाता है तथा शेष वर्ण को अगले वर्ण के साथ मिलाकर लिख दिया जाता है; जैसे-क् क्. फ् प् आदि।

देखिए उदाहरण-क्या, वाक्य, इक्का, मक्खन, हफ़्ता, दफ़्तर, कोफ़्त आदि।

नियम 2-जिन व्यंजन-वणों में खड़ोपाई अंत में आती है (जैसे-ख, ग, घ, च्, ज, झ्, णू, त्, थ, ध्, न्, प्, ब्, भ्, म्, य्, ल्, व्, स्, ष्, श्) उनको खड़ोपाई हटा दी जाती है तथा बचे हुए

वर्ण को अगले वर्ण से जोड़ दिया जाता है; जैसे-न् 'न', 'ल्ल' आदि। देखिए उदाहरण-दिल्ली, त्याग, तपस्या, पत्ता, रास्ता, दिव्य आदि।

नियम 3-गोलाकार व्यंजन वर्षों (जैसे - छ्, ट्, ठ्, ड्, ढ्, द्, तथा ह्) को अन्य व्यंजनों के साथ मिलाकर लिखते समय गोलाकार व्यंजन वर्षों के नीचे हलंत लगा दिया जाता है; जैसे अड्डा, गद्दा, मिट्टी, विद्या, चिह्न, ब्रह्म आदि।

Creation Autonomous Academy

र्-व्यंजन के संयुक्त रूप

र्-व्यंजन को लिखकर व्यक्त करने के लिए तीन चिह्न या वर्ण बनाए गए हैं-र् ,(ॅ) तथा (्र) जो तीन भिन्न-भिन्न स्थितियों के लिए हैं। ये तीन स्थितियाँ इस प्रकार है-

1. **'र्' स्वर-** यदि र्-व्यंजन किसी स्वर के साथ मिलाकर बोला जाता है तो उसे हमेशा र वर्ण से हो लिखा जाता है; जैसे-राजा (र्+आ+ज्+आ), रुपया (र्+उ+प्+अ+य्+आ), रोग (र्-ओ-म्+अ). रेत (र्-ए-त्-अ) आदि।
2. **'र्' + व्यंजन-** यदि र्-व्यंजन किसी अन्य व्यंजन के साथ मिलाकर बोला जाता है तो उसे दूसरे वर्ण (र्) से लिखा जाता है। इस वर्ण को रेफ़ कहते हैं। यह हमेशा उस व्यंजन को शिरोरेखा के ऊपर लगता है, जिस व्यंजन के साथ र् मिलाकर बोला जाता है; जैसे-कर्म (क्+अ+र्+म्+अ), दर्द (द्+अ+र्+र्+अ) आदि।
3. **व्यंजन 'र्'-** यदि कोई अन्य व्यंजन र् के साथ मिलाकर बोला जाता है तो र ध्वनि को तीसरे वर्ण (-) से लिखा जाता है और इसे खड़ीपाई वाले व्यंजनों में खड़ीपाई के निचले भाग में हुक की तरह से लगाया जाता है तथा गोलाकार व्यंजनों में हलत के साथ जोड़ दिया जाता है; जैसे-
   (क) खड़ीपाई वाले व्यंजन वर्ण + र - क् + र = क्र, आदि; जैसे-क्रय, प्राण, प्रताप, भ्रम आदि। 'द' तथा 'ह' में भी नीचे का भाग खड़ी पाई का अंश है अतः 'द् + र' तथा 'ह् + र' को भी 'द्र' तथा 'ह' के रूप में लिखा जाता है।
   (ख) खड़ीपाई वाला व्यंजन 'श' + र-जिस तरह संस्कृत में लिखा जाता था उसी तरह लिखा जाता है। संस्कृत में श् ध्वनि के लिए दो वर्ण बनाए गए थे-श् तथा श्। श्/ऋ के लिए न् वर्ण था तथा श् अन्य व्यंजन के लिए श् वर्ण। अतः शूर - श्र के रूप में तथा श्ऋ - शृ के रूप में लिखा जाता है; जैसे-परिश्रम, आश्रय, श्रीमती, श्रृंगार, श्रृंगाल आदि।
   (ग) गोलाकार व्यंजन ' ट् / ड्' + र-इन दोनों व्यंजनों में [,] चिह्न हलंत के साथ जोड़ दिया जाता है; जैसे-राष्ट्र, ट्रक, ट्रेन, ड्रम, ड्रिंक आदि।

Creation Autonomous Academy

संयुक्त व्यंजन 'क्ष', 'त्र' तथा 'ज्ञ'

दो या दो से अधिक व्यंजन जब एक साथ मिलाकर उच्चारित किए जाते हैं, तब वे संयुक्त व्यंजन कहलाते हैं; जैसे-बच्चा, पक्का शब्दों में 'च्च' तथा क्क संयुक्त व्यंजन हैं। संस्कृत में ऐसे ही तीन संयुक्त व्यंजनों के लिए तीन अलग वर्ण बना लिए गए। हिंदी की परंपरागत वर्णमाला में इनको अंत में दिखाया जाता है। ये वर्ण हैं-क्ष, त्र तथा ज्ञ।

'क्ष' वर्ण-यह वर्ण क्ष्अ ध्वनियों का संयुक्त रूप है। इसके उदाहरण हैं-शिक्षा, दीक्षा,यक्ष, दक्ष आदि।

'त्र' वर्ण-यह त्+र्+अ ध्वनियों का संयुक्त रूप है। इसके उदाहरण हैं-इत्र, पुत्र, मित्र, यात्रा आदि। मानक वर्तनी के अनुसार इसे ल के रूप में लिखा जाता है; जैसे-याला, मित्र आदि।

'ज्ञ' वर्ण-यह ज्ञ्अ ध्वनियों का संयुक्त रूप है। इसके उदाहरण हैं-आज्ञा, यज्ञ, ज्ञान, विज्ञान आदि। हिंदी में इसका उच्चारण ग्य (ग्य) के रूप में होने लगा है।

वर्तनी संबंधी अशुद्धियाँ तथा उनका शोधन

स्वर एवं उनकी मात्राओं से संबंधित अशुद्धियाँ

अशुद्ध	शुद्ध
अद्वितिय	अद्वितीय
आयू	आयु
क्वी	कवि
नदियाँ	नदियाँ
बिमार	बीमार

'ऋ' तथा 'र' की अशुद्धियाँ

रितु -ऋतु
रिण -ऋण
श्रंगार - श्रृंगार

'ज्ञ' तथा 'ग्य' की अशुद्धियाँ

योज्ञ - योग्य
विग्यान - विज्ञान

Creation Autonomous Academy

'श', 'ष', 'स' की अशुद्धियाँ

देस - देश
पुस्प - पुष्प
भविश्य - भविष्य

अनुस्वार तथा अनुनासिक संबंधी अशुद्धियाँ

गांव - गॉंव
कांच - कॉंच

आंधी - आँधी

वर्ण-विच्छेद (Segmentation of Alphabets)

आपने देखा था कि लिखित भाषा में शब्दों की रचना विभिन्न वर्गों (स्वर तथा व्यंजन) के मेल से होती है। यदि यह जानना हो कि किस शब्द की रचना कौन-कौन से वर्षों से हुई है तो हमें उस शब्द के वर्षों को अलग-अलग करके दिखाना होगा। शब्द के स्वर तथा व्यंजन वर्षों को अलग-अलग करके दिखाने को ही वर्ण-विच्छेद कहते हैं। देखिए कुछ उदाहरण-

शब्द वर्ण		विच्छेद
1. कमल	=	क् + अ + म् + अ + ल् + अ
2. लड़का	=	ल् + अ + ड़् + अ + क् + आ
3. बोतल	=	ब् + ओ + ज् + अ + र् + अ
4. पैसा	=	प् + ऐ + स् + आ
5. विद्वान	=	व् + इ + द् + व् + आ + न् + अ

Creation Autonomous Academy

अध्याय 3 संधि
(Joining)

संधि शब्द का अर्थ होता है-मेल। भाषा में अनेक शब्दों में कई ध्वनियों परस्पर मिलकर एक हो जाती हैं; जैसे- महा तथा ईश शब्दों के मिलने से महा शब्द की अतिम ध्वनि आ तथा ईश शब्द को पहली ध्वनि ई परस्पर मिलकर ऐ हो जाती है और शब्द बनता है-महेश। ध्वनियों के बीच इस प्रकार के मेल से होनेवाले परिवर्तन को सधि कहते हैं।

कुछ और उदाहरण देखिए-

1. देव + इंद्र = देवेंद्र (अ + इ→ए)
2. शिव + आलय = शिवालय (अ + आ→आ)
3. सत् + मार्ग = सन्मार्ग (त् + म→न्म)
4. निः + छल = निश्छल (: + छ→रछ)

यहाँ पहले दो उदाहरणों में दो स्वरों का मेल हो रहा है तथा तीसरे में दो व्यंजनों का और चौथे में पहली ध्वनि विसर्ग है तथा दूसरी व्यंजन।

संधि-विच्छेद-दो ध्वनियों के मेल को तो हमने संधि कहा। इसके ठीक विपरीत यदि किसी शब्द को इन ध्वनियों को अलग-अलग करके संधि से पहले वाली स्थिति में रख दिया जाए तो यह संधि-विच्छेद कहलाता है। विच्छेद शब्द का अर्थ हो है-अलग-अलग करना; जैसे-

महात्मा = महा + आत्मा
देवेन्द्र = देव + इंद्र
संगीत = सम् + गीत
उल्लास = उत् + लास
दुर्गम = दुः + गम
यद्यपि = यदि + अपि

ध्यान रखिए-

Creation Autonomous Academy

- किसी शब्द में दो ध्वनियों का परस्पर मेल ही संधि है।
- संधि के अंतर्गत कभी पहली ध्वनि में परिवर्तन हो जाता है तो कभी दूसरी में और कभी दोनों में ही परिवर्तन हो जाता है।
- सधि दो स्वरों, दो व्यजन्नचें अथवा विसर्ग तथा व्यंजन ध्वनियों के मध्य होती है।
- संधि की विपरीत प्रक्रिया जिसमें ध्वनियों को पुनः अलग-अलग करके (संधि से पहले को स्थिति में) रखा जाता है, संधि-विच्छेद कहलाती है।

संधि के भेद-प्रभेद

संधि के भेद

स्वर संधि | **व्यंजन संधि** | **विसर्ग संधि**

स्वर संधि :- दो स्वरों के मेल से जो परिवर्तन होता है, वह स्वर संधि कहलाता है;

देखिए उदाहरण -

1. मत + अनुसार = मतानुसार
2. धर्म + आत्मा धर्मात्मा
3. विद्या + अर्थी = विद्यार्थी
4. विद्या + आलय = विद्यालय
5. रवि + इंद्र = रवींद्र
6. हरि + ईश = हरीश
7. परि + ईक्षा = परीक्षा
8. मही + इंद्र = महोद्र
9. रजनी + ईश = रजनीश
10. लघु + उत्तर = लघुत्तर
11. सिंधु + ऊर्मि = सिंधूर्मि
12. देव + इंद्र = देवेंद्र
13. नर + इंद्र = नरेंद्र
14. राम + ईश्वर = रामेश्वर
15. महा + इंद्र = महेंद्र
16. कमला +ईश = कमलेश
17. पर + उपकार = परोपकार
18. हित + उपदेश = हितोपदेश
19. महा + उत्सव = महोत्सव
20. सप्त + ऋषि = सप्तर्षि
21. महा + ऋषि = महर्षि
22. सदा + एव = सदैव
23. तथा + एव तथैव
24. यदि + अपि = यद्यपि
25. अति + अंत = अत्यंत
26. अति + आचार = अत्याचार
27. इति + आदि = इत्यादि
28. नि + ऊन = न्यून
29. प्रति + एक = प्रत्येक
30. सु + अच्छ = स्वच्छ
31. सु + आगत = स्वागत
32. ने + अन = नयन
33. गै + अक = गायक
34. पो + अन = पवन
35. नौ + इक = नावि

Creation Autonomous Academy

व्यंजन संधि:- जब किसी व्यंजन ध्वनि के बाद कोई स्वर या व्यंजन आता है तो दोनों के मेल से जो परिवर्तन होता है; उसे व्यंजन-संधि कहते हैं।

देखिए व्यंजन संधि के कुछ उदाहरण-

1. वाक् + ईश = वागीश
2. षट् + आनन = षडानन
3. जगत् + ईश = जगदीश
4. उत् + घाटन = उद्घाटन
5. सत् + मार्ग = सन्मार्ग
6. जगत् नाथ = जगन्नाथ
7. उत् + चारण = उच्चारण
8. सत् + जन = सन्जन
9. उत् + लास = उल्लास
10. उत् + हार = उद्घार

विसर्ग संधि:- विसर्ग के बाद स्वर या व्यंजन ध्वनि आने से विसर्ग में जो परिवर्तन होता है; उसे विसर्ग संधि कहते हैं।

विसर्ग संधि के कुछ उदाहरण इस प्रकार हैं-

1. तप + बल = तपोबल
2. सर + वर = सरोवर
3. मन + रंजन = मनोरंजन
4. निः + चल = निश्चल
5. निः + संदेह = निःसंदेह या निस्संदेह
6. निः + धन = निर्धन
7. दुः + उपयोग = दुरुपयोग
8. दुः + गुण = दुर्गुण
9. पुनः + जन्म = पुनर्जन्म
10. दुः + दिन = दुर्दिन
11. निः + रोग = नीरोग
12. अतः + एव = अतएव

Creation Autonomous Academy

अध्याय 4 शब्द-विचार
(Morphology)

शब्द से तात्पर्य

नीचे दिए गए चित्रों को देखिए तथा बताइए उनके लिए आप किन शब्दों का इस्तेमाल करेंगे?

क्+उ+त्+त्+आ = कत्ता
झ्+आड़्+ऊ = झाड़ू
आ+म्+अ = आम

तीनों चित्रों के लिए आपने तीन शब्दों का इस्तेमाल किया-कुत्ता, झाड़ू तथा आम। ये सभी हिंदी के शब्द हैं। इन शब्दों की रचना भिन्न-भिन्न के मेल से हुई है। हर शब्द के वर्ण-विच्छेद से यह पता चल जाता है कि किस शब्द की रचना किन-किन ध्वनियों के मेल से हुई है।

यहाँ यह ध्यान रखना चाहिए कि ध्वनियों के मेल से बने ये शब्द सार्थक या अर्थवान होने चाहिए। ध्वनियों के मेल से बनी रचना का यदि कोई अर्थ नहीं है, तो उसे शब्द नहीं कह सकते, जैसे-आज्+अर्अ गाजर तो हिंदी का शब्द है, क्योंकि इसका एक अर्थ है. पर इन्हीं ध्वनियों के एक-दूसरे मेल से बनी रचना-ज्+आ+र्+अ+म्+अ जारग हिंदी का शब्द नहीं है। इसके अतिरिक्त भाषा में शब्दों का प्रयोग स्वतंत्र रूप से हो सकता है, अतः शब्द भाषा की स्वतंत्र इकाई है।

ध्यान रखिए-

- शब्द की रचना ध्वनियों के मेल से होती है।
- शब्द का कोई न कोई अर्थ अवश्य होता है।
- जिनका कोई अर्थ नहीं है, उन्हें शब्द नहीं कह सकते।
- शब्द भाषा की स्वतंत्र इकाई है।

Creation Autonomous Academy

शब्दों का वर्गीकरण

हर भाषा में असीमित शब्द होते हैं। अध्ययन की दृष्टि से इन शब्दों को अलग-अलग आधारों पर. अलग-अलग वर्गों में बाँट लिया जाता है। शब्दों के वर्गीकरण के कुछ प्रमुख आधार इस प्रकार हैं-

1. स्रोत या उत्पत्ति के आधार पर
2. रचना के आधार पर

3. शब्द-विकार के आधार पर
4. अर्थ के आधार पर

1. स्त्रोत या उत्पत्ति के आधार पर

स्रोत शब्द को अंग्रेजी में कहते हैं- 'source', किसी चीज का 'स्रोत' वह होता है, जहाँ से वह निकलती; है, जैसे-गंगा नदी का स्रोत हिमालय है, क्योंकि गंगा नदी वहीं से निकलती है।

इसी तरह से शब्दों का स्रोत वह भाषा होती है, जिससे वह शब्द निकलकर किसी दूसरी भाषा में जाता है। हिंदी में बहुत से शब्द संस्कृत से आए हैं. बहुत से अरबी-फ़ारसी, अंग्रेजी आदि विदेशी भाषाओं से तथा बहुत से शब्द हिंदी की अपनी बोलियों से भी आए हैं। इस तरह जो शब्द जिस मूल भाषा से आता है. उसी मूल भाषा को उस शब्द की स्रोत-भाषा कहा जाता है।

स्त्रोत के आधार पर शब्द-भेद

स्रोत के आधार पर हिंदी के शब्दों के निम्नलिखित भेद होते हैं-

(i) **तत्सम शब्द-**तत्सम शब्द दो शब्दों से मिलकर बना है-तत् तथा सम। तत् का अर्थ है-उसके और सम् का अर्थ है-समान। इस तरह तत्सम शब्द का अर्थ हुआ उसके समान अर्थात् संस्कृत के समान। अतः वे शब्द जो संस्कृत से हिंदी में आए हैं और आज भी उनका स्वरूप संस्कृत के समान ही बना हुआ है, तत्सम शब्द कहलाते हैं; जैसे-पंडित, विद्वान, सर्प, सिंह, मित्र, कृपा, दया, शिक्षा, स्वप्न, भव्य, अश्रु, दिव्य आदि।

(ii) **तद्भव शब्द-**तद्भव शब्द भी दो शब्दों से मिलकर बना है- तत् तथा भव। तत् का अर्थ आप जान चुके हैं, भव का अर्थ है-हुए। इस प्रकार तद्भव शब्द का अर्थ होगा उससे हुए या उससे विकसित हुए। अतः ये शब्द वे शब्द हैं, जो संस्कृत (तत्सम) के शब्दों से विकसित हुए हैं या विगड़कर बने हैं। इनके मूल रूप में थोड़ा-बहुत बदलाव आ गया है, पर हम इन शब्दों को देखकर इनके मूल शब्दों का पता लगा सकते हैं; जैसे-

Creation Autonomous Academy

तद्भव शब्द - मूल संस्कृत शब्द		
साँप - सर्प	माथा - मस्तक	जनम - जन्म
गाय - गौ	पत्ता - पत्र	सपना - स्वप्न
आग - अग्नि	दिन - दिनस	कान - कर्ण
काम - कार्य	दूध - दुग्ध	भीख - भिक्षा

(iii) **देशज या देशी शब्द** देशज शब्द का अर्थ है-देश में जन्मा हुआ। देशज शब्द वे शब्द है, जो हिंदी की बोलियों, ग्रामीण अंचलों आदि से हिंदी में आए हैं; जैसे-झाड़ू, गड़बड़, लोटा, पगड़ी, खिड़की, थैला, डिबिया आदि ऐसे ही शब्द हैं।

(iv) **विदेशी या आगत शब्द** जो शब्द अरबी-फ़ारसी-तुर्की, अंग्रेजी, पुर्तगाली आदि भाषाओं से हिंदी में आए हैं. वे शब्द विदेशी या आगत शब्द कहलाते हैं। आगत शब्द का अर्थ हो है आया हुआ; जैसे-

अरबी-फ़ारसी-तुर्की आदि भाषाओं से आए शब्द - काग़ज, दफ़्तर चाकू, जिला, कैची. पनीर, मसाला, किशमिश, पिस्ता, परदा, चपरासी, गरीब आदि।

अंग्रेजी से आए शब्द - डॉक्टर टेलीफोन, स्कूल, कॉलेज, टाई, चॉकलेट ट्रेन रेल, पेस्ट्री स्वेटर, सिगरेट, बैंक, बिस्किट, रेडियो, कैमरा, कार आदि।

2. रचना के आधार पर शब्द-भेद

यदि आप शब्दों की रचना पर ध्यान देंगे तो आपको भाषा में दो तरह के शब्द दिखाई देंगे। कुछ शब्द तो मूल शब्द होते हैं; जैसे-आग, पानी, दिल. फल. मकान, दुकान आदि। पर कुछ शब्द दो या दो से अधिक इकाइयों के योग या मेल से बनते हैं; जैसे घोड़ा सवार घुड़सवार सुंदरता सुंदरता, अन् आदर अनादर, वे ईमान ई बेईमानी आदि। दोनों प्रकार के शब्दों की रचना में अंतर होने के कारण रचना के आधार पर शब्दों के दो भेद किए जाते हैं-मूल शब्द तथा यौगिक शब्द।

(i) **मूल शब्द**-वे सरल शब्द जिनके और छोटे अर्थवान खंड नहीं किए जा सकते. मूल शब्द कहलाते हैं; जैसे-दाल, चावल, दुकान, मकान, किताब, क़लम, आटा, रोटी आदि। कभी-कभी कुछ मूल शब्द किसी विशिष्ट अर्थ में रूढ़ हो जाते हैं। उदाहरण के लिए हिंदी में गधा शब्द का सामान्य अर्थ है-पशु विशेष, परंतु समाज में इसका अर्थ मूर्ख के अर्थ में रूढ़ हो गया है। इस तरह मूल शब्द दो तरह के होते हैं-सामान्य मूल शब्द तथा रूढ़ मूल शब्द।

(क) सामान्य मूल शब्द-इस वर्ग में समस्त मूल शब्द आते है; जैसे मेज, कुरसी, कलम, दवात, पेंसिल, दूध, घर, कमरा, दुकान, सेब, संतरा, आटा, चावल आदि।

(ख) रूढ़ मूल शब्द-किसी विशिष्ट अर्थ में रूढ़ हो जाने वाले मूल शब्दः जैसे-

सामान्य मूल	शब्द सामान्य अर्थ	रूढ़ अर्थ
उल्लू	एक पक्षी	मूर्ख व्यक्ति
गाय	एक पशु	सीधी/सरल
वापू	पिता	महात्मा गांधी

Creative Autonomous Academy

(ii) **यौगिक शब्द**-जो शब्द एक से अधिक इकाइयों से मिलकर बनते हैं यौगिक या संयुक्त शब्द कहलाते हैं; जैसे-प्रधानमंत्री, राष्ट्रपिता राजमाता, रसोईघर, राष्ट्रीय, ईमानदार, घरवाला, विनम्र, असुंदर, विद्यार्थी आदि।

मूल शब्दों की ही भाँति कुछ यौगिक शब्द भी किसी विशिष्ट अर्थ में रूढ़ हो जाते हैं; जैसे-कालीमिर्च एक यौगिक शब्द है. जो काली तथा मिर्च दो शब्दों के मेल से बना है। इस शब्द का सामान्य अर्थ है-काले रंग की मिर्च, परंतु हिंदी में यह विशेष प्रकार को मिर्च (black peper) के अर्थ में रूढ़ हो गया है। अतः ऐसे यौगिक शब्द जो किसी एक विशिष्ट अर्थ के लिए रूढ़ हो जाते हैं, योगरूढ़ कहलाते हैं। इस दृष्टि से यौगिक शब्दों के भी दो भेद होते हैं-सामान्य यौगिक शब्द तथा रूढ़ यौगिक शब्द या योगरूढ़ शब्द। सामान्य यौगिक शब्दों के उदाहरण आप ऊपर देख चुके हैं. अब देखिए योगरूढ़ शब्दों के उदाहरण-

शब्द-रचना	यौगिक शब्द	सामान्य अर्थ	रूढ़ अर्थ
घर + वाला	घरवाल	गृहस्वामी	पति
आकाश + वाणी	आकाशवाणी	आकाश से होने वाली वाणी	रेडियो प्रसारण
मद्रास + ई	मद्रासी	मद्रास का रहने वाला	कोई भी दक्षिण भारतीय
नेता + जी	नेताजी	कोई भी नेता	सुभाषचंद्र बोस

3. शब्द-विकार के आधार पर शब्द-भेद

विकार के आधार पर शब्द के दो भेद किए जाते हैं-विकारी शब्द तथा अविकारी शब्द।

(i) **विकारी शब्द**-वाक्य में प्रयोग करते समय जिन शब्दों में विकार उत्पन्न होता है या जिनके रूप में परिवर्तन होता है, वे विकारी शब्द कहलाते हैं। हिंदी में विकारी शब्दों के अंतर्गत संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण तथा क्रिया शब्द आते हैं। देखिए उदाहरण-

शब्द-वर्ग	मूल रूप	विकारी रूप
सज्ञा बच्चा	बच्चे	बच्चों, बच्चों
सर्वनाम	हम	हमें, हमको, हमारा आदि
विशेषण	काला	काला, काले, काली
क्रिया	लिखना	लिख, लिखो, लिखें, लिखें आदि।

(ii) **अविकारी शब्द**-वाक्य में प्रयोग करते समय जिन शब्दों में विकार नहीं होता है या जिनके रूप में परिवर्तन नहीं होता है, वे अविकारी शब्द कहलाते हैं। अविकारी शब्द-वर्ग में क्रियाविशेषण, संबंधबोधक समुच्चयबोधक विस्मयादिबोधक तथा निपात आते हैं।

देखिए उदाहरण-

क्रियाविशेषण	-	यहाँ, वहाँ, कल, आज, धीरे, जल्दी आदि।
संबंधबोधक	-	ने, से. को, में, पर आदि।
समुच्चयबोधक	-	और, या, किंतु, परंतु, अथवा आदि।
विस्मयादिबोधक	-	अरे!, हाय!, उफ!, शाबाश! आदि।
निपात	-	हो. तक. भी. तो. आदि।

4. अर्थ के आधार पर शब्द-भेद

अर्थ के आधार पर शब्दों के निम्नलिखित प्रमुख भेद किए जाते हैं-एकार्थी अनेकार्थी पर्यायवाची या समानार्थी तथा विपरीतार्थक या विलोम शब्द।

(i) **एकार्थी शब्द**-जिन शब्दों का केवल एक ही अर्थ होता है. एकार्थी शब्द कहे जाते हैं; जैसे-दिल्ली, लंदन, इंदिरा गांधी, सुरेश रैना आदि। इस वर्ग में सभी व्यक्तिवाचक संज्ञा शब्द आते हैं।

(ii) **अनेकार्थी शब्द**-जिन शब्दों के एक से अधिक अर्थ होते हैं उन्हें अनेकार्थी शब्द कहते हैं; जैसे-

अनेकार्थी शब्द	अनेक अर्थ
तीर	किनारा, बाण
अर्थ	धन, मतलव
अमृत	अन्न, दूध
कुल	वंश, सारा
गुरु	शिक्षक, भारी
कनक	सोना, धतूरा

• इस वर्ग में जातिवाचक संज्ञा शब्द आते हैं।

Creation Autonomous Academy

(iii) **पर्यायवाची शब्द** - ऐसे शब्द जिनका अर्थ लगभग समान होता है पयार्यवाची या समानार्थी शब्द कहलाते हैं; जैसे-

शब्द	पर्यायवाची
आग	अग्नि, अनल, पावक
आकाश	गगन, आसमान, आसमाँ
बादल	जलद, नौरद, वारिद
इद्र	सुरेंद्र, सुरेश देवेश
रात	रजनी, रात्रि, निशा
हाथी	गज, नाग, हस्ती

(iv) विलोम शब्द-परस्पर विपरीत अर्थ का बोध कराने वाले शब्द विलोम शब्द कहलाते हैं; जैसे-

शब्द	विलोम शब्द
अंधकार	प्रकाश
इच्छा	अनिच्छा
जीवन	मरण
बुराई	भलाई
अमृत	विष
निकट	दूर
मित्र	शत्रु
सत्य	असत्य

Creation Autonomous Academy

अध्याय 5 उपसर्ग
(Prefix)

शब्द-रचना

एक शब्द से दूसरा शब्द बनाए जाने की प्रक्रिया हो शब्द रचना कहलाती है। उदाहरण के लिए ईमान शब्द के प्रारंभ में वे जोड़कर हम बेईमान और अंत में दार जोड़कर ईमानदार शब्द बना सकते हैं। इसी तरह से रसोई तथा घर शब्दों को जोड़कर हम रसोईघर शब्द बना सकते हैं। कहने का तात्पर्य यही है कि हर भाषा में शब्द रचना की प्रक्रिया तीन प्रकार से हो सकती है-

1. शब्द के आरंभ में शब्दांश जोड़कर; जैसे-

    वि + देश = विदेश
    सु + पुत्र = सुपुत्र
    प्रति + दिन = प्रतिदिन
    उप + वन = उपवन
    शब्द के आरंभ में जो अंश जोड़े जाते हैं वे उपसर्ग कहलाते हैं।

2. शब्द के अंत में शब्दांश जोडकर, जैसे-

    मित्र + ता = मित्रता,
    जादू + गर = जादूगर
    बगाल + ई = बंगाली
    शब्द के अंत में जो अंश जोड़े जाते हैं वे प्रत्यय कहलाते हैं।

3. दो शब्दों को मिलाकर; जैसे-

    गृह + प्रवेश = गृहप्रवेश
    घोड़ा + सवार = घुडसवार
    राष्ट्र + पिता = राष्ट्रपिता
    दो शब्दों के मेल से जो शब्द बनते हैं वे समास कहलाते हैं।

Creation Autonomous Academy

उपसर्ग (Prefix)

शब्दों के वे अर्थवान लघुतम अंश जो शब्दों के शुरू में लगकर नए-नए शब्दों की रचना करते है. उपसर्ग कहलाते हैं।

वस्तुतः उपसर्ग भी भाषा के सार्थक खंड हैं. पर शब्द की तरह स्वतंत्र रूप से प्रयुक्त नहीं हो सकते।

देखिए निम्नलिखित उदाहरण-

तत्सम या संस्कृत के उपसर्ग

उपसर्ग	अर्थ	उदाहरण
अति	अधिक	अत्यंत, अत्यधिक, अत्याचार
उप	निकद, छोटा	उपवन, उपस्थित, उपदेश, उपग्रह
वि	विशिष्ट, भिन्न	वियोग, बिनाश, विदेश
सम् (सं)	पूरी/ अच्छी तरह से	संपूर्ण, सम्मान, संपत्ति

तद्भव या हिंदी के उपसर्ग

उपसर्ग	अर्थ	उदाहरण
अध	आधा	अधजला, अधमरा
बिन	बिना	बिनब्याहा, बिनदेखे
चौ	यार	चौपाई, चौकन्ना
नि	रहित	निहत्था, निपूता

आगत / विदेशी उपसर्ग

उपसर्ग	अर्थ	उदाहरण
गैर	भिन्न	गैरहाज़िर, गैरज़िम्मेदार
ख़ुश	अच्छा	ख़ुशबू, ख़ुशनसीब
ना	नहीं	नापसंद, नाबालिग
बद	बुरा	बदनाम, बदबू

Creation Autonomous Academy

अध्याय 6 प्रत्यय
(Suffix)

उपसगों की तरह प्रत्यय भी भाषा की लघुतम अर्थवान इकाइयाँ हैं जो शब्द के अंत में लगकर नए-नए शब्द बनाते हैं; जैसे-राष्ट्र ईय राष्ट्रीय गुणवान गुणवान, चोरई चोरी, शेरनी शेरनी आदि।

ध्यान रखिए-

- प्रत्यय शब्द नहीं है बल्कि शब्दों के छोटे-छोटे अंश हैं।
- शब्दों की तरह इनका भी कोई न कोई अर्थ होता है।
- ये शब्द के अंत में बुडकर नया शब्द बनाते हैं।
- भाषा में इनका भी प्रयोग स्वतंत्र रूप से नहीं हो सकता।

प्रत्यय के प्रकार

1. कृत् प्रत्यय या क्रिया रूपों में लगने वाले प्रत्यय

वे प्रत्यय जो क्रिया या धातु रूप के साथ जुडकर संज्ञा विशेषण आदि नए शब्दों की रचना करते है. कृत् प्रत्यय कहलाते हैं; जैसे-

क्रिया / धातु रूप	प्रत्यय	शब्द
पढ़ (ना), लिख (ना)	+ आई	पढ़ाई, लिखाई
खेल (ना), बिछ (ना)	+ औना	खिलौना, बिछौना
उड़ (ना), मिल (ना)	+ आन	उड़ना, मिलान
बोल (ना), हँस (ना)	+ ई	बोली, हँसी

Creation Autonomous Academy

2. तद्धित प्रत्यय या अन्य शब्दों में लगने वाले प्रत्यय

ये प्रत्यय क्रिया के अलावा अन्य शब्दों; जैसे-संज्ञा, विशेषण, अव्यय आदि में लगते हैं और प्रायः संज्ञा/विशेषण बनाते हैं तद्धित प्रत्यय कहलाते हैं;

जैसे-

	प्रत्यय	उदाहरण
(i) संज्ञा से संज्ञा	- आपा	बुढ़ापा, पुजापा
	- ई	चोरी, पहाड़ी
	- हारा	लकड़हारा, पालनहारा
	- पा	बुढ़ापा, मोटापा
(ii) विशेषण से संज्ञा	- ता	योग्यता, महत्ता
	- आई	बुराई, महँगाई
(iii) संज्ञा से विशेषण	- ईला	शर्मीला, बर्फ़ीला
	- एरा	चचेरा, फुफेरा

Creation Autonomous Academy

अध्याय 7 समास
(Compound)

शब्द-रचना को तीसरी विधि है-समास द्वारा शब्द निर्माण। समास-रचना में दो या दो से अधिक शब्दों के मेल से एक नया शब्द बनाया जाता है; जैसे-

हस्त + लिखित = हस्तलिखित
चार + पाई = चारपाई
दश + आनन = दशानन
राजा + पुत्र = राजपुत्र

समास-प्रक्रिया में जिन दो शब्दों का मेल होता है, उनके अर्थ परस्पर भिन्न होते हैं तथा इन दोनों के योग से जो नया शब्द बनता है, उसका अर्थ इन दोनों से भिन्न होता है।

समास-रचना में भाग लेनेवाले पहले शब्द या पद को पूर्वपद तथा दूसरे शब्द या पद को उत्तरपद कहा जाता है। पूर्वपद एवं उत्तरपद के योग से बनने वाले नए शब्द को समस्तपद कहा जाता है।

समास-विग्रह-समस्तपद के सभी पदों को अलग-अलग किए जाने की प्रक्रिया समास-विग्रह कही जाती है; जैसे ग्रहखर्च राह के लिए खर्च, पथभ्रष्ट पथ से भ्रष्ट, माता-पिता माता और पिता आदि।

समास के भेद

- तत्पुरुष समास
- कर्मधारय समास
- द्विगु समास
- बहुब्रीहि समास
- द्वदव समास
- अव्ययीभाव समास

Creation Autonomous Academy

1. तत्पुरुष समास

जिस समस्तपद में पूर्वपद गौण तथा उत्तरपद प्रधान होता है तथा दोनों पदों के बीच कोई कारकीय सबंध होता है वहाँ तत्पुरुष समास होता है। विग्रह करते समय कारकीय-चिहनों, जिनका समास करते समय लोप कर दिया गया था, को पुनः जोड़ दिया जाता है; जैसे-

युद्धक्षेत्र - युद्ध का क्षेत्र, गुरुदक्षिणा गुरु के लिए दक्षिणा, जेबकतरा जेब को कतरनेवाला आदि। देखिए कुछ अन्य उदाहरण-

यशप्राप्त = यश को प्राप्त
भयभीत = भय से भीत

2. कर्मधारय समास

कर्मधारय समास में या तो पूर्वपद विशेषण तथा उत्तरपद विशेष्य होता है अथवा दोनों पदों के बीच उपमेय-उपमान का संबंध होता है तथा इस समास का विग्रह करते समय दोनों पदों के बीच कारकीय-चिह्न या परसर्ग नहीं आते; जैसे-

नील + कमल = नीलकमल (नीला है जो कमल)
भला + मानस = भलामानस (भला है जो माजस)

3. द्विगु समास

• द्विगु समास की सबसे बड़ी पहचान है कि इसका पूर्वपद संख्यावाची विशेषण होता है तथा उत्तर पद किसी समूह का बोध कराता है; जैसे-

चतुर्भुज = चार भुजाओं का समूह
चवन्नी = चार आनों का समाहार

• अतः विग्रह करते समय उत्तर पद के साथ 'समूह' या 'समाहार' शब्द अवश्य जोड़ा जाता है। यदि विग्रह करते समय उत्तरपद के साथ समूह या समाहार शब्द का प्रयोग नहीं किया गया हो, तो पूर्वपद संख्यावाची होते हुए भी 'कर्मधारय समास' कहलाएगा; जैसे-

1. दोपहर- दो पहर (है जो)- दो पहर का समाहार
2. नवरात्र- नौ राते (है जो)- नव (नो) रातों का समाहार

4. बहुब्रीहि समास

बहुब्रीहि समास के दोनों पद गौण होते हैं तथा दोनों पद परस्पर मिलकर किसी तीसरे पद के बारे में कुछ कहते हैं और यह तीसरा पद ही 'प्रधान' होता है।

उदाहरण के लिए पीतांबर शब्द पीत तथा अंबर इन दो पदों से मिलकर बना है। यदि इस शब्द का विग्रह पीले रंग का अंबर या वस्त्र किया जाएगा, तो विशेषण (पीत) तथा विशेष्य (अंबर) होने के कारण यह कर्मधारय समास का उदाहरण होगा। किंतु यदि इसका विग्रह किया जाए, पीला है अंबर जिसका अर्थात् श्रीकृष्ण तो यही उदाहरण बहुब्रीहि समास का हो जाएगा, क्योंकि इस विग्रह में पीत तथा अंबर दोनों पद मिलकर तीसरे पद श्रीकृष्ण की विशेषता बता रहे हैं।

Creation Autonomous Academy

5. द्वंद्व समास

•. द्वंद्व समास में दोनों पद प्रधान होते हैं अर्थात् कोई पद गौण नहीं होता।

• समस्तपद बनाते समय दोनों पदों को जोड़नेवाले अव्ययों-और, तथा, या आदि को हटा दिया जाता है; जैसे-

माता - पिता = माता और पिता
चाय - कॉफ़ी = चाय या कॉफ़ी
हार – जीत = हार अथवा जीत

6. अव्ययीभाव समास

जिस समास का पहला पद कोई अव्यय (अविकारी) शब्द होता है, उस समास को 'अव्ययीभाव समास' कहते हैं; जैसे-यथाशक्ति पद यथा और शक्ति के योग से बना है। इसका पूर्वपद यथा एक अव्यय है और इसका विग्रह होगा-शक्ति के अनुसार अव्ययीभाव समास के कुछ अन्य उदाहरण देखिए-

यथासमय (यथा) समय के सनुसार
हरपल (हर) पल - पल
प्रत्येक (प्रति) एक - एक

Creation Autonomous Academy

अध्याय 8 अर्थ के आधार पर शब्द-भेद
(Types of Words on the basis of Meaning)

1. पर्यायवाची शब्द (Synonyms)

- यह गणेश की मूर्ति है।
- यह गणपति की मूर्ति है।
- यह सिद्धिविनायक की मूर्ति है।
- कोई स्त्री नृत्य कर रही है।
- कोई नारी नृत्य कर रही है।
- कोई महिला नृत्य कर रही है।

ऊपर दिए गए चित्रों में मूर्ति के लिए गणेश, गणपति तथा विनायक शब्दों का प्रयोग किया गया है तथा नृत्यांगना के लिए स्त्री, नारी तथा महिला शब्दों का प्रयोग किया गया है। इस तरह के शब्द जो लगभग समान अर्थ बताते हैं समानार्थी या पर्यायवाची शब्द कहलाते हैं। ध्यान रखिए पर्यायवाची शब्द शत-प्रतिशत समानार्थी नहीं होते। इनके अर्थ में सूक्ष्म अंतर होता है। इसीलिए प्रत्येक पर्यायवाची शब्द को एक-दूसरे के स्थान पर रखकर प्रयोग करना संभव नहीं हो पाता। **देखिए कुछ पर्यायवाची शब्दों के उदाहरण-**

	शब्द	पर्यायवाची शब्द
1.	अँधेरा	अंधकार, तिमिर, तम, तमिस्त्र
2.	कपड़ा	वस्त्र, पर, चीर, परिधान
3.	पुत्र	बेटा, सुत, लड़का, आत्मज
4.	मित्र	दोस्त, सखा, मीत, सहचर
5.	स्वर्ग	इंद्रलोक, सुरलोक, देवलोक, बैकुंठ

2. विलोम/विपरीतार्थक शब्द (Antonyms)

Creation Autonomous Academy

राजा x रंक
गृहस्थ x संन्यासी
गर्म x ठंडा

ऊपर दिए गए शब्दों के जोड़े एक-दूसरे का विपरीत या विलोम अर्थ बता रहे हैं। ऐसे शब्दों को विलोम या विपरीतार्थक शब्द कहा जाता है। पर्यायवाची शब्दों में जहाँ दो शब्दों के बीच अर्थ की समानता होती है, वहीं विलोम शब्द परस्पर विपरीत अर्थ बताते हैं, जैसे-अच्छा × बुरा, योग्य × अयोग्य, जन्म × मृत्यु, इच्छा × अनिच्छा आदि।

3. अनेकार्थक शब्द (Polysemantic Words)

ऐसे शब्द जो एक से अधिक अर्थ बताते हैं अनेकार्थक शब्द कहलाते हैं। उदाहरण के लिए अंबर शब्द के दो अर्थ हैं-वस्त्र तथा आकाश। इन शब्दों के अर्थ संदर्भ से व्यक्त होते हैं; जैसे-फल शब्द के प्रयोग से संबंधित निम्नलिखित वाक्य देखिए-

(i) मैं मरीज के लिए फल लाया हूँ। (फ्रूट्स)

(ii) परिश्रम का फल हमेशा मीठा होता है। (परिणाम)

देखिए अनेकार्थक शब्दों के उदाहरण-

1. आम - एक फल, सामान्य
2. गिरा - वाणी, गिरजा क्रिया का रूप
3. स्नेह - प्रेम, तेल
4. पत्र - पत्ता, चिट्ठी
5. हर - हरना (चुराना), शिव

4. श्रुतिसमभिन्नार्थक शब्द/समरूपी भिन्नार्थक शब्द (Homonyms)

ये वे शब्द हैं, जो सुनने में समान प्रतीत होते हैं। सुनने में समान प्रतीत होने का अर्थ है कि इन शब्दों के रूप में पर्याप्त समानता होती है; जैसे-अभिराम तथा अविराम। दोनों के रूप में काफ़ी समानता है, पर दोनों के अर्थ भिन्न हैं। अभिराम शब्द का अर्थ हैं-सुंदर तथा अविराम शब्द का अर्थ है-लगातार।

अन्य उदाहरण

1. अंतर - हदय
   अंदर - भनर
2. दशा - हालत
   दिश - तरफ़
3. केसर - शेर की गर्दन के बाल
   केशर - कुमकुम
4. शर - तीर
   सर - सरोवर, तालाब

5. वाक्यांशों के लिए एक शब्द (One Word Substitution)

भाषाओं में ऐसे भी शब्द होते हैं, जो वाक्यांशों या बड़े कथनों के लिए इस्तेमाल किए जाते हैं। इन शब्दों के ज्ञान से बड़ी-बड़ी बातों को संक्षेप में कहा जा सकता है। उदाहरण के

Creation Autonomous Academy

लिए यदि कोई कहता है कि मेरा भाग्य अच्छा नहीं है तो इसके लिए एक शब्द अभागा का प्रयोग कर कहा जा सकता है कि मैं अभागा हूँ।

देखिए अन्य उदाहरण-

1. जिसकी कल्पना न की जा सके = अकल्पनीय
2. जो चिकित्सा (इलाज) करता है = चिकित्सक
3. जो ईश्वर में विश्वास न करता हो = नास्तिक
4. दूसरों पर उपकार करनेवाला = परोपकारी
5. जिसमें सहने की शक्ति हो = सहनशील

Creation Autonomous Academy

अध्याय 9 संज्ञा तथा संज्ञा की व्याकरणिक कोटियाँ
(Noun and its Grammatical Categories)

संज्ञा की परिभाषा

किसी प्राणी, वस्तु, स्थान, गुण, भाव आदि के नाम का परिचय करानेवाले शब्दों को संज्ञा शब्द कहते हैं।

संज्ञा के भेद

- व्यक्तिवाचक संज्ञा
- जातिवाचक संज्ञा
- भाववाचक संज्ञा

1. व्यक्तिवाचक संज्ञा

जो संज्ञा शब्द किसी व्यक्ति विशेष, प्राणी, वस्तु या स्थान का बोध कराते हैं, व्यक्तिवाचक संज्ञा कहलाते हैं।

जैसे-

- व्यक्तियों के नाम सुभाष चंद्र बोस, नरेंद्र मोदी, सलमान खान, राम, रहीम,अमिताभ आदि।
- वस्तुओं के नाम- महाभारत, रामचरितमानस (पुस्तकों/ग्रंथों न के नाम) गांडीव (अर्जुन के धनुष का नाम) सुदर्शन चक्र न (विष्णु के चक्र का नाम) ताजमहल (इमारत का नाम)
- प्राणियों के नाम- कामधेनु (देवताओं की गाय का नाम) एरावत (इंद्र के हाथी का नाम)
- स्थानों के नाम-दिल्ली, सूरत, लंदन (नगरों के नाम); जर्मनी, भारत (देशों के नाम); यूरोप, अमेरिका, (महाद्वीपों के नाम) आदि।

Creation Autonomous Academy

2. जातिवाचक संज्ञा

प्रत्येक व्यक्ति किसी न किसी जाति का सदस्य होता है; जैसे राम, सुरेश, अमित, मीरा आदि मनुष्य हैं, कामधेनु या ऐरावत प्राणी या जानवर हैं, ताजमहल, कुतुबमीनार 'इमारतें' हैं, गांडीव धनुष है, गंगा, यमुना नदियाँ हैं। इस तरह मनुष्य, जानवर, इमारतें, नदियाँ, धनुष, कुरसी, मेज़, रेडियो, टी०वी० आदि शब्द जातिवाचक संज्ञा के उदाहरण है।

अतः जो संज्ञा शब्द किसी जाति, समूह, पदार्थ, आदि का बोध कराते हैं, जातिवाचक संज्ञा शब्द कहलाते हैं।

जातिवाचक संज्ञा शब्दों के दो उपभेद किए जाते हैं-

(i) द्रव्यवाचक संज्ञा - इस वर्ग में द्रव्य/पदार्थ आते हैं, जिनसे तरह-तरह की वस्तुएँ बनाई जाती हैं; जैसे लोहा, सोना, चाँदी, ताँबा, कोयला, अनाज, प्लास्टिक, लकड़ी, घी, तेल, दूध, दही आदि।

(ii) समूहवाचक संज्ञा - समूह (group) या समुदाय का बोध करानेवाले शब्द समूहवाचक संज्ञा शब्द कहे जाते हैं; जैसे कक्षा, पुलिस, सेना, परिवार, भीड़, टीम आदि।

3. भाववाचक संज्ञा

जो संज्ञा शब्द किसी व्यक्ति या वस्तु के गुण, दोष, शील, स्वभाव, धर्म, भाव, अवस्था आदि का बोध कराते हैं, भाववाचक संज्ञा शब्द कहलाते हैं। जैसे- बुढ़ापा, क्रोध, मोटापा, शब्द-प्रेम, डर, क्रोध, भय, दया, सत्य, धर्म, घृणा, सुख, दुख, मृत्यु, जन्म, अच्छाई, बुराई, ईमानदारी, बेईमानी, जवानी, बुढ़ापा, लंबाई, चौड़ाई आदि।

भाववाचक संज्ञा शब्दों की रचना

1. जातिवाचक संज्ञा से भाववाचक संज्ञा

जातिवाचक संज्ञा		भाववाचक संज्ञा
सेवक	-	सेवा
प्रभु	-	प्रभुता
दोस्त	-	दोस्ती
युवक	-	यौवन
मानव	-	मानवता
मित्र	-	मित्रता
चोर	-	चोरी
बच्चा	-	बचपन

Creative Academy

2. सर्वनाम से भाववाचक संज्ञा

सर्वनाम	भाववाचक संज्ञा
मम	ममता
अपना	अपनत्व/अपनापन
अहं	अहंकार
निज	निजता/निजत्व

3. विशेषण से भाववाचक संज्ञा

विशेषण	भाववाचक संज्ञा
सफ़ेद	सफ़ेदी
गरम	गरमी
मीठा	मिठास
खट्टा	खटास

4. क्रिया से भाववाचक संज्ञा

क्रिया	भाववाचक संज्ञा
मिलना	मिलावट
हँसना	हँसी
पढ़ना	पढ़ाई
जीतना	जीत

संज्ञा की व्याकरणिक कोटियाँ : लिंग, वचन तथा कारक

लिंग (Gender)

लिंग शब्द अंग्रेजी के जेंडर (Gender) शब्द के लिए प्रयुक्त होता है। लिंग शब्द का सामान्य अर्थ है-चिहन या पहचान का साधन।

Creation Autonomous Academy

संज्ञा के जिस रूप से यह पहचान हो या पता चले कि वह संज्ञा शब्द पुरुष वर्ग का है अथवा स्त्री-वर्ग का, व्याकरण में उस रूप को लिंग कहते हैं।

लिंग के प्रकार

संस्कृत में तीन लिंग थे जबकि हिंदी में दो ही लिंग हैं-पुलिंग तथा स्त्रीलिंग।

1. पुलिंग-संज्ञा के जिस रूप से यह पता चले कि वह संज्ञा शब्द पुरुष वर्ग का है, उसे पुलिंग कहते हैं; जैसे-मोर, आदमी, शेर आदि।
2. स्त्रीलिंग-संज्ञा शब्द के जिस रूप से यह पता चले कि वह संज्ञा शब्द स्त्री-वर्ग का है, उसे स्त्रीलिंग कहते हैं; जैसे मोरनी, औरत, शेरनी आदि।

इसका अर्थ है कि प्रत्येक संज्ञा शब्द या तो पुंलिंग होगा या स्त्रीलिंग; जैसे-

पुलिंग	स्त्रीलिंग
पुलिंग	लड़की
घोड़ा	घोड़ी
चूहा	चुहिया
खिड़की	दरवाज़ा

संज्ञा-शब्दों का लिंग-निर्धारण

- जीवित प्राणियों की तुलना में निर्जीव वस्तुओं के लिंग को पहचानना कठिन होता है। अन्य शब्दों की ही तरह निर्जीव वस्तुओं के लिंग भी मातृभाषाभाषियों द्वारा तय कर दिए जाते हैं और उन्हें प्रयोग से ही सीखा जा सकता है; जैसे-हिंदी में दरवाजा, कमरा, पंखा, ताला, आलू, सेब, आदि अप्राणिवाची शब्द पुलिंग हैं तो माला, कुरसी, मेज़, दवात, चम्मच आदि शब्द स्त्रीलिंग।
- हिंदी में बहुत-से संज्ञा शब्दों के लिंग का निर्धारण प्रायः उनके सेक्स (sex) के आधार पर किया जाता है; जैसे-देव-देवी, बूढ़ा बुढ़िया, दादा-दादी, मामा-मामी आदि। पर ऐसे अनेक प्राणी हैं, जिनमें सेक्स के आधार पर अंतर करना संभव नहीं होता; जैसे कौआ, कोयल, मक्खी, लोमड़ी आदि। ऐसे शब्दों में प्रायः नर या मादा शब्द जोड़कर अंतर किया जाता है, जैसे-नर कोयल/ मादा कोयल, नर कौआ/मादा कौआ आदि।
- कुछ संज्ञा शब्द ऐसे भी होते हैं, जिनका प्रयोग दोनों लिंगों में होता है; जैसे मंत्री, डॉक्टर, राष्ट्रपति, प्रधानमंत्री, कैशियर, मैनेजर आदि। ऐसे शब्दों को उभयलिंगी कहा जाता है। इस तरह के शब्दों को भी वाक्य प्रयोग के आधार पर अभ्यास करें; जैसे-

Creation Autonomous Academy

पुंलिंग	स्त्रीलिंग
• मंत्री जी विदेश यात्रा पर जाएँगे।	• मंत्री जी विदेश यात्रा पर जाएँगी।
• डॉक्टर मरीज को देखने गए हैं।	• डॉक्टर मरीज को देखने गई हैं।

संज्ञा-शब्दों का लिंग-परिवर्तन

• हिंदी में पुलिंग शब्दों को मूल शब्द माना जाता है और उनमें प्रत्यय जोड़कर स्त्रीलिंग शब्द बनाए जाते हैं। पुंलिंग से स्त्रीलिंग बनाने के कुछ नियम इस प्रकार हैं-

1. - 'ई' प्रत्यय जोड़कर

पुंलिंग	स्त्रीलिंग
चाचा	चाची
मुर्गा	मुर्गी
लड़का	लड़की
बकरा	बकरी
घोड़ा	घोड़ी
नाना	नानी

2. - 'इया' प्रत्यय जोड़कर

पुंलिंग	स्त्रीलिंग
बूढ़ा	बुढ़िया
चूहा	चुहिया
गुड्डा	गुड़िया
कुत्ता	कुतिया
डिब्बा	डिबिया
बंदर	बंदरिया

3. - 'आनी/आणी' प्रत्यय जोड़कर

पुंलिंग	स्त्रीलिंग
नौकर	नौकरानी
देवर	देवरानी
क्षत्रिय	क्षत्राणी
इंद्र	इंद्राणी

4. 'आइन' प्रत्यय जोड़कर

Creation Arts Academy

पुंलिंग	स्त्रीलिंग
पंडित	पंडिताइन
ठाकुर	ठकुराइन
लाला	ललाइन
हलवाई	हलवाइन

5. -'नी' प्रत्यय जोड़कर

पुंलिंग	स्त्रीलिंग
जाट	जाटनी
मोर	मोरनी

सिंह	सिंहनी
ऊँट	ऊँटनी

6. - 'इन' प्रत्यय जोड़कर

पुंलिंग	स्त्रीलिंग
ग्वाला	ग्वालिन
धोबी	धोबिन
माली	मालिन
तेली	तेलिन

7. - 'इनी' प्रत्यय जोड़कर

पुंलिंग	स्त्रीलिंग
तपस्वी	तपस्विनी
हंस	हंसिनी
आज्ञाकारी	आज्ञाकारिणी
अभिमानी	अभिमानिनी

8. - 'इका' प्रत्यय जोड़कर

पुंलिंग	स्त्रीलिंग
सेवक	सेविका
लेखक	लेखिका
अध्यापक	अध्यापिका
संयोजक	संयोजिका

9. - 'वती'/ 'मती' प्रत्यय जोड़कर

Creation Autonomous Academy

पुंलिंग	स्त्रीलिंग
बुद्धिमान	बुद्धिमती
पुत्रवान	पुत्रवती
शक्तिमान	शक्तिमती
गुणवान	गुणवती
श्रीमान	श्रीमती
सत्यवान	सत्यवती

10. 'आ' प्रत्यय जोड़कर

पुंलिंग	स्त्रीलिंग
वृद्ध	वृद्धा
शिष्य	शिष्या
सदस्य	सदस्या
आचार्य	आचार्या

11. मूल पुंलिंग या मूल स्त्रीलिंग शब्दों में 'नर' या 'मादा' शब्द जोड़कर

पुंलिंग	स्त्रीलिंग	मूल स्त्रीलिंग	पुंलिंग
खरगोश	मादा खरगोश	छिपकली	नर छिपकली
भालू	मादा भालू	कोयल	नर कोयल
कौआ	मादा कौआ	मक्खी	नर मक्खी

12. मूल स्त्रीलिंग शब्दों में कोई प्रत्यय जोड़कर पुंलिंग शब्द

स्त्रीलिंग	पुलिंग
मौसी	मौसा
ननद	नंदोई/ननदोई
बहन	बहनोई
जीजी	जीजा

13. भिन्न रूपवाले स्त्रीलिंग शब्द

पुंलिंग	स्त्रीलिंग
राजा	रानी
फूफा	बुआ
बैल	गाय
कवि	कवयित्री
युवक	युवती
पुरुष	स्त्री
सम्राट	सम्राज्ञी

14. हिंदी में कुछ संज्ञा शब्द ऐसे भी हैं जो सदैव 'पुलिंग' या 'स्त्रीलिंग' में ही रहते हैं; जैसे स्त्रीलिंग कोयल, मछली, मक्खी, छिपकली, मैना। पुंलिंग-भालू, तोता, मगरमच्छ, खरगोश, मच्छर, गैंडा, पक्षी आदि। ऐसे शब्दों में 'नर' या 'मादा' शब्द जोड़कर लिंग बदला जाता है।

15. कुछ ऐसे संज्ञा शब्द भी हैं, जिनका प्रयोग दोनों लिंगों में होता है; जैसे डॉक्टर, इंजीनियर, खिलाड़ी, राष्ट्रपति, प्रधानमंत्री आदि।

वचन (Number)

वचन शब्द अंग्रेजी के (Number) के लिए प्रयुक्त होता है। इस व्याकरणिक कोटि से यह पता चलता है कि कोई संज्ञा शब्द एक इकाई के रूप में ग्रहण किया जाएगा अथवा अनेक इकाइयों के रूप में।

संज्ञा के जिस रूप से यह पता चलता है कि उसकी (संज्ञा/सर्वनाम की) संख्या एक है अथवा अनेक, व्याकरण में वह रूप 'वचन' कहलाता है।

वचन के प्रकार

हिंदी में संज्ञा शब्द दो वचनों में पाए जाते हैं-

1. **एकवचन-**जहाँ किसी संज्ञा शब्द से एक वस्तु या एक व्यक्ति का बोध होता है, वहाँ वह शब्द एकवचन में होता है, जैसे मेज, किताब, माला, केला, संतरा, पुस्तक आदि।
2. **बहुवचन-**जहाँ किसी संज्ञा शब्द से एक से अधिक वस्तुओं या व्यक्तियों का पता चलता है, वहाँ वह शब्द बहुवचन में होता है, जैसे मेजें, किताबें, मालाएँ, केले, संतरे, पुस्तकें आदि।

इसका अर्थ है कि अधिकतर संज्ञा शब्द के एकवचन एवं बहुवचन रूप होते हैं।

वचन-परिवर्तन

वचन-परिवर्तन के लिए संज्ञा के लिंग की जानकारी होना अनिवार्य है, क्योंकि हिंदी में पुंलिंग शब्दों के बहुवचन बनानेवाले प्रत्यय अलग हैं तथा स्त्रीलिंग शब्दों के अलग। यदि संज्ञा के लिंग का ज्ञान नहीं है तो वचन-परिवर्तन करना संभव नहीं है। संज्ञा के लिंग की जानकारी के बाद एकवचन से बहुवचन निम्नलिखित तीन चरणों में बनाएँ-

Creation Autonomous Academy

चरण 1-सभी संज्ञा शब्दों को पुलिंग तथा स्त्रीलिंग दो अलग-अलग वर्गों में बाँट लें-

पुंलिंग	स्त्रीलिंग
कुत्ता, कान	नारी, आँख
लड़का, घोड़ा	माला, महिला
थैला, पानी	गति, चुहिया
पति, साधु	वधु, बहू

चरण 2-अब इन शब्दों को निम्नलिखित विवरण के अनुसार पुनः दो-दो वर्गों में बाँट लें-

पुंलिंग शब्द :-

आकारांत शब्द - लड़का, घोड़ा, कुत्ता, थैला

अन्य शब्द - कान, पति, पानी, साधु, भालू

स्त्रीलिंग शब्द :-

इ/ईकारांत/इयांत शब्द – गति, नारी, दवाई, चुहिया

अन्य शब्द – आँख, माला, वधु, बहू

चरण 3-अब इन शब्दों के बहुवचन कोष्ठक में दिए गए नियमों के आधार पर बनाएँ-

पुलिंग शब्द:-

आकारात शब्द - ['-ए' प्रत्यय जोड़ें], लड़का + ए = लड़के, कुत्ते, घोड़े, थैले

अन्य शब्द - ['शून्य' प्रत्यय जोड़ें], पानी+शून्य = पानी, कान, पति, साधु

स्त्रीलिंग शब्द:-

इ/ईकारांत/इयांत शब्द - ['-आँ' प्रत्यय जोड़ें], नारी+'आँ' = नारियाँ,गतियाँ, चुहियाँ,दवाइयाँ

अन्य शब्द - ['-एँ' प्रत्यय जोड़ें], आँख+एँ = आँखें, मालाएँ, महिलाएँ, वधुएँ

वचन-परिवर्तन के उदाहरण

1. '-ए' प्रत्यय जोड़कर

Creation Academy

एकवचन	बहुवचन
बच्चा	बच्चे
थैला	थैले
रुपया	रुपये
छाता	छाते
ताला	ताले
प्यासा	प्यासे

2. '-एँ' प्रत्यय जोड़कर

एकवचन	बहुवचन
पुस्तक	पुस्तकें
कविता	कविताएँ
गाय	गाएँ
आँख	आँखें
बहू	बहुएँ

3. '-आँ' प्रत्यय जोड़कर

एकवचन	बहुवचन
दवाई	दवाइयाँ
कुरसी	कुर्सियाँ
बिल्ली	बिल्लियाँ
झाड़ी	झाड़ियाँ
तिथि	तिथियाँ
बेटी	बेटियाँ
बुढ़िया	बुढ़ियाँ
गुड़िया	गुड़ियाँ
डिबिया	डिबियाँ

4. समूहवाची शब्द जोड़कर

कुछ शब्दों में समूहवाची शब्द, जैसे 'लोग', 'गण', 'वृंद', 'वर्ग', 'जन' आदि जोड़कर भी बहुवचन बनाए जाते हैं, जैसे-

Creation Academy

एकवचन	बहुवचन
नेता	नेतागण
पक्षी	पक्षीवृंद
लेखक	लेखकगण
मजदूर	मजदूरलोग
अधिकारी	अधिकारीवर्ग
सभ्य	सभ्यलोग

• हिंदी में कुछ शब्द हमेशा बहुवचन में ही प्रयुक्त होते हैं; जैसे- आँसू बाल समाचार

• हिंदी में कुछ संज्ञा शब्द हमेशा एकवचन में ही प्रयुक्त होते हैं; जैसे- क्रोध भय डर क्षमा प्रेम वर्षा हवा

कारक (Case)

संज्ञा या सर्वनाम का वह रूप, जिससे यह पता चले कि वाक्य की क्रिया के साथ उस संज्ञा या सर्वनाम का क्या संबंध है, कारक कहलाता है।

कारक: भेद-प्रभेद

वाक्य में संज्ञाओं और क्रियाओं के संबंध को ध्यान में रखकर संस्कृत के प्राचीन वैयाकरणों ने कारकों के छह भेद किए थे-

1. कर्ता कारक -[वह संज्ञा, जो क्रिया को पूरा करने का काम करती हो]
2. कर्म कारक -[वह संज्ञा, जिस पर क्रिया का फल या प्रभाव पड़ता हो]
3. करण कारक -[वह संज्ञा, जो क्रिया को पूरा करने में 'साधन' का कार्य करती हो]
4. संप्रदान कारक -[जिस संज्ञा के लिए क्रिया घटित होती हो।
5. अपादान कारक -[जिस संज्ञा से किसी अन्य संज्ञा के अलग होने का भाव प्रकट होता हो]
6. अधिकरण कारक -[जो संज्ञा क्रिया के घटित होने का आधार बनती हो]

• आगे चलकर इस सूची में दो नाम और जोड़ दिए गए-

7. संबंध कारक - [दो संज्ञा के बीच का संबंध]
8. संबोधन कारक - [वह संज्ञा, जिसे वक्ता द्वारा संबोधित किया गया हो]

अब इन सभी कारकों तथा उनके कारकीय चिह्नों के बारे में हम विस्तार से चर्चा करेंगे-

1. कर्ता कारक (कारकीय चिहून शून्य (०), ने, से, के द्वारा।)

Creation Autonomous Academy

- वाक्य में संज्ञा/सर्वनाम के जिस रूप से यह पता चले कि वह क्रिया को पूरा करने का कार्य कर रहा है, तो वह संज्ञा कर्ता कारक में होती है।
- ध्यान रखिए कर्ता कारक को व्यक्त करनेवाला केवल ने चिह्न ही नहीं है, बल्कि शून्य, से, के द्वारा आदि भी कर्ता कारक के चिहन हैं। उदाहरणस्वरूप नीचे दिए गए वाक्यों की रंगीन संज्ञाएँ 'कर्ता कारक' में हैं-

1. बच्चा लिख रहा है।
2. माँ पूजा कर रही है।
3. बच्चों ने काम कर लिया।

4. रानी ने काम नहीं किया।
5. माँ से चला नहीं जाता।
6. बीमार से बोला नहीं जाता।
7. प्रधानमंत्री के द्वारा भाषण दिया गया।
8. डॉक्टर द्वारा इलाज किया गया।

2. कर्म कारक (कारकीय चिह्न शून्य (०), को)

वाक्य की जिस संज्ञा पर क्रिया का फल या प्रभाव पड़ता है, वह संज्ञा कर्म कारक में होती है; जैसे-

1. लड़कियाँ गाना गा रही हैं।
2. पिता जी अखबार पढ़ रहे हैं।
3. लोगों ने दीवार को गिरा दिया।
4. पुलिस ने घर को सील कर दिया।

3. करण कारक (कारकीय चिह्न से)

करण का अर्थ है-साधन (instrument)। अर्थात वाक्य की क्रिया को पूरा करने में जो संज्ञा 'साधन' का कार्य करती है; वह करण कारक में होती है; जैसे-

1. बच्चे ने चम्मच से दूध पिया।
2. उसने चाकू से फल काटे।
3. उसने साबुन से कपड़े धोए।
4. मैंने पेंसिल से चित्र बनाया।

4.संप्रदान कारक (कारकीय चिह्न के लिए, को)

वाक्य की क्रिया जिस संज्ञा के लिए घटित होती के लिए, को) है, वह संज्ञा संप्रदान कारक में कही जाती है; जैसे-

Creation Autonomous Academy

1. माँ ने ग़रीबों के लिए खाना बनाया।
2. इस गिलास में आपके लिए दूध है। 'के लिए'
3. सेठ जी ने बच्चों को इनाम दिया।
4. पिता जी ने लोगों को रुपये दिए।

5. अपादान कारक (कारकीय चिह्न से (अलग होने के अर्थ में)

वाक्य की क्रिया के द्वारा जब किसी एक संज्ञा से दूसरी संज्ञा के अलग होने का भाव प्रकट होता है, तो वह संज्ञा अपादान कारक में कही जाती है; जैसे-

1. पेड़ से पत्ते गिर रहे हैं।

2. जमीन से पानी नहीं निकला।
3. मैं नदी से बाहर आया।
4. बच्चा ट्रेन से नीचे गिर गया।

6. अधिकरण कारक (कारकीय चिह्न में, पे, पर, ऊपर, के ऊपर, के नीचे, के पहले, के बाद आदि।)

क्रिया जिस स्थान या समय पर घटित होता है, उस स्थान या समय को बताने वाली संज्ञा अधिकरण कारक में होती है; जैसे बच्चा छत पर बैठा है वाक्य में छत संज्ञा बच्चे के बैठने का आधार बनी है, अतः यहाँ संज्ञा छत अधिकरण कारक में है तथा क्रिया के साथ उसके इस संबंध को बतानेवाला कारकीय चिह्न है-पर।

अन्य उदाहरण-

1. बच्चे छत पर खेल रहे हैं।
2. वह घर पर नहीं है।
3. माँ रसोई में है।
4. हम जून में शिमला जाएँगे।
5. वह मेज़ के ऊपर खड़ा है।
6. बिल्ली पलंग के नीचे है।

7. संबंध कारक (कारकीय चिह्न का, के, की/रा, रे, री)

जहाँ किसी संज्ञा या सर्वनाम का किसी दूसरे संज्ञा या सर्वनाम के साथ संबंध दिखाया जाता है, वहाँ वे संज्ञा/सर्वनाम संबंध कारक में होते हैं; जैसे सुजीत का बेटा बीमार है। इस वाक्य में सुजीत तथा बेटा दोनों संज्ञाओं के बीच के संबंध को का परसर्ग से दिखाया गया है। यहाँ संज्ञा सुजीत दूसरी संज्ञा बेटा के साथ संबंध कारक में है।

अन्य उदाहरण-

Creation Autonomous Academy

1. यह बच्चों का कमरा है।
2. उसने सोने की चेन खरीदी।
3. तुम्हारे घर में कौन-कौन है?
4. मेरी बहन लंदन से आई है।

8. संबोधन कारक (कारकीय चिह्न हे, रे, अरे, ओ आदि।)

जब वक्ता द्वारा किसी संज्ञा का ध्यान आकर्षित किया जाए या उसे संबोधित किया जाए तो वह संज्ञा संबोधन कारक में होती है। संबोधित संज्ञा से पहले प्रायः हे, रे, अरे आदि विस्मयादिसूचक शब्द लगाए जाते है; जैसे-

1. हे राम ! मैं कब ठीक हूँगा।
2. अरे भाई! मेरी मदद करो।
3. ए लड़के ! यहाँ आओ।
4. हे भगवान ! मेरी रक्षा कर।

Creation Autonomous Academy

अध्याय 10 सर्वनाम तथा सर्वनाम के भेद
(Pronoun and its Types)

सर्वनाम

संज्ञा शब्द का बार-बार दोहराया न जाना और उसके स्थान पर उसके, उसका, उसको, वह आदि शब्दों का प्रयोग किया जाना। संज्ञा या नाम शब्दों के स्थान पर जो शब्द प्रयुक्त किए जाते हैं, वे सर्वनाम कहलाते हैं। यह ध्यान रखिए कि वाक्य में सर्वनाम भी वही प्रकार्य करते हैं, जो संज्ञा शब्द करते हैं।

परिभाषा

वाक्य में, संज्ञा शब्दों के स्थान पर प्रयुक्त होनेवाले शब्दों को सर्वनाम कहा जाता है।

सर्वनाम: भेद-प्रभेद

जिस तरह सभी संज्ञा शब्द एक जैसे नहीं होते, उसी तरह से सर्वनाम शब्द भी एक जैसे नहीं होते। सर्वनामों के निम्नलिखित भेद किए जाते हैं-

1. पुरुषवाचक सर्वनाम (मैं/हम, तू/तुम/आप, वह/वे)
2. निश्चयवाचक सर्वनाम (यह, वह)
3. अनिश्चयवाचक सर्वनाम (कोई. कुछ)
4. प्रश्नवाचक सर्वनाम (कौन, क्या)
5. संबंधवाचक सर्वनाम (जो....सो (वह))
6. निजवाचक सर्वनाम (अपने-आप, स्वयं, खुद)

1. पुरुषवाचक सर्वनाम

जब भी दो लोग बातचीत करते हैं तो वक्ता, कभी अपने बारे में कुछ कहता है, कभी श्रोता के बारे में और कभी किसी तीसरे व्यक्ति के बारे में जो वहाँ मौजूद नहीं है। इन तीनों ही स्थितियों में वक्ता द्वारा अपने लिए, श्रोता के लिए और उस तीसरे अनुपस्थित व्यक्ति के लिए जिन सर्वनाम शब्दों का प्रयोग किया जाता है, वे पुरुषवाचक सर्वनाम कहलाते हैं। इन्हीं आधारों पर पुरुषवाचक सर्वनाम तीन प्रकार के हो जाते हैं-उत्तम पुरुष, मध्यम पुरुष तथा अन्य पुरुष।

Creation Autonomous Academy

(i) उत्तम पुरुष

जिन सर्वनामों का प्रयोग वक्ता अपने नाम के स्थान पर करता है, वे सर्वनाम उत्तम पुरुष के सर्वनाम कहलाते हैं। इस वर्ग के अंतर्गत एकवचन में मैं तथा मैं के सभी रूप

(मैंने, मुझे, मेरा आदि) तथा बहुवचन में हम तथा हम के सभी रूप (हमने, हमें, हमारा आदि) आते हैं; जैसे-

1. (क) मैं कक्षा छह का छात्र हूँ।
   (ख) मैंने काम कर लिया है।
   (ग) मुझे कुछ रुपये चाहिए।

2. (क) हम कल फ़िल्म देखने जाएँगे।
   (ख) हमें आपसे कुछ काम है।
   (ग) हमारे ऊपर विश्वास कीजिए।

(ii) मध्यम पुरुष

वक्ता द्वारा श्रोता के नाम के स्थान पर जिन सर्वनामों का प्रयोग किया जाता है, वे मध्यम पुरुष के सर्वनाम कहलाते हैं। इस वर्ग में तू (एकवचन), तुम (बहुवचन) तथा आप (बहुवचन आदरसूचक) सर्वनाम तथा इनके विभिन्न रूप आते हैं; जैसे-

1. तू यह काम कैसे करेगी?
2. तुम अपना काम करो।
3. आप किससे बात कर रहे थे?
4. तुझसे कोई बात नहीं करना चाहता।
5. तुमको तो शादी में आना ही होगा।
6. आपने झूठ क्यों बोला?

हिंदी में तुम तथा आप का प्रयोग एकवचन में होने लगा है, इसलिए बहुवचन में इनके साथ लोग शब्द जोड़ा जाता है।

(iii) अन्य पुरुष

वक्ता या श्रोता के द्वारा किसी अन्य व्यक्ति के नाम के स्थान पर जिन सर्वनामों का प्रयोग किया जाता है, वे अन्य पुरुष के सर्वनाम कहलाते हैं। इस वर्ग में एकवचन के अंतर्गत वह तथा उसके विभिन्न रूप; जैसे-उसने, उससे, उसमें आदि आते हैं तथा बहुवचन के अंतर्गत वे तथा उसके विभिन्न रूप जैसे उनसे, उनका, उन्होंने आदि आते हैं। देखिए नीचे दिए गए

उदाहरण-

एकवचन में प्रयोग

- वह मेरी बात नहीं सुनती।

Creation Autonomous Academy

• वे कल तक किताब लौटा देंगे।

बहुवचन में प्रयोग

• उससे मैं नहीं मिलूँगा।

• उन्होंने झूठ क्यों बोला?

हिंदी में वे सर्वनाम का प्रयोग भी एकवचन में होने लगा है, अतः बहुवचन में इसके साथ भी लोग शब्द लगाया जाता है; जैसे-

एकवचन में प्रयोग

• कल मेरे चाचा जी आए थे, वे वकील हैं।

• भाई साहब से मिलो, वे तुम्हारी बात जरूर सुनेंगे।

बहुवचन में प्रयोग

• वे लोग छुट्टी पर जाना चाहते हैं।

• अध्यापकों से मिलो, वे लोग तुम्हारी बात जरूर सुनेंगे।

2. निश्चयवाचक सर्वनाम

जिन सर्वनामों से किसी निश्चित वस्तु या व्यक्ति का पता चलता है, वे निश्चयवाचक सर्वनाम कहे जाते हैं। इसके अंतर्गत एकवचन में यह वह तथा बहुवचन में ये/वे रूप आते हैं। यह/ये का प्रयोग निकट के व्यक्तियों/वस्तुओं के लिए किया जाता है तथा वह/वे का प्रयोग दूर के व्यक्तियों/वस्तुओं के लिए; जैसे-

'यह'/ 'ये' तथा उनके रूप

1. अध्यापक - (पास में रखी किताब की ओर संकेत करते हुए) सलीम, इसे यहाँ से उठा ले जाओ।

Creation Autonomous Academy

2. लड़का - (अपने पास रखे केलों की ओर संकेत करते हुए) अरे बच्चो, इनको खाकर ख़तम करो।

वह/वे तथा उनके रूप

1. पिता - (दूर पड़ी कमीज़ की ओर संकेत करते हुए) वह किसकी है?

2. पिता - (दूर आदमी की ओर संकेत करते हुए) उनको यहाँ बुलाओ।

- चूँकि इन सर्वनामों से किसी वस्तु या व्यक्ति की ओर संकेत किया जाता है, अतः इन्हें संकेतवाची सर्वनाम भी कहा जाता है।
- ध्यान रखिए जिन वस्तुओं या व्यक्तियों की ओर ये सर्वनाम संकेत करते हैं, वे सामने उपस्थित होने चाहिए।

3. अनिश्चयवाचक सर्वनाम

जब किसी व्यक्ति या वस्तु के बारे में यह निश्चय न हो कि वह व्यक्ति कौन है या वह वस्तु क्या है तब जिन सर्वनामों का प्रयोग किया जाता है, वे अनिश्चयवाचक सर्वनाम कहलाते हैं। हिंदी में कोई (व्यक्ति के लिए) तथा कुछ (वस्तु के लिए) अनिश्चयवाचक सर्वनाम हैं।

देखिए उदाहरण-

1. शायद कमरे के अंदर कोई है।
2. मुझे खाने के लिए कुछ दीजिए।
3. कोई आपसे बात करना चाहता है।
4. मेरी समझ में तो कुछ नहीं आ रहा।

4. प्रश्नवाचक सर्वनाम

कई बार किसी व्यक्ति या वस्तु के बारे में मन में प्रश्न उठते रहते हैं कि वह व्यक्ति कौन है या वह वस्तु क्या है? ऐसी स्थिति में उस व्यक्ति या वस्तु के स्थान पर हम प्रश्नवाचक सर्वनामों का प्रयोग करते हैं। हिंदी में प्रश्नवाचक सर्वनाम हैं-कौन (व्यक्ति के लिए) तथा क्या, कौन-सा, कौन-सी (वस्तु या घटना के लिए)।

देखिए उदाहरण-

1. इस पुराने टूटे-फूटे घर में कौन रहता है?
2. आप क्या खरीदना चाहते हैं?
3. मेरे घर कौन चलना चाहता है?
4. इन घड़ियों में से तुम्हें कौन-सी चाहिए?

Creation Autonomous Academy

5. संबंधवाचक सर्वनाम

जिन सर्वनामों से मिश्रवाक्य के आश्रित उपवाक्यों को प्रधान उपवाक्य के साथ जोड़ने का कार्य किया जाता है. उन्हें संबंधवाचक सर्वनाम कहा जाता है। हिंदी में जो तथा जिस संबंधवाचक सर्वनाम हैं;

देखिए उदाहरण-

1. वह आदमी पकड़ा गया जो चोरी कर रहा था।
2. वह साड़ी फट गई जिसे आप लाए थे।
3. यह वही बच्चा है जिसने इनाम जीता था।
4. यह वही होटल है जिसमें मैं पहले भी रुका था।

- ध्यान रखिए- जिसे, जिसने, जिससे, जिसको, जिसमें आदि 'जिस' सर्वनाम के ही रूप हैं।

6. निजवाचक सर्वनाम

निज शब्द का अर्थ होता है-अपना। निजवाचक सर्वनाम वे सर्वनाम हैं, जिनका प्रयोग वक्ता के द्वारा वाक्य के कर्ता के लिए किया जाता है। हिंदी में स्वयं, खुद, अपने-आप, आप ही आदि निजवाचक सर्वनाम हैं।

देखिए उदाहरण-

1. इस कमरे को वह स्वयं साफ़ करेगी।
2. तुम चाहो तो खुद खाना बना सकती हो।
3. वह अपने-आप नहीं जा सकता, क्या?
4. सब लोग अपना काम अपने-आप करेंगे।

Creation Autonomous Academy

अध्याय 11 विशेषण तथा विशेषण के भेद
(Adjective and its Types)

विशेषण

हर भाषा में कुछ ऐसे शब्द होते हैं, जो संज्ञा या सर्वनाम शब्दों की विशेषता बताने का कार्य करते हैं। व्याकरण में ऐसे शब्दों को विशेषण कहा जाता है। विशेषण शब्द जिन शब्दों की विशेषता बताते हैं, वे विशेष्य कहलाते हैं। इस बात को समझने के लिए निम्नलिखित वाक्यों के रंगीन छपे शब्दों पर ध्यान दीजिए।

1. अच्छे बच्चों को ही दोस्त बनाओ।
    • कैसे बच्चों को?
    उत्तर-अच्छे
2. मेरी कक्षा में तीस विद्यार्थी हैं।
    • कितने विद्यार्थी हैं?
    उत्तर - तीस
3. मुझे पाँच किलो आलू चाहिए।
    • कितने आलू ?
    उत्तर-पाँच किलो
4. मेरी बहन को फूल बहुत पसंद है।
    • किसकी बहन को?
    उत्तर-मेरी

संज्ञा या सर्वनाम शब्दों की विशेषता कई प्रकार से बताई जा सकती है; जैसे-
वाक्य-1 का अच्छे शब्द अपनी संज्ञा बच्चों की गुण संबंधी विशेषता बता रहा है।
वाक्य-2 का तीस शब्द विद्यार्थियों की संख्या संबंधी विशेषता बता रहा है।
वाक्य-3 में, पाँच किलो शब्द आलू संज्ञा की मात्रा या परिमाण संबंधी विशेषता बता रहा है।

Creation Autonomous Academy

वाक्य 4 में मेरी सर्वनाम शब्द बहन संज्ञा शब्द के साथ उसका क्या संबंध है, इस विशेषता

के बारे में बता रहा है। कहने का तात्पर्य यही है कि सभी रंगीन पद अपनी-अपनी संज्ञाओं के गुण, संख्या, परिमाण, संबंध आदि से संबंधित विशेषताएँ बता रहे हैं। ऐसे शब्द जो संज्ञाओं की विशेषता बताते हैं, उन्हें विशेषण कहा जाता है तथा विशेषण जिन संज्ञाओं की विशेषता बताते हैं, उन्हें विशेष्य कहते हैं।

विशेषण की परिभाषा

जो शब्द संज्ञा, सर्वनाम शब्दों के गुण, संख्या परिमाण/मात्रा आदि से संबंधित विशेषताओं के बारे में बताते हैं, विशेषण कहलाते हैं।

विशेषण: भेद-प्रभेद

विशेषणों द्वारा अलग-अलग तरीकों से बताई जानेवाली विशेषताओं के आधार पर उनके निम्नलिखित भेद किए जाते हैं-

- गुणवाचक
- संख्यावाचक
- परिमाणवाचक
- सार्वनामिक

1. गुणवाचक विशेषण

जिन विशेषण शब्दों से संज्ञा या सर्वनाम शब्दों के गुण दोष, रूप रंग, आकार-प्रकार, स्वभाव, दशा, अवस्था आदि गुणों का पता चलता है, वे गुणवाचक विशेषण कहलाते हैं।

जैसे-

1. अच्छा बच्चा	4. लंबी लड़की	7. पुराना घर
2. ग़रीब लोग	5. बेईमान आदमी	8. ग्रामीण जनता
3. मीठा आम	6. सफ़ेद चादर	9. बूढ़ा व्यक्ति

2. संख्यावाचक विशेषण

जिन विशेषण शब्दों से संज्ञा या सर्वनाम की संख्या का पता चलता है, संख्यावाचक विशेषण कहलाते हैं।

Creation Autonomous Academy

जैसे-

1. चार लोग	5. दूसरी मंजिल	9. कुछ लोग
2. दुहरी मुसीबत	6. सब लड़के	10. हर साल
3. बहुत रुपये	7. कई साल	
4. एक दर्जन केले	8. पहली तारीख	

संख्यावाचक विशेषण जिन संज्ञाओं की विशेषता बताते हैं, उनकी गिनती की जा सकती है, क्योंकि वे जातिवाचक संज्ञा शब्द होते हैं।

कुछ विशेषण शब्दों के द्वारा अपने विशेष्य की निश्चित संख्या बताई जाती है, तो कुछ के द्वारा अनिश्चित संख्या। इसी आधार पर इनके दो उपभेद हो जाते हैं-निश्चित संख्यावाचक विशेषण तथा अनिश्चित संख्यावाचक विशेषण।

देखिए उदाहरण-

निश्चित संख्यावाचक विशेषण

1. मेरे पास तीस रुपये हैं।
2. मैंने दो दर्जन केले खरीदे।
3. मुझे चौथी कक्षा में जाना है।
4. हर आदमी को नौकरी मिलेगी।

अनिश्चित संख्यावाचक विशेषण

1. मेरे पास कुछ रुपये हैं।
2. मैंने बहुत केले खरीदे।
3. मुझे कई कक्षाओं में जाना है।
4. कुछ लोगों को ही नौकरी मिलेगी।

3. परिमाणवाचक विशेषण

परिमाण शब्द का अर्थ मात्रा (quantity) होता है। जिन विशेषण शब्दों से संज्ञा शब्दों की मात्रा या परिमाण के बारे में पता चलता है, वे परिमाणवाचक विशेषण कहलाते हैं।

जैसे-

1. दस किलो आटा
2. कम चीनी
3. इतना काम
4. तीन लीटर दूध
5. थोड़ा आटा
6.देसार सामान
7. बहुत सामान
8. डेढ़ मीटर कपड़ा
9. एक गिलास पानी।

Creation Autonomous Academy

परिमाणवाचक विशेषण जिन संज्ञाओं की विशेषता बताते हैं, उनको गिना नहीं जा सकता, क्योंकि वे द्रव्य (पदार्थ) होते हैं।

अपने विशेष्य के निश्चित तथा अनिश्चित परिमाण के बारे में बताने के आधार पर परिमाणवाचक विशेषण के भी दो भेद होते हैं- निश्चित परिमाणवाचक विशेषण तथा अनिश्चित परिमाणवाचक विशेषण।

देखिए उदाहरण-

निश्चित परिमाणवाचक विशेषण

1. मुझे तीन किलो चीनी चाहिए।
2. आधा किलो टमाटर ले आना।
3. दावत के लिए दस क्विंटल गेहूँ चाहिए।
4. मुझे डेढ़ मीटर कपड़ा खरीदना है।
5. तीन लीटर दूध कितने का है?

अनिश्चित परिमाणवाचक विशेषण

1. मुझे थोड़ी चीनी चाहिए।
2. कल मैंने बहुत काम किया।
3. दावत के लिए काफ़ी गेहूँ चाहिए।
4. मुझे इतना कपड़ा नहीं चाहिए।
5. ये सारा दूध कितने का है?

4. सार्वनामिक विशेषण

भाषा में कभी-कभी सर्वनाम शब्द वाक्य में प्रयुक्त होकर संज्ञा शब्दों की विशेषता बताने का कार्य करने लगते हैं, तब वे सर्वनाम नहीं कहे जाते, बल्कि प्रकार्य के आधार पर विशेषण बन जाते हैं; जैसे-

1. मेरी बहन कल शिमला जा रही है।
2. वह किसी की बात नहीं मानता।
3. आपका घर किस तरफ़ है?
4. चलो कोई खेल खेलते हैं।

Creation Autonomous Academy

इन वाक्यों के रंगीन छपे शब्द मेरी, आपका, किसी की तथा कोई मूलतः तो सर्वनाम थे, पर यहाँ अपनी-अपनी संज्ञाओं की विशेषता बताने का कार्य करने के कारण विशेषण बन गए हैं, अतः जब सर्वनाम शब्द किसी संज्ञा की विशेषता बताने लगते हैं, तब उन्हें सार्वनामिक विशेषण कहा जाता है।

देखिए अन्य उदाहरण-

1. इस किताब को मत खरीदना।
2. किस आदमी से मिलने जाना है?

3. आपके भाई साहब कब आएँगे?
4. उस घर में कौन रहता है?
5. वह लड़का अचानक कहाँ चला गया?
6. जिसका सामान हो वह आकर ले जाए।

सर्वनाम तथा सार्वनामिक विशेषण में अंतर

सर्वनाम तथा सार्वनामिक विशेषण में अंतर करके चलना चाहिए। आप जानते ही हैं कि सर्वनाम वे शब्द हैं जो संज्ञा शब्दों के स्थान पर प्रयुक्त होते हैं क्योंकि वे वही प्रकार्य करते हैं जो प्रकार्य संज्ञा शब्दों द्वारा किया जाता है, पर विशेषण, संज्ञा शब्दों की विशेषता बताने का कार्य करते हैं। वाक्य में प्रयुक्त होकर जब सर्वनाम संज्ञा शब्दों की विशेषता बताने का कार्य करने लगते हैं, तो उन्हें सार्वनामिक विशेषण कहा जाता है; जैसे-

• सर्वनाम की पहचान है कि उसके स्थान पर कोई संज्ञा शब्द तो आ सकता है विशेषण नहीं, जबकि सार्वनामिक विशेषण के स्थान पर कोई विशेषण शब्द ही आ सकता है, सर्वनाम नहीं।

जैसे -

सर्वनाम के रूप में प्रयोग	सार्वनामिक विशेषण के रूप में प्रयोग
1. वह घर गया।	1. वह लड़का घर गया।
2. उससे काम नहीं होता।	2. उस लड़के से काम नहीं होता।
3.. मेरा क्या है, मैं कहीं भी सो सकता हूँ।	3. यह मेरा काम नहीं है।
4. बाहर कोई मिलने आया है।	4. बाहर कोई आदमी मिलने आया है।
5. मुझे खाने के लिए कुछ दीजिए।	5. मुझे खाने के लिए कुछ फल दीजिए।
6. कल आपने क्या खरीदा ?	6. कल आपने क्या सामान खरीदा ?
7. हमारे पास कुछ भी नहीं है।	7. हमारे बच्चों के पास बहुत पैसा है।
8. इसे यहाँ से हटाओ।	8. इस सामान को यहाँ से

संख्यावाचक तथा परिमाणवाचक विशेषण में अंतर

Creation Autonomous Academy

संख्यावाचक विशेषण हमेशा अपनी संज्ञाओं की किसी निश्चित या अनिश्चित संख्या को बताते हैं। संख्यावाचक विशेषण जिन संज्ञाओं की विशेषता बताते हैं, वे जातिवाचक संज्ञा शब्द होते हैं, अतः उनकी गिनती की जा सकती है; जैसे-दो कमरे, सौ मकान, कई आदमी, दूसरा मकान, चौथी मंज़िल आदि।

जहाँ तक परिमाणवाचक विशेषणों की बात है, ये हमेशा अपने विशेष्य या संज्ञाओं की निश्चित या अनिश्चित मात्रा बताते हैं। इनकी संज्ञाओं को गिना नहीं जा सकता, क्योंकि ये द्रव्यवाचक संज्ञा शब्द होते हैं; जैसे-दो मीटर कपड़ा, दो किलो दाल, पाँच लीटर दूध, बहुत सामान, थोड़ी मेहनत आदि।

प्रविशेषण

नीचे के वाक्यों के रंगीन छपे शब्दों पर ध्यान दीजिए-

1. मीना बहुत समझदार बच्ची है।
2. अफ़ज़ल बहुत परिश्रमी व्यक्ति है।
3. वहाँ लगभग सौ लोग आए थे।
4. आज थोड़ा कम काम करो।

इन वाक्यों में प्रयुक्त समझदार, सौ, परिश्रमी तथा कम शब्द अपनी-अपनी संज्ञाओं की विशेषता बताने के कारण विशेषण हैं। लेकिन इन चारों ही वाक्यों में इन विशेषणों के पहले आने वाले बहुत, लगभग, बहुत तथा थोड़ा शब्द भी विशेषण हैं, पर ये विशेषण अपने-अपने विशेषणों की विशेषता बता रहे हैं। विशेषणों की विशेषता बतानेवाले विशेषणों को व्याकरण में प्रविशेषण कहा जाता है।

देखिए निम्नलिखित वाक्यों के रंगीन शब्द जो प्रतिशेषण हैं-

1. वह बहुत बेईमान इंसान है।
2. थोड़ा-सा कच्चा दूध मिलेगा?
3. मुझे पके मीठे आम ही चाहिए।
4. करीब दो सौ छात्र परीक्षा देंगे।

• अतः ध्यान रखिए कि विशेषण केवल संज्ञा या सर्वनाम की ही विशेषता नहीं बताते बल्कि विशेषणों की भी विशेषता बताते हैं।

विशेषण-रचना

हिंदी में कुछ शब्द तो मूलतः विशेषण ही हैं; जैसे-अच्छा, बुरा, काला, पीला, मोटा, पतला आदि, किंतु ज्यादातर विशेषण अन्य वर्ग के शब्दों; जैसे-संज्ञा, सर्वनाम, क्रिया तथा अव्यय शब्दों में प्रत्यय जोड़कर बनाए जाते हैं। नीचे की तालिका में इस तरह से बनाए गए विशेषणों के उदाहरण दिए जा रहे हैं।

Creation Autonomous Academy

संज्ञा से विशेषण

संज्ञा	विशेषण
अंतर	आंतरिक
आदर	आदरणीय
इतिहास	ऐतिहासिक
ईमानदारी	ईमानदार
ऋण	ऋणी
किताब	किताबी
खेल	खिलाड़ी

घाव	घायल
चिकित्सा	चिकित्सक

सर्वनाम से विशेषण

सर्वनाम	विशेषण
यह	ऐसा
कौन	कैसा
मैं	मुझ-सा
जो	जैसा
तुम	तुम-सा
वह	वैसा

क्रिया से विशेषण

क्रिया	विशेषण
खेलना	खिलाड़ी
गाना	गायक
भागना	भगोड़ा
पढ़ना	पढ़ाकू
बेचना	बिकाऊ
तैरना	तैराक

अव्यय से विशेषण

अव्यय	विशेषण
आगे	अगला
ऊपर	ऊपरी
बाहर	बाहरी
पीछे	पिछला
नीचे	निचला
सतह	सतही

अध्याय 12
क्रिया तथा क्रिया की व्याकरणिक कोटि - काल
(Verb and Grammatical Category of Verb-Tense)

क्रिया

जो शब्द विभिन्न कार्य-कलापों की जानकारी देते हैं, व्याकरण में उन्हें क्रिया कहते हैं।

निम्नलिखित वाक्यों पर ध्यान दीजिए-

1. शेर पिंजड़े में है।
2. सोफ़िया अध्यापिका है।
3. सब लोग ईमानदार हैं।

इन वाक्यों में आनेवाले है/हैं शब्द होना क्रिया के रूप हैं। इन शब्दों से किसी वस्तु या व्यक्ति की स्थिति या अवस्था का पता चलता है। व्याकरण में ऐसे शब्दों को भी क्रिया कहते हैं।

क्रिया की परिभाषा

क्रिया वे शब्द हैं, जिनसे किसी घटना या कार्य के होने या किए जाने की सूचना मिलती है अथवा किसी वस्तु या व्यक्ति की स्थिति या अवस्था का पता चलता है।

क्रिया की रचना

निम्नलिखित वाक्यों में लिखना क्रिया के विभिन्न रूपों पर ध्यान दीजिए-

1. वह पत्र लिख रही है।
2. वे हमेशा कुछ न कुछ लिखते रहते हैं।
3. मैं कविता नहीं लिख सकती।
4. तुम्हें रोज लिखना चाहिए।
5. मैं एक कहानी लिखूँगा।
6. अध्यापिका बच्चों से निबंध लिखवा रही हैं।

इन वाक्यों में आनेवाले क्रिया के रूप हैं-लिख रही है, लिखते रहते हैं, लिख सकती, लिखना चाहिए, लिखूँगा तथा लिखवा रही हैं। आप देख सकते हैं कि इन सभी रूपों में लिख अंश समान रूप से आ रहा है। इसी अंश से क्रिया के वास्तविक अर्थ 'लिखना' का पता चल रहा है। व्याकरण में इस अंश को धातु कहते हैं।

Creation Autonomous Academy

धातु की परिभाषा

क्रिया के विभिन्न रूपों में समान रूप से आने वाले तथा क्रिया के अर्थ को बतानेवाले अंश को धातु कहते हैं।

पढ़, लिख, चल, आ, जा, कर, सो, ले, दे आदि सभी धातुएँ हैं।

- लिखना क्रिया के इन सभी रूपों में से यदि धातु को अलग कर दिया जाए तो रही है, ते रहते हैं. संकती, ना चाहिए, ऊँगा, वा रही हैं रूप बच जाते हैं। इन अंशों को सहायक क्रिया कहते हैं। अतः सहायक क्रिया, क्रिया का वह अंश है जो धातु में लगकर क्रिया पदबंध की रचना करता है।

क्रिया के भेद

कर्म की अपेक्षा या अनपेक्षा के आधार पर क्रिया के भेद

1. सकर्मक क्रिया

जो क्रिया कर्म की अपेक्षा करती है, सकर्मक क्रिया कहलाती है। कर्म की अपेक्षा का पता हमें क्रिया पर क्या तथा किसे किसको शब्दों से प्रश्न करने से लगता है; जैसे-

(i) नौकर खाना बना रहा है।
• क्या बना रहा है?
(उत्तर-खाना)

(ii) उन्होंने बच्चों को खिलौने दिए।
• खिलौने किसे दिए ?
(उत्तर-बच्चों को)

क्रिया पर क्या शब्द से प्रश्न करने के बाद उत्तर में जो संज्ञा शब्द मिलते हैं, वे मुख्य कर्म कहलाते हैं तथा किसे/किसको प्रश्न के उत्तर में जो संज्ञा शब्द मिलते हैं, उनको गौण कर्म कहा जाता है। मुख्य कर्म कोई वस्तु होती है तथा गौण कर्म कोई प्राणी; जैसे-

Creation Autonomous Academy

1. मीता ने चित्र बनाया [क्या बनाया? उत्तर 'चित्र' (मुख्य कर्म]
2. अध्यापक ने करीम को बुलाया। [किसको बुलाया? उत्तर 'करीम को' (गौण कर्म]

इस तरह जो क्रिया कर्म (मुख्य या गौण) की अपेक्षा करती है, उसे सकर्मक क्रिया कहते हैं।

सकर्मक क्रिया के भेद

कुछ सकर्मक क्रियाएँ केवल एक कर्म की अपेक्षा करती हैं तथा कुछ दो कर्मों की। इस आधार पर उनके दो भेद हो जाते हैं- एककर्मक तथा द्विकर्मक।

(i). एककर्मक क्रिया-जो सकर्मक क्रिया केवल एक ही कर्म (मुख्य या गौण) की ही अपेक्षा करती है, एककर्मक कहलाती है; जैसे-

1. वह खाना नहीं खाएगी।
2. पिता जी ने चाचा को बुलाया।
3. वे अपना काम करेंगे।? (खाना / काम, मुख्य कर्म)
4. उसने नौकर को डाँटा (चाचा/नौकर, गौण कर्म)

(ii). द्विकर्मक क्रिया-जो सकर्मक क्रिया दो कर्मों (मुख्य कर्म और गौण कर्म) की अपेक्षा करती है, द्विकर्मक क्रिया कहलाती है; जैसे-

	मुख्य कर्म	गौण कर्म	द्विकर्मक क्रिया
1. मंत्री जी ने सैनिकों को इनाम बाँटे।	इनाम	सैनिक	बाँटना
2. मैंने बच्चों के लिए मिठाई खरीदी।	मिठाई	बच्चे	खरीदना
3. वह पिता जी से सामान लाया।	सामान	पिता जी	लाना

2. अकर्मक क्रिया

जो क्रिया कर्म को अपेक्षा नहीं करती है. अकर्मक क्रिया कहलाती है; जैसे आना, जाना, सोना उठना, बैठना, चलना, दौड़ना, हँसाना, रोना, भागना आदि। देखिए निम्नलिखित

उदाहरण-

1. लड़की रो रही है।
2. आप यहीं ठहरिए।
3. मैं घर जा रहा हूँ।
4. मेरे साथ चलो।

इन अकर्मक क्रिया युक्त वाक्यों की क्रियाओं पर यदि क्या या किसे शब्दों से प्रश्न किए जाते हैं तो उनके कोई उत्तर नहीं मिलते हैं।

Creation Autonomous Academy

क्रिया की व्याकरणिक कोटि

काल (Tense)

यह तो आप जानते ही हैं कि यदि कोई क्रिया घटित होती है तो वह कुछ न कुछ समय अवश्य लेती है। प्रायः लोग 'काल' (Tens) तथा 'समय' (Time) को एक मान लेते हैं, पर ये दोनों एक नहीं होते। 'समय का व्याकरणिक रूप ही 'काल' है। चूँकि 'समय' को 'वर्तमान', 'भूत' तथा 'भविष्य' तीन भागों में बाँटा गया है, उसी आधार पर 'काल' को भी तीन भागों में बाँट लिया गया है-

- वर्तमान काल
- भूत काल
- भविष्यत काल

1. वर्तमान काल

जिस समय कोई क्रिया घटित होती है, वह समय व्याकरण में वर्तमान काल कहा जाता है। हिंदी मेंवर्तमान काल की सूचना देने वाले चिह्न हैं है हैं हो तथा हूँ।

अतः- भाषा में जिन चिह्नों से यह पता चलता है कि क्रिया वर्तमान समय में घटित हो रही है या होती है. वे चिह्न वर्तमान काल के चिह्न कहे जाते हैं तथा वह वाक्य वर्तमान काल का होता है।

- ध्यान रखिए जिन वाक्यों के क्रिया पदबंध में है/हैं/ हूँ। हो चिह्न लगे होंगे तो वे वाक्य वर्तमान काल के होंगे।

देखिए निम्नलिखित उदाहरण-

1. वे लोग रोज्ज आठ बजे नाश्ता' करते हैं।
2. तुम लोग इस समय नाश्ता क्यों कर रहे हो?
3. हम लोग नाश्ता कर चुके है।
4. उन लोगों ने नाश्ता कर लिया है।
5. वे लोग मेरे स्कूल में अध्यापक है।

2. भूत काल

भाषा में, जिन चिह्नों से यह पता लगता है कि कोई क्रिया बीते हुए समय में घटित हुई है, वे चिह्न भूत काल के सूचक चिह्न कहलाते हैं तथा वह क्रिया भूत काल में कही जाती है। हिंदी में भूत काल की सूचना देने वाले चिह्न हैं-था थे थी थीं या आ. ए. ई. ई।

अतः- भाषा में जिन चिह्नों से यह पता चलता है किक्रिया बीते हुए समय में या भूत समय में घटित हुई थी. वे चिह्न भूत काल के चिहन कहलाते हैं तथा वह वाक्य भूत काल का वाक्य होता है।

Creation Autonomous Academy

- ध्यान रखिए जिन वाक्यों के क्रिया पदबंध में 'आ/ई/ए' या 'था/थी/थे' आदि चिह्न लगे होंगे, वे वाक्य भूत काल के होंगे।

देखिए निम्नलिखित उदाहरण-

1. उन लोगों ने नाश्ता कर लिया।
2. वह बाज़ार गई।
3. वे ट्रेन से वापस आए।
4. उन लोगों ने नाश्ता कर लिया था।
5. वह बाज़ार गई थी।
6. वे ट्रेन से वापस आए थे।

7. वे लोग नाश्ता कर रहे थे।
8. वह बाज़ार जा रही थी।
9. वे ट्रेन से वापस आ रहे थे।
10. वे लोग मेरे स्कूल के अध्यापक थे।

3. भविष्यत काल

भविष्य में घटित होनेवाले कार्य-व्यापार की सूचना देने वाले काल को भविष्यत काल कहा जाता है। भविष्यत काल की सूचना देने वाले चिह्न हैं-गा, गे, गी, गीं।

अतः- भाषा में जिन चिह्नों से यह पता चलता है कि क्रिया भविष्य में घटित होगी, वे चिह्न भविष्यत काल के चिह्न कहलाते हैं तथा वह वाक्य भविष्यत काल का होता है।

- ध्यान रखिए, जिन वाक्यों के क्रिया पदबंध में गा, गे, गी आदि प्रत्यय लगें होंगे, वे वाक्य भविष्यत काल के होंगे।

देखिए निम्नलिखित उदाहरण-

1. मैं आज स्कूल नहीं जाऊँगा।
2. तुम कब चलोगे ?
3. हम फ़िल्म देखने जाएँगे।
4. तू अब क्या करेगी?
5. आप कहाँ ठहरेंगे?
6. वह तुम्हें रुपये नहीं देगा।
7. आज वे भी मैच खेलेंगे।
8. वे सुबह तक पहुँचेंगे।
9. क्या आप मेरे साथ चलेंगे?

Creation Autonomous Academy

अध्याय 13 अव्यय या अविकारी शब्द
(Indeclinable Words)

अविकारी शब्द

अव्यय शब्द अ + व्यय से मिलकर बना है, जिसका अर्थ है-जिसका कुछ भी व्यय न होता हो अर्थात् वह जैसा है वैसा ही बना रहता हो। वास्तव में अव्यय शब्द जब वाक्य में प्रयुक्त होते हैं, तो इनका रूप नहीं बदलता या इनके रूप में किसी भी तरह का विकार नहीं आता और ये जैसे हैं, वैसे ही बने रहते हैं, जैसे-बाहर, भीतर, आज, कल, यहाँ, वहाँ आदि शब्दों को जब भी वाक्यों में प्रयुक्त किया जाएगा, इनके रूप में कोई परिवर्तन नहीं होगा; जैसे-

1. बच्चा बाहर बैठा है।
    • लड़की ने बाहर से आवाज दी।
    • आप घर के बाहर पहुँचिए।

2. आज बारिश आएगी।
    • कल से आज तक कोई नहीं आया।
    • आपने आज क्या खाया?

चूँकि इनके रूप में कोई परिवर्तन नहीं होता, इसलिए इनको अविकारी शब्द भी कहते हैं।

अव्यय की परिभाषा

अव्यय वे शब्द हैं, जिनके रूप में (वाक्य में प्रयोग होने पर) लिंग, वचन, पुरुष, काल आदि के प्रभाव से कोई परिवर्तन नहीं होता।

अव्यय के पाँच भेद हैं-

1. क्रियाविशेषण
2. संबंधबोधक
3. समुच्चयबोधक
4. विस्मयादिबोधक
5. निपात

Creation Autonomous Academy

1. क्रियाविशेषण (Adverb)

जिस तरह विशेषण शब्द संज्ञा तथा सर्वनाम शब्दों की विशेषता बताते हैं, उसी तरह क्रिया की विशेषता बताने वाले शब्द क्रियाविशेषण कहे जाते हैं।

1. इतनी जोर से मत चिल्लाओ।
2. मेरे घर आज कोई आने वाला है।
3. वह उधर क्यों खड़ी है?
4. कम बोलोगे तो सुखी रहोगे।

प्रस्तुत वाक्यों में आए जोर से, आज, उधर, कम शब्द अपनी-अपनी क्रियाओं की विशेषता बता रहे हैं। क्रिया की विशेषता बताने के कारण ये शब्द क्रियाविशेषण कहलाते हैं। क्रियाविशेषणों के द्वारा क्रिया की विशेषता कई प्रकार से बताई जाती है; जैसे-

(क) क्रिया के घटित होने का स्थान बताकर कि क्रिया कहाँ घटित हुई।
(ख) क्रिया के घटित होने का समय बताकर कि क्रिया कब घटित हुई।
(ग) क्रिया के घटित होने का तरीका या रीति बताकर कि क्रिया कैसे घटित हुई।
(घ) क्रिया के घटित होने का परिमाण या मात्रा बताकर कि क्रिया कितनी मात्रा में घटित हुई। इन्हीं आधारों पर क्रियाविशेषणों के निम्नलिखित भेद सामने आते हैं-

- स्थानवाची क्रियाविशेषण
- रीतिवाची क्रियाविशेषणं
- परिमाणवाची क्रियाविशेषण
- कालवाची क्रियाविशेषण

(i) स्थानवाची क्रियाविशेषण

जिन क्रियाविशेषण शब्दों से यह पता चलता है कि क्रिया कहाँ या किस स्थान पर घटित हुई, वे क्रियाविशेषण शब्द स्थानवाची क्रियाविशेषण कहलाते है; जैसे-यहाँ, वहाँ, ऊपर, नीचे, इधर, उधर, बारह, भीतर, दूर, पास, निकट आदि।

पहचान-स्थानवाची क्रियाविशेषणों की पहचान करने के लिए क्रिया पर कहाँ शब्द से प्रश्न करना चाहिए। कहाँ प्रश्न के उत्तर में जो शब्द मिलते हैं, वे स्थानवाची क्रियाविशेषण होते हैं; जैसे-

1. वहाँ कभी मत जाना। (कहाँ मत जाना? उत्तर- 'वहाँ')
2. उस लड़के से दूर रहना। (कहाँ रहना? उत्तर- 'दूर')
3. तुम कमरे के भीतर क्या कर रहे हो? (कहाँ क्या कर रहे हो? उत्तर- 'भीतर')
4. मैं नीचे जा रहा हूँ। (कहाँ जा रहा हूँ? उत्तर-'नीचे)

Creation Autonomous Academy

(ii) कालवाची क्रियाविशेषण

जिन क्रियाविशेषण शब्दों से क्रिया के घटित होने के समय के बारे में सूचना मिलती है, वे कालवाची क्रियाविशेषण कहलाते हैं, जैसे-सुबह, शाम, अकसर, दिनभर, हमेशा, आज, कल, रोज्ज, प्रतिदिन, अभी, नित्य, आदि।

पहचान-कालवाची क्रियाविशेषणों की पहचान करने के लिए क्रिया पर कब शब्द से प्रश्न करना चाहिए।

कब प्रश्न के उत्तर में जो क्रियाविशेषण शब्द प्राप्त होते हैं, वे कालवाची क्रियाविशेषण कहलाते हैं; जैसे-

1. वह यहाँ कभी-कभी आता है। (कब आता है? उत्तर- 'कभी-कभी')
2. वे लोग आज कहीं जा रहे हैं। (कब जा रहे हैं? उत्तर- 'आज')
3. वह तीन साल बाद लौटेगा। (कब लौटेगा? उत्तर-'तीन साल बाद')
4. मैं प्रतिदिन व्यायाम करता हूँ। (व्यायाम कब करता हूँ? उत्तर- 'प्रतिदिन')

(iii) रीतिवाची क्रियाविशेषण

जिन क्रियाविशेषण शब्दों से यह पता चलता है कि क्रिया किस तरह से या किस, रीति से हुई है, वे रीतिवाची क्रियाविशेषण कहलाते हैं; जैसे-धीरे, जल्दी, तेजी से, अचानक, धीमे, ठीक से, अपने-आप आदि।

पहचान-रीतिवाची क्रियाविशेषण शब्दों की पहचान करने के लिए क्रिया पर कैसे शब्द से प्रश्न करना चाहिए। कैसे शब्द के उत्तर में जो शब्द प्राप्त होते हैं, वे रीतिवाची क्रियाविशेषण होते हैं; जैसे-

1. बारिश अचानक ही आ गई। (बारिश कैसे आ गई? उत्तर- 'अचानक')
2. पुस्तकालय में धीरे बोलो। (कैसे बोलो? उत्तर 'धीरे')
3. यहाँ रहना है तो ठीक से रहो। (कैसे रहो? उत्तर 'ठीक से')
4. मैं खाना स्वयं बनाता हूँ। (कैसे बनाता हूँ? उत्तर- 'स्वयं')

(iv) परिमाणवाची क्रियाविशेषण

जिन क्रियाविशेषण शब्दों से यह पता चलता है कि क्रिया किस मात्रा में घटित हुई है, वे परिमाणवाची क्रियाविशेषण कहे जाते हैं; जैसे-कम, ज़्यादा, अधिक, खूब, जितना, उतना, थोड़ी, बहुत आदि। पहचान-परिमाणवाची क्रियाविशेषण शब्दों की पहचान के लिए क्रिया पर कितना शब्द से प्रश्न करना चाहिए। कितना प्रश्न के उत्तर में जो शब्द मिलते हैं, वे परिमाणवाची क्रियाविशेषण होते हैं; जैसे-

1. वह बहुत सोता है। (कितना सोता है? उत्तर- 'बहुत')
2. माता जी थोड़ी ही चल सकीं। (कितना चल सकीं? उत्तर-'थोड़ा ही')
3. जितना नाराज़ होंगे, उतना ही मन दुखी होगा। (कितना नाराज़ होंगे? उत्तर- 'जितना')

2. संबंधबोधक (Preposition)

वे अविकारी शब्द जो वाक्य में संज्ञा या सर्वनाम के साथ प्रयुक्त होकर वाक्य के अन्य संज्ञा/सर्वनामों से संबंध बताते हैं, संबंधबोधक शब्द कहलाते हैं; जैसे-के सामने, के साथ, के चारों ओर, के पास, के सिवाय, की तरफ़, के बिना, से पहले, के बदले, की जगह आदि।

देखिए उदाहरण-

1. मंदिर के सामने भीड़ क्यों लगी है?
2. बच्चों के साथ तुम भी जाओ।
3. मेरे घर के चारों ओर पुलिस का पहरा है।
4. पिता जी के पास रुपये नहीं हैं।
5. यहाँ आप के सिवाय कोई नहीं आता।
6. इन ग़रीब बच्चों की तरफ नज़र तो उठाइए।
7. नौकरी के बिना गुज़ारा कैसे होगा?
8. आप से पहले वह आ गया था।
9. मुझे गेहूँ के बदले चावल दे दीजिए।

इनके अलावा कुछ और भी संबंधबोधक हैं, जिनका प्रयोग भाषा में किया जाता है; जैसे-के साथ, के संग, के बारे में, के विषय में, से लेकर, से तक, के विपरीत, के अनुसार, के अनुकूल आदि।

3. समुच्चयबोधक (Conjunction)

जो अव्यय दो शब्दों, दो पदबंधों, दो वाक्यांशों या दो वाक्यों को जोड़ने का कार्य करते हैं, उन्हें समुच्यबोधक या योजक कहते हैं; जैसे-और, तथा, लेकिन, परंतु, इसलिए, क्योंकि, अथवा, ताकि, या आदि

देखिए निम्नलिखित उदाहरण-

1. हिंदी सिनेमा में सलमान खान तथा शाहरुख खान दोनों का नाम है।
2. कल हमने सीता और गीता फ़िल्म देखी।

Creation Autonomous Academy

समुच्चयबोधक अव्यंय जोड़ने के अलावा निम्नलिखित कार्य भी करते हैं-

(i) विरोध बताने का कार्य-विरोध बतानेवाले अव्यय हैं-लेकिन, परंतु, मगर, अपितु, बल्कि, किंतु आदि; जैसे-

1. मैं आपके साथ चलूँगा, पर/परंतु/लेकिन आपको मेरी बात माननी होगी।
2. कहा था समय से आ जाना, मगर वह सुनता ही कहाँ है।

(ii) कारण तथा परिणाम बताने का कार्य-कारण तथा परिणाम बताने के लिए इसलिए, इस वजह से, अतः, ताकि, क्योंकि आदि अव्ययों का प्रयोग किया जाता है; जैसे-

1. मुझे भूख लगी थी, अतः इसलिए खाना खा लिया।
2. किसान हल चला रहे हैं, ताकि अच्छी फ़सल हो।

(iii) विकल्प बताने का कार्य-दो वस्तुओं में विकल्प दिखाने के लिए प्रायः या, या-या, अथवा, नहीं तो आदि अव्ययों का प्रयोग किया जाता है; जैसे-

1. चाय पियोगे या कॉफ़ी।
2. या तो पैसे वापस कर दो या इस महीने काम करो।
3. नेता गिरी मत करो नहीं तो कैरियर ख़राब हो जाएगा।

4. विस्मयादिबोधक (interjection)

ये वे अव्यय हैं, जो विस्मय या आश्चर्य, हर्ष, घृणा, दुख, तकलीफ़, पीड़ा आदि मन के भावों को व्यक्त करते हैं। इन भावों को व्यक्त करने के लिए अरे, ओह, उफ़, छिः, हाय आदि अव्ययों का प्रयोग किया जाता है; जैसे-

(i) विस्मय या आश्चर्य-ओह, अहो, अरे, क्या आदि; जैसे-

1. अरे! तुम कब आए?
2. क्या! वह नहीं आया?

(ii) हर्ष या उल्लाससूचक-वाह, बढ़िया, अच्छे, बहुत अच्छे, खूब आदि; जैसे-

1. वाह! क्या खाना बनाया है।
2. बढ़िया ! ऐसे ही काम करते रहो।

(iii) शोक, पीड़ा, ग्लानि आदि सूचक-उफ़, हाय, हाय राम आदि।

1. उफ़! बहुत गरमी है।
2. हाय! मैं मर गया।

Creation Autonomous Academy

(iv) घृणा, तिरस्कारसूचक-छिः-छिः, धिक, हट आदि; जैसे-

1. छिः-छिः! कितनी बदबू है यहाँ।
2. हट! मुझसे बात मत कर।

(v) चेतावनीसूचक-बच के सावधान, होशियार आदि; जैसे-

1. बच के! ध्यान से जाओ।
2. होशियार ! गली-गली में चोर है।

अध्याय 14 वाक्य तथा वाक्य-संरचना

(Sentence and its Structure)

वाक्य की परिभाषा

भाषा की वह इकाई, जो किसी भाव या विचार को पूरी तरह से व्यक्त कर सकती है, वाक्य कहलाती है।

वाक्य-संरचना

अब सवाल उठता है कि वाक्य बनते किस तरह से हैं? आप पहले भी पढ़ चुके हैं कि वाक्य में प्रयुक्त शब्द पद कहलाते हैं। इसका अर्थ हुआ कि वाक्य की रचना तरह-तरह के पदों से होती है। उदाहरण के लिए लड़के ने कुत्ते को डंडे से मारा एक वाक्य है, जिसकी रचना अलग-अलग पदों से हुई है।

क्या आप बता सकते हैं कि वाक्य में वह कौन-सा पद है, जिसके बिना वाक्य नहीं बन सकता। क्या हम लड़के ने कुत्ते को डंडे से पदों के समूह को वाक्य कह सकते हैं? नहीं कह सकते, क्योंकि वाक्य में जब तक क्रिया पद न हो, तब तक वह वाक्य नहीं बनता। वाक्य में कम-से-कम एक क्रिया पद का होना बहुत जरूरी है।

सामान्यत: एक संपूर्ण वाक्य में दो अंश होते हैं। एक अंश तो वह होता है, जिसके बारे में कुछ कहा जाता है और दूसरा अंश जो कुछ कहा जाता है वह होता है। उदाहरण के लिए बच्चा घर गया वाक्य में बच्चे के बारे में घर जाने की बात कही गई है। जिसके बारे में कुछ कहा जाता है, उसे उद्देश्य (Subject) तथा उद्देश्य के बारे में जो कुछ कहा जाता है, उसे विधेय (Predicate) कहते हैं। इस तरह वाक्य के दो अंग होते हैं-उद्देश्य तथा विधेय; जैसे-

उद्देश्य वाक्य के अंग विधेय

उद्देश्य	विधेय
1. अध्यापक	कक्षा में पढ़ा रहे हैं।
2. मेरे बड़े भाई	कल लंदन से वापस आ रहे हैं।
3. दौड़कर आता हुआ बच्चा	अचानक गिर गया।

वाक्य के भेद

वाक्यों के भेद दो आधारों पर किए जाते हैं-

वाक्य

- रचना के आधार पर
- अर्थ के आधार पर

रचना के आधार पर

रचना की दृष्टि से सभी वाक्य एक जैसे नहीं होते। कुछ वाक्यों में केवल एक क्रिया पदबंध होता है, तो कुछ में एक से अधिक। देखिए निम्नलिखित उदाहरण-

एक क्रिया पदबंध वाले वाक्य

1. लड़का गाँव गया है।
2. लड़की खाना बना रही है।

एकाधिक क्रिया पदबंध वाले वाक्य

1. वह लड़का गाँव गया है जो मेरे घर में रहता है।
2. लड़का गाँव गया है और लड़की खाना बना रही है।

एक क्रिया पदबंध वाले वाक्यों को सरल वाक्य तथा एक से अधिक क्रिया पदबंध वाले वाक्यों को जटिल वाक्य कहा जाता है। ऊपर के उदाहरणों में वाक्य 1 तथा वाक्य 2 एक क्रिया पदबंध होने के कारण सरल वाक्य हैं तथा वाक्यं 3 तथा वाक्य 4 एक से अधिक क्रिया पदबंध होने के कारण जटिल वाक्य हैं। जटिल वाक्यों के पुनः दो भेद हो जाते हैं-संयुक्त वाक्य तथा मिश्र वाक्य। अतः रचना की दृष्टि से वाक्यों के दो भेद किए जाते हैं-

Creation Autonomous Academy

रचना की दृष्टि से वाक्य

- सरल वाक्य
- जटिल वाक्य

अर्थ के आधार पर

अर्थ के आधार पर वाक्यों के प्रमुख भेद इस प्रकार हैं-

1. कथनात्मक वाक्य या विधानवाचक वाक्य-जो वाक्य सामान्य कथन होते हैं, उन्हें कथनात्मक या विधानवाचक वाक्य कहते हैं; जैसे-

1. मैं सुबह घूमने जाता हूँ।
2. अध्यापक पढ़ा रहे हैं।
3. हम लोग मेला देखने जाएँगे।
4. पिता जी आएँगे।

2. निषेधात्मक वाक्य-इन वाक्यों में कथन को नकारा जाता है, इसलिए इनको नकारात्मक वाक्य भी कहते हैं; जैसे-

1. आप सुबह घूमने न जाएँ।
2. तुम लोग मेला देखने मत जाओ।
3. अध्यापक नहीं पढ़ा रहे।
4. मरीज कुछ नहीं खा रहा।

3. आज्ञार्थक वाक्य-जिन वाक्यों में आज्ञा, आदेश आदि के भाव व्यक्त किए जाते हैं, वे आज्ञार्थक वाक्य कहलाते हैं; जैसे-

1. आप चुपचाप खाना खाइए।
2. तुम यहाँ से जाओ।
3. तू जाकर खाना बना।
4. वहाँ से सामान उठा लाओ।

4 . प्रश्नवाचक वाक्य-जिन वाक्यों में कोई प्रश्न पूछा जाता है, वे प्रश्नवाचक वाक्य कहलाते हैं; जैसे-

1. तुम क्या कर रहे थे?
2. क्या मैं यहाँ बैठ सकता हूँ?
3. आप खाना कब खाएँगे?
4. वे कहाँ रहते हैं?

5. विस्मयादिबोधक वाक्य-जिन वाक्यों में विस्मय, अश्चर्य, घृणा, प्रेम, हर्ष आदि के भाव व्यक्त किए जाते हैं, वे विस्मयादिबोधक वाक्य कहलाते हैं; जैसे-

1. वाह! कितनी सुंदर साड़ी है।
2. उफ़ ! सर में बहुत दर्द है।
3. छिः! कितनी बदबू है, यहाँ।
4. शाबाश! बढ़ते जाओ।

Creation Autonomous Academy

अध्याय 15 वाक्यगत अशुद्धियाँ और अशुद्धि शोधन
(Structural Errors and their Corrections)

जब कोई अन्य भाषा-भाषी व्यक्ति किसी नई भाषा को सीखता है, तो अनेक प्रकार की अशुद्धियाँ करता है। अशुद्धियाँ होने का प्रमुख कारण है, उस भाषा के नियमों की सही जानकारी न होना। उदाहरण के लिए अंग्रेज़ी तथा हिंदी भाषा में पदक्रम संबंधी नियम इस प्रकार हैं-

हिंदी : वाक्य में पहले कर्ता, फिर कर्म और अंत में क्रिया आएगी; जैसे-

कर्ता	कर्म	क्रिया
1. बच्चे	किताब	पढ़ रहे हैं।
2. माँ	खाना	बना रही हैं।

अंग्रेज़ी : वाक्य में पहले कर्ता, फिर क्रिया और अंत में कर्म आएगा; जैसे-

कर्ता	क्रिया	कर्म
1. Children	are reading	books.
2. Mother	is cooking	foods.

यदि अंग्रेज़ी-भाषी हिंदी सीखते समय इस नियम से परिचित नहीं है तो वह हिंदी के वाक्यों को बच्चे पढ़ रहे हैं किताब या माँ बना रही हैं खाना के रूप में बोल सकता है। नियमों की सही जानकारी न होने पर अन्य भाषा-भाषी ही नहीं, मातृभाषा-भाषी बच्चे भी अशुद्धियाँ कर सकते हैं। भाषा की अशुद्धियों को धीरे-धीरे अभ्यास से ही दूर किया जा सकता है। नीचे कुछ अशुद्ध वाक्यों तथा उनके शुद्ध रूपों के उदाहरण दिए जा रहे हैं-

अशुद्ध वाक्य	शुद्ध वाक्य
1. कलम यह किसकी है?	1. यह किसकी कलम है?
2. वह आए तो गा।	2. वह तो आएगा।
3. हिंदी के महान उपन्यासकार प्रेमचंद थे।	3. प्रेमचंद हिंदी के महान उपन्यासकार थे।
4. एक कहानी की किताब चाहिए।	4. कहानी की एक किताब चाहिए।
5. यहाँ शुद्ध गाय का घी मिलता है।	5. यहाँ गाय का शुद्ध घी मिलता है।
6. सुभाषचंद्र बोस का देश उपकार नहीं भूल सकता।	6. देश सुभाषचंद्र बोस का उपकार नहीं भूल सकता।
7. शाम चार बजे जाऊँगा स्टेशन मैं।	7. मैं शाम चार बजे स्टेशन जाऊँगा।
8. बच्चे को प्लेट में रखकर मिठाई दो।	8. प्लेट में मिठाई रखकर बच्चे को दो।

अध्याय 16 विराम-चिह्न
(Punctuation)

अध्यापिका कक्षा में एक छात्र को खड़ा करके उसे डाँटती हुई, अपनी वाणी को विराम लगाओ, सुमन।

इस चित्र में अध्यापिका सुमन को डाँटते हुए कह रही है कि सुमन अपनी वाणी को विराम लगाओ। वाणी को विराम लगाने का अर्थ है-बोलना बंद करो। क्या आप अब बता सकते हैं कि विराम शब्द का क्या अर्थ है? विराम शब्द का अर्थ है-रुकना।

भाषा में जब हम किसी से बातचीत करते हैं तो लगातार बोलते नहीं चले जाते। बीच-बीच में थोड़ी-थोड़ी देर के लिए हम रुकते हैं या अपनी वाणी को विराम देते हैं। बोलते समय केवल रुकते ही नहीं, कभी प्रश्न पूछते हैं, कभी मना करने के लिए सिर हिलाते हैं, कभी किसी बात पर आश्चर्य प्रकट करते हैं आदि। ये सब कार्य मौखिक भाषा में हर व्यक्ति करता है। मौखिक भाषा की इन तरह-तरह की चेष्टाओं को लिखित भाषा में व्यक्त करने के लिए कुछ चिह्न बनाए गए हैं। इन्हीं लिखित चिह्नों को विराम चिह्न कहते हैं। हिंदी के कुछ प्रमुख विराम चिह्न इस प्रकार हैं-

विराम चिहन : -

1. पूर्ण विराम (Full Stop) - (।)
2. अर्ध विराम (Semi Colon) - (;)
3. अल्प विराम (Comma) - (,)
4. प्रश्नवाचक चिह्न (Sign of Interrogation) - (?)
5. विस्मयादिसूचक चिह्न (Sign of Exclamation) - (!)
6. योजक या विभाजक चिह्न (Hyphen) - (-)
7. निर्देशक चिह्न (Dash) - (_)
8. उद्धरण चिह्न (Inverted Comma) - (“ ”)
9. कोष्ठक (Brackets) - (( ))
10. हंसपद या त्रुटिपूरक (Caret) - (^)
11. लाघव या संक्षेपक चिह्न (Sign of Abbreviation) - (०)

1. पूर्ण विराम (।)-वाक्य की समाप्ति पर यह चिह्न लगाया जाता है; जैसे-

1. बच्चे सो गए।
2. कमला स्कूल गई।

Creation Autonomous Academy

2. अर्ध विराम (;)- जब वक्ता पूर्ण विराम की तुलना में कम समय (लगभग आधा) के लिए रुकता है, तब अर्ध विराम का प्रयोग किया जाता है; जैसे-

1. सब लोग चिल्लाते रहे; पर किसी ने नहीं सुनी।
2. सब लोग दवाई तलाशते रहे पर दवाई न मिली; क्योंकि इस दवाई की बाज़ार में कमी हो गई थी।

3. अल्प विराम (,)- वाक्य के बीच में जब अर्ध विराम की तुलना में भी कम रुका जाता है, तब अल्प विराम का प्रयोग किया जाता है; जैसे-

1. पिता जी ने आलू, गोभी, खीरा, टमाटर आदि खरीदे।
2. नहीं, मैं नहीं चल सकता।

4. प्रश्नवाचक चिह्न (?) - जब वाक्य में वक्ता प्रश्न पूछता है, तब इस चिह्न का प्रयोग किया जाता है; जैसे-

1. आपका नाम क्या है?
2. तुम कहाँ गए थे?

5. विस्मयाविसूचक चिह्न (!) - विस्मय, आश्चर्य, घृणा, शोक, प्रसन्नता, पीड़ा आदि भावों को व्यक्त करने वाले पदों, उपव्याक्यों एवं वाक्यों के अंत में तथा संबोधनसूचक शब्दों के बाद लिखित भाषा में विस्मयादिसूचक चिह्न (1) लगाए जाते हैं, जैसे-

1. अरे! तुम कैसे जीत गए!
2. हाय! मैं तो लुट गया!
3. दुर्घटना हो गई!
4. दीर्घायु हो !
5. ओह! मेरा सिर फटा जा रहा है!
6. मदन ! अपना काम करो।
7. रिजल्ट आ गया!
8. मीना! कल मत आना !

Creation Autonomous Academy

6. योजक या विभाजक चिह्न (-) - वाक्य के दो शब्दों को जोड़ना या अलग करना हो तो योजन चिह्न का प्रयोग किया जाता है; जैसे-

1. दाल-रोटी, भाई-बहन, रात-दिन
2. तुम-सा मूर्ख, लक्ष्मण-सा भाई
3. जल्दी-जल्दी, खाते-पीते, खेलते-कूदते

7. निर्देशक चिह्न (_)- यह चिह्न योजक चिह्न से थोड़ा बड़ा होता है तथा इसका प्रयोग किसी व्यक्ति के कथन को उद्धृत करने से पहले किया जाता है। नाटक, एकांकियों में इसका प्रयोग सबसे अधिक होता है; जैसे-

1. सुरेश-मदन, कल मेरा जन्मदिन है। तुम आना।
2. मदन-जरूर आऊँगा। कब पहुंचना है?
3. सुरेश-शाम को पाँच बजे।

8. उद्धरण चिह्न (" ")- किसी व्यक्ति के कथन को ज्यों-का-त्यों बताना हो तब इस चिह्न का प्रयोग किया जाता है; जैसे-

1 माँ ने कहा "मैं किसी से बात नहीं करूँगी।"
2. गांधी जी ने कहा था, "अहिंसा से ही स्वतंत्रता मिल सकती है।"

9. कोष्ठक (( ))- कोष्ठक का प्रयोग कठिन शब्दों का अर्थ बताने विकल्प दिखाने आदि के लिए किया जाता है; जैसे-

1. जब नेताजी (सुभाषचंद्र बोस) बर्मा पहुँचे तो वहाँ उनका बहुत स्वागत हुआ।
2. (अ), (ब), (स) आदि।
3. जलज (जल में जन्म लेनेवाला) तथा पंकज (कीचड़ में जन्म लेनेवाला) दोनों ही शब्द कमल के पर्याय हाज

10. हंसपद या त्रुटिपूरक (^) - लिखते समय जब कोई शब्द छूट जाता है, तब इस चिह्न को लगाकर उस शब्द को ऊपर लिख देते हैं; जैसे-

1.मेरी किताब खो गई है।
2. राम का सब लोग लेते हैं।

11. लाघव या संक्षेपक चिह्न (०) किसी बड़े अंश का संक्षिप्त रूप लिखने के लिए लाघव चिह्न का प्रयोग किया जाता है; जैसे-

1. आकस्मिक अवकाश (आ०अ०)
2. चिकित्सावकाश (चि०अ०)
3. प्रेरणार्थक क्रिया (प्रे०क्रि०)

Creation Autonomous Academy

अध्याय 17 मुहावरे एवं लोकोक्तियाँ
(Idioms and Proverbs)

मुहावरे (Idioms)

मुहावरे ऐसे वाक्यांश होते हैं, जिनके सामान्य अर्थ गौण हो जाते हैं तथा वे किसी विशिष्ट अर्थ के लिए रूढ़ हो जाते हैं; जैसे-' अध्यापक के जाते ही बच्चों ने आसमान सिर पर उठा लिया' वाक्य में प्रयुक्त आसमान सिर पर उठाना एक मुहावरा है। इसका सामान्य अर्थ है-आसमान को अपने सिर के ऊपर उठा लेना पर यहाँ यह अर्थ नहीं लगेगा। यह वाक्यांश 'बहुत शोर मचाना' के अर्थ में रुढ़ हो गया है। अतः पूरे वाक्य का अर्थ होगा-अध्यापक के जाते ही बच्चे बहुत शोर मचाने लगे।

मुहावरों के प्रयोग से भाषा बहुत प्रभावपूर्ण हो जाती है। अतः मुहावरों के प्रयोग सीखने पर अधिक ध्यान दिया जाना चाहिए। बच्चों को चाहिए कि वे मुहावरों को अपने वाक्यों में इस तरह प्रयुक्त करें कि उनके अर्थ संदर्भ से स्वयं स्पष्ट हो जाएँ।

नीचे प्रमुख मुहावरे, उनके अर्थ तथा उनके वाक्य प्रयोग दिए जा रहे हैं-

- **अंगूर खट्टे होना** (किसी चीज के न मिलने पर उससे विरक्त होना) - श्रीनाथ ने नौकरी पाने के लिए कई बार कोशिश की पर नौकरी न मिली। अब छोटी-सी दुकान चलाता है और कहता है कि नौकरी में क्या रखा है? भाई! इसी को कहते हैं अंगूर खट्टे हैं।

- **कँपकँपी छूटना** (डर से शरीर काँपना)- थानेदार को देखकर उस चोर की कँपकँपी छूट गई।

- **कहा-सुनी हो जाना** (झगड़ा होना) - आज पड़ोसियों के साथ थोड़ी कहा सुनी हो गई, इसी कारण वह बहुत दुखी है।

- **किरकिरी होना** (अपमानित होना)- जब तुम्हारी सारी करतूतों का पता लोगों को चलेगा, तब तुम्हारी कैसी किरकिरी होगी, देखना।

- **किस्मत खुलना** (उन्नति के दिन आना) लॉटरी क्या लगी, उसकी तो किस्मत ही खुल गई। 14. खुशी से फूला न समाना (बहुत खुश होना) बेटे को अमेरिका में नौकरी मिल गई है, यह खबर सुनकर रामभरोसे खुशी से फूला न समाया।

- **खून खौलना** (बहुत क्रोध आना)- जब भी मैं सोचता हूँ कि पड़ोस के नंदलाल ने मेरी माँ के साथ कैसा दुर्व्यवहार किया था, तो मेरा खून खौलने लगता है।
- **घोड़े बेचकर सोना** (गहरी नींद में सोना) बेटी का विवाह कर दिया, अब तो मैं घोड़े बेचकर सोता हूँ।

- **चेहरा फ़क पड़ जाना** (घबरा जाना)- जब चोरी पकड़ी गई तो रामनाथ. का चेहरा एकदम फ़क पड़ गया।
- **छोटा मुँह बड़ी बात** (हैसियत से अधिक बात करना) रामदीन के सुझाव पर उसके मालिक ने डाँटते हुए कहा, "छोटा मुँह बड़ी बात, शोभा नहीं देती, तुम चुप बैठो।"
- **जख्म हरा हो जाना** (बीते हुए कष्ट पुनः याद आना) माधो, रामदीन को धोखा देकर गायब हो गया था। कल अचानक जब रामदीन की नजर उस पर पड़ी तो रामदीन के जख्म फिर से हरे हो गए।
- **जमीन-आसमान एक करना** (बहुत परिश्रम करना)- इस जगह इतने ऊँचे पद पर पहुँचने के लिए मेरे बेटे ने जमीन-आसमान एक कर दिया था।
- **जेब भरना** (अनुचित ढंग से धन कमाना) सारे नेता अपनी-अपनी जेब भरने में लगे हैं। देश की चिंता किसी को नहीं।
- **टालमटोल करना** (बहाना बनाना)- मैंने उनसे पूछा, "टालमटोल मत कीजिए। साफ़ बताइए, आप मेरी मदद करेंगे या नहीं?"
- **तारीफ़ के पुल बाँधना** (अत्यधिक प्रशंसा करना) आज तो नेता जी के चमचों ने उनकी झूठी तारीफ़ों के पुल ही बाँध दिए।
- **दंग रह जाना** (चकित रह जाना) वह कितना बदल गई है, यह देखकर मैं तो दंग रह गया।
- **दबे पाँव आना जाना** (बिना आहट किए आना/जाना)- इस कमरे में दबे पाँव जाना क्योंकि अंदर बच्चा सो रहा है।
- **जी चुराना** (काम में मन न लगाना) जो लोग काम से जी चुराते हैं, कभी सफल नहीं हो पाते।
- **दम फूलना** (हाँफना) - दौड़ते-दौड़ते मेरा तो दम फूल गया।
- **दाल में कुछ काला होना** (आशंका/संदेह होना) - मुझे लगा था कि दाल में कुछ काला है, अतः मैं भी उसका पीछा करता रहा।
- **दीवारों के कान होना** (किसी गोपनीय बात के प्रकट हो जाने का खतरा) - दीवारों के भी कान होते हैं। अतः तुम लोग बात करते समय सावधानी रखा करो।

लोकोक्तियाँ (Proverb)

लोकोक्तियाँ के कथन हैं जो लोक में प्रचलित होते हैं तथा लोक-अनुभव पर आधारित होते हैं। लोकोक्ति और मुहावरे में अंतर होता है। लोकोक्ति में लोक-जीन के किसी न किसी अनुभव को व्यक्त किया जाता है जबकि मुहावरा अपने मुख्य अर्थ (शाब्दिक अर्थ) को छोड़कर किसी

विशिष्ट अर्थ में रुढ़ हो जाता है। इसके अलावा लोकोक्ति एवं स्वतंत्र वाक्य होती है जबकि मुहावरा एक वाक्यांश होता है। मुहावरे का प्रयोग स्वतंत्र रूप से नहीं हो सकता।

- **अंधों में काना राजा** (गुणहीन लोगों में थोड़े गुण वाला व्यक्ति भी बहुत गुणी माना जाता है)-इस कोठी में पाँच नौकर हैं। मुकेश को छोड़कर सब अँगूठा छाप हैं इसलिए सब मुकेश से दबते भी हैं और उसकी बात भी मानते हैं। मुकेश एक तरह से उनका बॉस बना हुआ है क्योंकि उसकी स्थिति अंधों में काना राजा जैसी है।

- **अंत भले का भला** (अच्छे कार्य का परिणाम भी अच्छा ही होता है) मेरे दोनों पड़ोसी हमेशा लड़ाई-झगड़ा ही करते रहते थे। पंडित रामप्रसाद जी ने बीच में पड़कर जब वे दोनों को समझाया और सुलह करवाई तबसे शांति है। वे दोनों पुराने झगड़े वाले दिनों को भूल चुके हैं। चलो जो भी हुआ पर अंत भले का भला हुआ।

- **अधजल गगरी छलकत जाए** (अधूरी योग्यता और कम योग्यता का व्यक्ति ही अधिक दिखावा करता है)- सुरेश हर जगह अपनी ही तारीफ़ करता रहता है जबकि सब लोग उसकी असलियत से वाकिफ़ हैं। सुरेश जैसे लोगों के बारे में ही किसी ने ठीक कहा है कि अध जल गगरी छलकत जाए।

- **अब पछताए होत क्या जब चिड़ियाँ चुग गई खेत** (काम बिगड़ जाने के बाद पछताने से कोई लाभ नहीं)-जब कहा जाता था कि पढ़-लिख कर कुछ बन जाओ तब तो सारा समय ऐसे ही मस्ती में गँवा देते थे। अब जब नौकरी नहीं मिलती तो अफ़सोस करते हो? भई, अब पछताए होत क्या जब चिड़ियाँ चुग गई खेत।

- **खोदा पहाड़ निकली चुहिया** (परिश्रम अधिक, लाभ कम) तीनों दोस्तों ने एक दुकान खोली और पूरे साल दिन रात मेहनत करते रहे पर अफ़सोस सालभर के बाद जब हिसाब लगाया तो बचत हुई कुल तीन हजार रुपए। इसे कहते हैं, खोदा पहाड़ और निकली चुहिया वो भी मरी हुई।

- **घर का भेदी लंका ढाए** (आपस की फूट से सर्वनाश होता है) तस्करी के सोने पर तीनों दोस्तों में झगड़ा हो गया। एक ने पुलिस को खबर दे दी और पुलिस सारे सोने समेत तीनों को पकड़ कर ले गई। सच है, घर का भेदी लंका ढाए।
- **चार दिन की चाँदनी, फिर अँधेरी रात** (थोड़े समय का सुख, फिर कष्ट)- अरे भैया, अपनी जवानी का घमंड मत करो। यह जवानी हमेशा नहीं रहने वाली, सबको बुढ़ापा आता है। यह जवानी तो चार दिन की चाँदनी फिर वही अँधेरी रात है।

- **जो गरजते हैं, वे बरसते नहीं** (जो डींग मारते हैं, वे काम नहीं कर सकते)- रमादीन का बेटा पिछले साल से शोर मचाता था कि इस बार वह मैडीकल की परीक्षा ज़रूर पास कर लेगा लेकिन इस बार भी रह गया। किसी ने सच कहा है कि जो गरजते हैं, वे बरसते नहीं।

Creation Autonomous Academy

- **डूबते को तिनके का सहारा** (मुसीबत के समय थोड़ी-सी मदद भी पर्याप्त होती है)- भाई साहब ने बिजनेस शुरू किया और शुरू में ही घाटा हो गया। धंधा बंद होने तक की नौबत आ गई। वह तो अच्छा हुआ कि बैंक से लोन मिल गया और काम फिर से लाइन पर आ गया। भाई साहब के लिए बैंक लोन डूबते को तिनके का सहारा साबित हुआ।

- **दूध का दूध पानी का पानी** (ठीक न्याय) आज जज साहब ने आपका फैसला सुनाकर दूध का दूध पानी का पानी कर दिया। दोषी को उचित सजा मिल गई और बेकसूर छूट गया।

- **धोबी का कुत्ता, घर का न घाट का** (अस्थिरता के कारण कहीं का न रहना)-मेरे भाई साहब ने पढ़ाई के साथ-साथ लघु उद्योग भी चलाया। न तो वे पढ़ाई ही कर सके और न उद्योग ही चला। इसे कहते हैं धोबी का कुत्ता, घर का न घाट का।

- **न लेना एक न देना दो** (कोई संबंध न रखना) भाई साहब का बड़ा बेटा गलत सोहबत में पड़ गया है और भाई साहब उसकी ओर ध्यान ही नहीं दे रहे। हमें क्या? भुगतेंगे खुद ही। हमें तो उस लड़के से न लेना एक न देना दो।

- **नौ सौ चूहे खाकर बिल्ली हज को चली** (अनेक पाप करने वाला व्यक्ति पुण्य की सोचे) - सारे जीवन पंडित अलोपीदीन गरीबों का शोषण करते रहे, उनकी महिलाओं पर भी जुल्म करने से बाज न आए और आज कथा कराने के बहाने सभी को भोज पर बुलाया है। यह तो वही बात हुई कि 'नौ सौ चूहे खाकर बिल्ली हज को चली'।

- **पराधीन सपनेहुँ सुख नाहीं** (परतंत्रता में कभी सुख नहीं)- अँग्रेजों के जाने के बाद भारतवासियों को यह अहसास हुआ कि 'पराधीन सपनेहु सुख नाहीं।'

- **पाँचों उँगलियाँ घी में होना** (चारों ओर से लाभ ही लाभ) - तुम्हारी तो पाँचों उँगलियाँ घी में हैं क्योंकि एक ओर तुम्हारा रिश्ता इतने बड़े घर से हो रहा है दूसरी ओर तुम्हारी नौकरी भी लग गई है।

- **बंदर क्या जाने अदरक का स्वाद** (मूर्ख व्यक्ति उत्तम वस्तु की कद्र नहीं जानता)-मैंने विदेश से लाकर इतना मँहगा परफ्यूम हरीश को दिया पर उसने उसे घटिया कह कर अपनी कामवाली को दे दिया। सच है बंदर क्या जाने अदरक का स्वाद।

- **बिन माँगे मोती मिले, माँगे मिले न भीख** (माँगने से कुछ नहीं मिलता) - ईश्वर पर भरोसा रखकर दिन रात परिश्रम करते रहो। किसी के आगे कभी हाथ मत फैलाओ क्योंकि बिन माँगे मोती मिले, माँगे मिले न भीख।

- **भगवान जब देता है तो छप्पर फाड़कर देता है** (ईश्वर की जब किसी पर कृपा होती है तो उसे चारों ओर से लाभ ही लाभ होता है) वर्मा जी के लिए यह साल बड़ा ही लकी साबित हुआ। उनकी बेटी का विवाह हो गया, एक करोड़ की लॉटरी लग गई जिससे

Creation Autonomous Academy

उन्होंने एक नया फ्लैट तथा गाड़ी खरीद ली। सच में भगवान जब किसी को देता है तो छप्पर फाड़ कर देता है।

- **रात गई, बात गई** (अवसर निकल जाना) - नौकरी के लिए आवेदन-पत्र भेजने की तिथि तो निकल गई अब तुम फॉर्म क्यों ख़रीदना चाहते हो? अब तो रात गई, बात गई।
- **लातों के देव, बातों से नहीं मानते** (नीच लोग बिना दंड दिए नहीं सुधरते)- आपका बेटा एकदम ढीठ हो गया है। किसी के समझाने का अब उस पर कोई असर नहीं होता। इसका इलाज़ तो है कि उस पर रोज डंडे बरसाए जाएँ क्योंकि लातों के देव बातों से नहीं मानते।

Creation Autonomous Academy

अध्याय 18 अपठित गद्यांश
(Unseen Passages)

अपठित शब्द का अर्थ है-जो कभी पढ़ा न गया हो। अर्थात् अपठित गद्यांश वे होते हैं जिनको छात्रों ने पहले कभी अपनी पाठ्यपुस्तक में पढ़ा नहीं हो। अपठित गद्यांश देकर उस पर बोधन के प्रश्न पूछे जाते हैं। इन प्रश्नों के उत्तर छात्रों को उसी गद्यांश के आधार पर देने होते हैं। उत्तर देते समय यह कोशिश होनी चाहिए कि उत्तर में गद्यांश के वाक्यों को जैसा का तैसा न उतारा जाए, बल्कि उसमें कही गई बात को अपने शब्दों में व्यक्त किया जाए।

अपठित गद्यांश का उद्देश्य

मूल्यांकन हेतु अपठित गद्यांश दिए जाने का अर्थ है-छात्रों की भाषा-बोधन का पता लगाना। अर्थात् यह जानना कि छात्र उस गद्यांश की भाषा को समझते हैं या नहीं। साथ ही इससे उनकी अभिव्यक्ति क्षमता का भी पता चल जाता है।

अपठित गद्यांश हल करते समय ध्यान देने योग्य बातें

- दिए गए अवतरण का एक-दो बार मौन वाचन करें तथा उसे समझने का प्रयास करें।
- तदुपरांत प्रश्नों को अलग-अलग पढ़ें और प्रत्येक प्रश्न के संभावित उत्तर को अवतरण में रेखांकित करें।
- जब प्रश्नों के उत्तर लिखना प्रारंभ करें, तो लेखक द्वारा कही गई बात को सरल एवं स्पष्ट भाषा में छोटे-छोटे वाक्यों में व्यक्त करें।
- जो भी लिखना हो कम से कम शब्दों में लिखें।
- यदि शीर्षक देना हो, तो किसी रफ़ पेज पर सोचकर दो-तीन शीर्षक लिख लें। फिर उनमें से जो सबसे अधिक उपयुक्त लगे, उसे उत्तर के रूप में लिखें।

उदाहारण :-

निर्देश-गद्यांशों के आधार पर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर पढ़िए।

Creation Autonomous Academy

भारत एक विशाल देश है। यह एशिया में दक्षिण की ओर स्थित है। भारत के दक्षिण में हिंद महासागर है। इसके पूरब में बंगाल की खाड़ी और पश्चिम में अरब सागर है। भारत को चार साधारण भौगोलिक क्षेत्रों में बाँटा जा सकता है- 1. उत्तर का पर्वतीय क्षेत्र, जो बर्फ से ढका हुआ है। 2. दक्षिण का विशाल उपजाऊ मैदान। 3. पूर्व में असम के जंगलों का दलदल वाला क्षेत्र। 4. पश्चिम में रेगिस्तान का क्षेत्र। भारत की राजधानी नई दिल्ली है। दिल्ली भी एक राज्य है। राष्ट्रपति और प्रधानमंत्री यहीं से पूरे भारत का राज चलाते हैं। जिस प्रकार भारत की राजधानी नई दिल्ली है, उसी प्रकार प्रत्येक राज्य की अपनी एक-एक राजधानी है, जहाँ से पूरे राज्य का

प्रशासन चलाया जाता है। संघशासित प्रदेशों का प्रशासक राष्ट्रपति होता है। इस प्रकार हम देखते हैं कि भारत एक बहुत बड़ा देश है।

प्र०1. भारत के दक्षिण, पूरब और पश्चिम में कौन-से सागर हैं?
उत्तर भारत के दक्षिण में हिंद महासागर, पूरब में बंगाल की खाड़ी और पश्चिम में अरब सागर है।

प्र०2. भारत को कौन-से चार भौगोलिक क्षेत्रों में बाँटा जा सकता है?
उत्तर भारत को चार भौगोलिक क्षेत्रों में बाँटा जा सकता है- (i) उत्तर का बर्फ से ढका पर्वतीय क्षेत्र, (ii) दक्षिण का विशाल उपजाऊ मैदान, (iii) पूर्व में असम के जंगल का दलदल वाला क्षेत्र तथा (iv) पश्चिम में रेगिस्तान का क्षेत्र।

प्र०३. भारत की राजधानी कहाँ है?
उत्तर भारत की राजधानी नई दिल्ली है।

प्र०4. संघशासित प्रदेशों का प्रशासक कौन होता है?
उत्तर संघशासित प्रदेशों का प्रशासक राष्ट्रपति होता है।

प्र०5. इस गद्यांश का उपर्युक्त शीर्षक लिखिए।
उत्तर शीर्षक-भारत एक विशाल देश।

दिए गए गद्यांशों के आधार पर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

भारत में बहुत-सी भाषाएँ बोलनेवाले और बहुत से धर्मों को माननेवाले लोग रहते हैं, परंतु उनमें आपस में भाईचारे का व्यवहार है। प्रत्येक समुदाय के अपने-अपने लोकनृत्य तथा लोकगीत हैं। सभी समुदायों के लोगों के खान-पान तथा पहनावे में भी अंतर है। भारत एक विकासशील देश है। यहाँ हजारों कल-कारखाने हैं। यहाँ बहुत अधिक संख्या में यातायात के आधुनिक साधन तथा व्यवसाय हैं। समस्त संसार से भारत का व्यवहार मित्रवत् है। भारतीय मिल-जुलकर रहते हैं और सबको आदर देते हैं। यह देश शांतिप्रिय है तथा पड़ोसी देशों के साथ मिलकर शांति से रहने का प्रयास करता है। भारत सरकार की विदेश नीति भी यही रही है कि हम भी शांति से रहें और हमारे पड़ोसी भी शांति से रहें।

Creation Autonomous Academy

प्रश्न:- (i) भारत में किस प्रकार के लोग रहते हैं तथा उनमें परस्पर कैसा व्यवहार है?
(ii) भारत को विकासशील देश क्यों कहा गया है?
(iii) अलग-अलग समुदाय के लोगों में क्या-क्या भिन्नताएँ हैं?
(iv) भारतीय किस प्रकार रहते हैं तथा पड़ोसी देशों से उनका व्यवहार कैसा है?
(v) भारत सरकार की क्या विदेश नीति रही है?

अध्याय 19 अपठित काव्यांश
(Unseen Verses)

अपठित काव्यांश काव्यों के वे अंश हैं जो पाठ्यपुस्तक से संबंधित नहीं होते। अपठित काव्यांश छात्रों में, पढ़कर भाव-ग्रहण करने की क्षमता को बढ़ाते हैं। इससे छात्रों की लेखन-शैली का विकास होता है, क्योंकि काव्यांश समझकर उन्हें अपने शब्दों में उत्तर देने होते हैं।

अपठित काव्यांश हल करते समय ध्यान देने योग्य बातें

- काव्यांश को दो-तीन बार पढ़कर भाव-ग्रहण करने का प्रयत्न करें।
- तदुपरांत प्रश्नों को पढ़कर काव्यांश में संभावित उत्तर की पंक्तियों को रेखांकित करें।
- प्रश्नों के उत्तर लिखते समय भाव को ध्यान में रखें।
- सरल एवं स्पष्ट भाषा का तथा छोटे-छोटे वाक्यों का प्रयोग करें।
- शीर्षक लिखते समय कोशिश करें कि वह छोटा और काव्यांश के मूल कथ्य से संबंधित हो।

उदाहरण

निर्देश-काव्यांशों तथा उनके आधार पर दिए गए प्रश्न-उत्तर पढ़ें।

प्रकृति हमें देती है सब कुछ,
हम भी तो कुछ देना सीखें।
सूरज हमें रोशनी देता,
हवा नया जीवन देती है;
भूख मिटाने को हम सबकी,
धरती पर खेती होती है।
औरों का भी हित हो जिसमें,
हम कुछ ऐसा करना सीखें।
हम भी तो कुछ देना सीखें।।
पथिकों को जलती दुपहर में
पेड़ सदा देते हैं छाया;
खुशबू खिले फूल की देते
देते मधुर फलों की माया।
त्यागी तरुओं के जीवन से,
हम भी तो कुछ जीना सीखें।
हम भी तो कुछ देना सीखें।।

Creation Autonomous Academy

प्र०1. प्रकृति के अंतर्गत सूरज और हवा हमें क्या देते हैं?
उत्तर सूरज हमें प्रकाश देता है तथा हवा हमें नया जीवन देती है।
प्र०2. धरती पर खेती क्यों होती है?
उत्तर धरती पर खेती इसलिए होती है ताकि हमें अन्न प्राप्त हो जिससे हमारी भूख मिटती है।
प्र०३. कवि हमें क्या करने की प्रेरणा दे रहा है?
उत्तर कवि हमें प्रेरणा देते हुए कह रहा है कि हम ऐसे कार्य करना सीखें, जिसमें दूसरों की भलाई हो।
प्र०4. पेड़-पौधों से हमें क्या प्राप्त होता है?
उत्तर पेड़-पौधों से तपती दोपहरी में शीतल छाया मिलती है, उनके फूलों से खुशबू मिलती है तथा **उनसे** मधुर फल मिलते हैं।
प्र०5. इस कविता का उपयुक्त शीर्षक लिखिए।
उत्तर शीर्षक-हम भी तो कुछ देना सीखें

दिए गए काव्यांशों के आधार पर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

कौन कह रहा वनजारों-सा यह सब जीवन बेकार है,
में सबका हूँ, , सब मेरे हैं, सबसे मुझको प्यार है।
चाँद और तारों की छत है
दिशा-दिशा दीवार है,
सारी धरती मेरा आँगन
पूरव-पश्चिम द्वार हैं,
बहुत बड़ी जिम्मेदारी है, बहुत बड़ा परिवार है,
सबके हित मधुकरी हमारी, सबके लिए सितार है।
जंगल, नदियाँ, पर्वत, झरने
मुझको रहे पुकार हैं,
कुंज-कुंज बैठी ख़ामोशी
मुझको रही निहार है,
इन लंबी सूनी सड़कों से ही मेरा व्यवहार है,
दिशा-दिशा में मेरी ही पगध्वनि का बंदनवार है।

Creation Autonomous Academy

प्रश्न:- (i) कवि के अनुसार कब यह जीवन बेकार नहीं लगता?
(ii) ऐसे मनुष्य का घर किस प्रकार का होता है?
(iii) मधुकरी से क्या तात्पर्य है?
(iv) कवि को कौन-कौन पुकार रहे हैं?
(v) कवि के जीवनं का व्यापार क्या है?

अध्याय 20 संवाद-लेखन
(Dialogue Writing)

संवाद शब्द सम् उपसर्ग तथा वाद शब्द के मेल से बना है। वाद का अर्थ है-कहा हुआ या कथन तथा सम् का अर्थ है- सम्यक रूप से या भली प्रकार। इस तरह संवाद वे कथन हैं, जो सम्यक रूप से या भली प्रकार से कहे गए हैं। संवाद के लिए आवश्यक है कि वक्ता तथा श्रोता आमने-सामने हों। लेकिन आज का युग इलेक्ट्रॉनिक मीडिया का युग है। विज्ञान ने संवाद के ऐसे साधन खोज निकाले हैं कि वक्ता और श्रोता आमने-सामने नहीं भी हैं तो भी संवाद हो जाता है; जैसे- टेलीफ़ोन, मोबाइल, ऑडियो-वीडियो-कॉन्फ्रेंसिंग आदि।

संवाद छोटे भी हो सकते हैं और बड़े भी। एकांकी, नाटक, फ़िल्मों की पटकथा आदि बड़े-बड़े संवादों के उदाहरण हैं। जहाँ तक छोटे संवादों या वार्तालापों का प्रश्न है, इनका संबंध हमारे दैनिक जीवन से होता है।

इन संवादों के माध्यम से वक्ता और श्रोता की मनःस्थिति, मनोभाव आदि सभी को व्यक्त होने का अवसर मिलता है; जैसे-एक बच्चा अपने दोस्तों से कभी हँसकर, तो कभी नाराज होकर बात करता है। अपने अध्यापक से (यदि होमवर्क नहीं किया है) तो डरकर बात करता है; अपनी माँ से प्रेम और आदर से बात करता है आदि।

संवाद-लेखन के लिए निम्नलिखित बातों को ध्यान में रखें

- संवाद का मुख्य उद्देश्य है संप्रेषण अर्थात् जो कुछ कहा जा रहा है, वह पूरी तरह संप्रेषित हो जाए।
- जो बात कही जा रही है वह श्रोता को समझ में आनी चाहिए।
- संवादों के लिए प्रयुक्त भाषा सरल, सहज और पात्रानुकूल होनी चाहिए।
- संवादों में छोटे-छोटे सरल वाक्यों का प्रयोग अधिक होना चाहिए, क्योंकि यदि लंबे जटिल वाक्य होंगे, तो श्रोता सुनकर समझ नहीं पाएगा।
- वक्ता ने बोलते समय जिन भाव-भंगिमाओं, मौखिक चेष्टाओं का प्रयोग किया है, उन्हें संकेत रूप में कोष्ठक के अंदर लिखना चाहिए।
- संवाद जितने रोचक और चुटीले होंगे, उतने ही अधिक प्रभावी होंगे।
- संवादों में चमत्कारपूर्ण वाक्यों, अनेकार्थी वाक्यों, मुहावरे, लोकोक्तियों के प्रयोग से बचना चाहिए, क्योंकि यदि श्रोता इनको नहीं समझ पाता तो संप्रेषण संभव नहीं होगा।

Creation Autonomous Academy

संवादों के नमूने

1. मुकेश अपने जन्मदिन पर अपने दोस्त समीर को बुलाना चाहता है। दोनों के बीच हुआ संवाद।

मुकेश - समीर, अगले सप्ताह मंगलवार को मेरा जन्मदिन है। मैं चाहता हूँ कि तुम भी आओ।

समीर - कितने बजे आना होगा?

मुकेश - शाम को पाँच बजे।

समीर - और कौन-कौन आ रहे हैं?

मुकेश - सौरभ, दीपा, पिंकी और सुमन आएँगे। तुम आओगे तो बहुत मज़ा आएगा।

समीर - ठीक है। मैं अपने मम्मी-पापा से बात करके तुम्हें कल बता दूँगा।

मुकेश - ठीक है। अब चलता हूँ। बाय।

समीर - बाय।

2. मृणाल को बुखार आ गया है। उसके पिता जी उसे डॉक्टर के पास ले जाते हैं। डॉक्टर और मृणाल के बीच संवाद।

मृणाल - डॉक्टर साहब, नमस्ते।

डॉक्टर - नमस्ते बेटा। क्या हुआ, सब ठीक तो है?

मृणाल - डॉक्टर साहब, मुझे कल से बुखार आ रहा है। पूरे बदन में बहुत दर्द है। खाँसी भी बहुत आती है।

डॉक्टर - मुँह खोलो। (टॉर्च से गला चेक करते हैं) अपना हाथ इधर लाओ। (नब्ज देखते हैं)। कल क्या खाया था?

मृणाल - डॉक्टर साहब, कल मेरे दोस्त के जन्मदिन की पार्टी थी। वहीं खाया-पिया था। डॉक्टर - लगता है, ठंडी कोल्डड्रिंक बहुत पी है।

मृणाल - जी, सर।

डॉक्टर - इसीलिए गला खराब हुआ है। थ्रोट इनफ़ेक्शन के कारण ही बुखार है। कोई बात नहीं पाँच दिन दवाई खाओ, ठीक हो जाओगे।

मृणाल - ठीक है, डॉक्टर साहब।

Creation Autonomous Academy

अध्याय 21 सार-लेखन
(Summary Writing)

किसी दिए गए गद्यांश या अनुच्छेद में कही गई मुख्य बात को संक्षिप्त करके अपनी भाषा में लिखन ही सार-लेखन कहलाता है। सार-लेखन किसी पठित गद्यांश का भी हो सकता है तथा किसी अपलिग अंश का भी। छात्रों का भाषा पर कितना अधिकार हुआ है, वे किसी अंश को पढ़कर उसे कितन समझते हैं, इन सबकी जानकारी के लिए प्रायः अपठित गद्यांशों को सार-लेखन के लिए दिया जाता है। छोटे बच्चे किसी गद्यांश में कही गई अनेक बातों पर प्रायः एक साथ ध्यान केंद्रित नहीं कर पाते अतः उनसे अपठित गद्यांश का सार-लेखन कराए जाने के अलावा उस गद्यांश में कही गई बातों पा अलग-अलग प्रश्न भी पूछे जा सकते हैं। इन प्रश्नों के उत्तर छात्रों को बाद में सारांश लिखने में भी मदद करते हैं। इसके अलावा उस गद्यांश का उपयुक्त शीर्षक भी छात्रों से पूछा जा सकता है।

अतः अपठित गद्यांश को पढ़कर समझने की क्षमता तथा समझी हुई बातों को भाषा में ठीक प्रकार से अभिव्यक्त करने की क्षमता को विकसित करने तथा उसका परीक्षण करने हेतु सार-लेखन एक उपयोगी विधा है। बड़ी कक्षाओं के छात्रों से अपठित अंश का मात्र (i) शीर्षक तथा (ii) सार लिखवाया जाता है किंतु छोटी कक्षाओं के बच्चों से-

(i) अपठित अंश में आई प्रमुख बातों पर छोटे-छोटे प्रश्नों के उत्तर,
(ii) सारांश तथा
(iii) उपयुक्त शीर्षक-तीनों बातें पूछी जा सकती हैं।

सार-लेखन के लिए महत्वपूर्ण बातें

- गद्यांश को दो-तीन बार ध्यान से पढ़िए तथा यह समझने की कोशिश कीजिए कि लेखक क्या बात कहना चाह रहा है?
- जो भी महत्वपूर्ण बात कही गई है, उस अंश पर पेंसिल से रेखा खींच लीजिए।
- जो भी प्रश्न पूछे गए हैं, उनके संक्षिप्त उत्तर अपनी भाषा में दीजिए।
- प्रश्नों के उत्तर, गद्यांश में आई बातों पर ही आधारित होने चाहिए। अपनी ओर से कोई नई बात नहीं लिखनी चाहिए।
- सारांश, मूल अंश का लगभग एक-तिहाई अंश होना चाहिए।
- सारांश में वे सब प्रमुख बातें अवश्य आ जानी चाहिए, जो मूल गद्यांश में कही गई हैं।
- समस्त गद्यांश को पढ़कर उसके केंद्रीय भाव को भी समझने की कोशिश करनी चाहिए। गद्यांश का शीर्षक इसी केंद्रीय भाव पर आधारित होना चाहिए।
- चाहे प्रश्नों के उत्तर हों या सारांश, अपनी शब्दावली तथा भाषा में ही लिखे जाने चाहिए।

सार-लेखन के नमूने

निर्देश-दिए गए गद्यांशों के आधार पर पूछे गए प्रश्नों के उत्तरों तथा सारांश को पढ़िए।

Gracious Autonomous Academy

भारत में अनेक दर्शनीय स्थान हैं। इनमें कुछ तो ऐसे हैं, जिनको मनुष्य ने अपने हाथों से बनाया है, और कुछ ऐसे हैं, जिन्हें प्रकृति ने बनाया है। इनके अतिरिक्त कुछ ऐसे भी स्थान हैं, जिन्हें मनुष्य और प्रकृति दोनों ने मिलकर बनाया और सजाया है। कश्मीर के शालीमार और निशात बाग़ ऐसे ही दर्शनीय स्थान हैं। शालीमार बाग़ों का राजा है तो निशात को बाग़ों की रानी कह सकते हैं।

कश्मीर की इसी सुंदरता को देखकर मुगल बादशाह जहाँगीर प्रतिवर्ष कश्मीर जाया करते थे। उन्हें बाग़ लगवाने का बड़ा शौक था। कश्मीर में भी उन्होंने कई बाग़ लगवाए। ये बाग़ उन्होंने ऐसे स्थानों पर लगवाए, जहाँ पास में कोई झील या झरना हो ताकि उनकी सिंचाई का भी प्रबंध हो सके। जहाँगीर द्वारा लगवाए गए बाग़ों में शालीमार बहुत प्रसिद्ध है। शालीमार का अर्थ है- प्रेम। वास्तव में यह बाग़ बादशाह जहाँगीर के सौंदर्य-प्रेम का जीता-जागता उदाहरण है। इसे मनुष्य और प्रकृति दोनों ने मिलकर सजाया है।

प्रश्न:- (i) भारत में किस-किस प्रकार के दर्शनीय स्थान हैं?

(ii) शालीमार और निशात बाग़ों को क्या संज्ञा दी गई है?
(iii) जहाँगीर का क्या शौक था?
(iv) जहाँगीर ने कश्मीर में किन स्थानों पर बाग़ लगवाए और क्यों?
(v) शालीमार का क्या अर्थ है और यह क्यों प्रसिद्ध है?
(vi) रंगीन छपे शब्दों के अर्थ लिखिए।
(vii) उपर्युक्त गद्यांश का सारांश लिखिए।
(viii) इस गद्यांश का उपयुक्त शीर्षक बताइए।

उत्तर:-

(i) भारत में अनेक प्रकार के दर्शनीय स्थान हैं। कुछ स्थान तो ऐसे हैं, जिन्हें मनुष्य ने स्वयं बनाया है और कुछ ऐसे हैं, जो प्रकृति की देन हैं। इसके अलावा कुछ ऐसे स्थान भी हैं, जिनको मनुष्य तथा प्रकृति दोनों ने मिलकर बनाया है।

(ii) शालीमार बाग़ को बाग़ों का राजा तथा निशात बाग़ को बाग़ों की रानी की संज्ञा दी गई है।

(iii) मुगल बादशाह जहाँगीर को बाग़ लगवाने का बहुत शौक था, इसीलिए वह हर सालकश्मीर जाया करते थे और वहाँ उन्होंने अनेक बाग़ लगवाए।

(iv) जहाँगीर ने कश्मीर में ऐसी जगहों पर बाग़ लगवाए, जहाँ पानी आसानी से मिल जाता हो। इसलिए उन्होंने झीलों-झरनों के निकट अधिक बाग़ लगवाए। इसका कारण यही था कि इन बाग़ों की सिंचाई ठीक प्रकार से हो सके।

Creation Autonomous Academy

(v) शालीमार का अर्थ है-प्रेम या प्यार। शालीमार एक बाग़ है, जिसे जहाँगीर ने कश्मीर में लगवाया था। यह बहुत ही सुंदर बाग़ है और इसे बाग़ों का राजा कहा जाता है, क्योंकि इसको मनुष्य तथा प्रकृति दोनों ने मिलकर बनाया है।

(vi) दर्शनीय = देखने योग्य
प्रतिवर्ष = हर साल
सौंदर्य-प्रेम = सुंदरता के प्रति प्रेम या प्यार।

(vii) सारांश-भारत के अनेक दर्शनीय स्थानों में कश्मीर के बाग़ों का विशेष महत्व है। जहाँगीर द्वारा निर्मित शालीमार तथा निशात बाग़ अपनी सुंदरता के कारण बहुत प्रसिद्ध हैं। शालीमार का अर्थ है-प्रेम। वास्तव में शालीमार बाग़ प्रेम और सौंदर्य का प्रतीक है, इसीलिए उसे बाग़ों का राजा कहा जाता है। दूसरी ओर निशात बाग़ को बाग़ों की रानी कहा जाता है।

(viii) शीर्षक-कश्मीर के सुंदर बाग़

निर्देश-दिए गए गद्यांशों का एक-तिहाई शब्दों में सारांश तथा उपयुक्त शीर्षक पढ़िए।

1. विनय विद्या का भूषण है। बिना विनय के विद्या शोभा नहीं देती। श्रीमद्भगवद्गीता में ब्राह्मण का विशेषण विद्या-विनय-संपन्न कहा गया है। जिस विद्या के साथ विनय नहीं है, उससे कोई लाभ नहीं हो सकता। विनय केवल विद्या को ही नहीं, वरन धन और बल दोनों को ही शोभा देती है। भृगु जी ने भगवान विष्णु के वक्षस्थल पर लात मारी तो भगवान पूछने लगे कि महाराज! आपके पैर में चोट तो नहीं लगी? विनय का क्या ही उत्तम आदर्श है। विनय केवल शिष्टाचार के लिए ही आवश्यक नहीं है वरन इससे आत्मा की शुद्धि भी होती है। विनयशील मनुष्य अभिमान के दोष से बचा रहता है। नम्र भाव दूसरों में प्रेम-भाव उत्पन्न करता है और अपने में अपूर्व शांति अनुभव करता है। धन, बल और विद्या के होते हुए भी जो विनय प्रकट करता है, उसको कोई कायर नहीं कह सकता। भय-वश विनय आत्मा को गिराती है, किंतु प्रेम और निरभिमानता की विनय आत्मा का उत्थान करती है।

सारांश-मनुष्य के चरित्र का मुख्य गुण है-विनय। विद्यावान व्यक्ति में तो विनय का होना अत्यंत आवश्यक है। विनय से रहित विद्या बेकार है। न केवल विद्यावान, बल्कि धनवान तथा शक्तिशाली वीर पुरुष में भी विनय होना ज़रूरी है। विनय से मनुष्य की आत्मा के अभिमान का नाश होता है। विनम्र स्वभाव से मनुष्य परस्पर प्रेम और भाईचारे की भावना को बढ़ा सकता है। विनय किसी भय के कारण नहीं होनी चाहिए, बल्कि प्रेम और निरभिमानता से उत्पन्न विनय से ही आत्मा का उत्थान होता है।

Creation Autonomous Academy

शीर्षक-विनय

2. उदारता का अभिप्राय, केवल निःसंकोच भाव से किसी को धन दे डालना ही नहीं, वरन 5 दूसरों के प्रति उदार-भाव रखना भी है। उदार पुरुष सदा दूसरों के विचारों का आदर करता है और समाज में सेवक-भाव से रहता है। उदार चरित्रानां तु वसुधैव कुटुम्कम् में जो उपदेश दिया गया है, वह केवल धन की उदारता नहीं, वरन उसमें प्रेम और सेवा की भी उदारता सम्मिलित है। बहुत से लोग आपकी धन-संबंधी उदारता की अपेक्षा नहीं करते। बहुत-से निर्धन भी इस बात को अपनी निर्भरता के गौरव के विरुद्ध समझते हैं कि वे आपकी आर्थिक सहायता लें, किंतु वे उदारतापूर्ण शब्दों के सदा भूखे रहते हैं। यह न समझिए कि केवल धन से ही उदारता हो सकती है। सच्ची उदारता इस बात में है कि मनुष्य को समझा जाए, उसके भावों का उतना ही आदर किया जाए, जितना अपने का। ऐसा आदर उदारता नहीं है, वरन कर्तव्य है।

सारांश-उदारता का अर्थ केवल किसी को धन देना ही नहीं है, बल्कि दूसरों के प्रति उदार भावना रखना, उनके विचारों का आदर करना तथा समाज-सेवा करना भी है। बहुत-से व्यक्ति तो उदारता में धन की बिलकुल अपेक्षा ही नहीं करते और कुछ लोग तो धन दिए जाने को अपना अपमान समझते हैं। वे तो केवल उदार व्यवहार की ही अपेक्षा करते हैं। अतः यह ध्यान रखिए कि सच्ची उदारता वहाँ होती है, जहाँ दूसरों की भावनाओं को उसी प्रकार महत्व दिया जाए, जैसा कि हम अपनी भावनाओं को देते हैं।

शीर्षक-उदारता

Creation Autonomous Academy

अध्याय 22 अनुच्छेद-लेखन
(Paragraph Writing)

परस्पर संबद्ध आठ-दस वाक्यों में जब किसी एक विचार, संकल्पना, कथ्य अथवा विषय पर कुछ कहा जाता है तो इन वाक्यों का समुच्चय अनुच्छेद कहलाता है। अनुच्छेद में आनेवाले सभी वाक्य एक ही विषय या विचार से संबद्ध होने के कारण परस्पर जुड़े रहते हैं।

अनुच्छेद लिखते समय किसी भी प्रकार की भूमिका की आवश्यकता नहीं होती। सीधे-सीधे विषय से संबंधित प्रमुख वाक्यों को लिख दिया जाता है। निबंध में एक से अधिक अनुच्छेद होते हैं। अतः अनुच्छेद-लेखन का अभ्यास करने से छात्रों में किसी विषय पर अपने विचार व्यक्त करने की क्षमता तो विकसित होती ही है, निबंध लेखन में भी दक्षता आती है।

अनुच्छेद लिखते समय निम्नलिखित बातों का ध्यान रखना चाहिए

- जिस विषय पर भी अनुच्छेद लिखना है, उससे संबंधित प्रमुख बातों को संकेत रूप में नोट कर लीजिए।
- अब इन बातों को एक निश्चित क्रम में लिखिए।
- अनुच्छेद की भाषा सरल और सुबोध होनी चाहिए।
- केवल महत्वपूर्ण बातों को ही अनुच्छेद में लिखिए, बेकार का विस्तार नहीं होना चाहिए। अनुच्छेद के सभी वाक्य परस्पर संबद्ध होने चाहिए।
- अनुच्छेद रोचक होना चाहिए।
- अनुच्छेद में विराम चिह्नों का उचित प्रयोग किया जाना चाहिए।

अनुच्छेद के उदाहरण

1. **देशप्रेम**

अपने देश से प्रेम होना, यह हर व्यक्ति का सहज गुण है। संसार में जितने भी महापुरुष हुए हैं, उनका जीवन देशप्रेम की गाथाओं से जुड़ा हुआ है। देशप्रेम का सूत्र सारे देश की विविधताओं को भी एक सूत्र में बाँध देता है। सच्चा वीर वही होता है जो अपने देश के लिए अपने प्राणों की बाज़ी तक लगा देता है। जो लोग अपने देश के साथ गद्दारी करते हैं, वे देशद्रोही कहलाते हैं। सच्चे देशभक्त तो अपने कार्य-कलापों से सारे विश्व में अपने देश का नाम ऊँचा करते हैं। ऐसे ही राष्ट्र नायकों का आगे आने वाला युग गुणगान करता है। जिसे अपने देश से प्रेम नहीं है, वह व्यक्ति तो निरा पशु ही है। मैथिलीशरण गुप्त की शब्दावली में हम कह सकते हैं-

जिसको नहीं निज देश औ' निज जाति का अभिमान है।
वह नर नहीं है निरा पशु है, और मृतक समान है।।

Creation Autonomous Academy

2. विद्यार्थी-जीवन

प्रत्येक राष्ट्र का भविष्य उसके विद्यार्थी ही तो हैं। आज के विद्यार्थी ही कल के राष्ट्र-नेता, बड़े-बड़े वैज्ञानिक, राजनीतिज्ञ आदि बनते हैं। पर इन ऊँचाइयों तक पहुँचने के लिए विद्यार्थियों को तलवार की धार से गुज़रना पड़ता है। संयम और निग्रह विद्यार्थी-जीवन के लिए अनिवार्य गुण हैं। विद्यार्थियों के लिए कुशाग्रबुद्धि होना जरूरी है। इसके लिए उन्हें अपनी आवश्यकताओं को कम करना होगा। भोजन तथा वाणी पर संयम रखना होगा। मांस-मदिरा, धूम्रपान ये सब विद्यार्थी-जीवन के लिए विष हैं। हमारे शास्त्रों में कहा गया है कि विद्यार्थी की नींद कुत्ते जैसी, चेष्टा कौए जैसी तथा ध्यान बगुले जैसा होना चाहिए। विद्यार्थी-जीवन में मनुष्य को शारीरिक रूप से हृष्ट-पुष्ट होना चाहिए। उसे अपना मानसिक विकास करना चाहिए। अपने सद्व्यवहार तथा श्रेष्ठ गुणों को विकसित करना चाहिए।

3. अच्छा स्वास्थ्य

संस्कृत में एक कहावत है-शरीरमाध्यं खलु धर्म-साधनम् अर्थात शरीर ही धर्म-साधना का एकमात्र माध्यम है। जी हाँ, शरीर आत्मा का परम पावन मंदिर है। अतः शरीर का स्वस्थ होना अति आवश्यक है। यदि अच्छा स्वास्थ्य नहीं है तो मनुष्य कुछ भी नहीं कर पाता। अच्छे स्वास्थ्य के लिए आवश्यक है, नियमित और संतुलित आहार, स्वच्छ वायु, नियमित परिश्रम, संयम और व्यायाम। शारीरिक स्वास्थ्य पर ही मानसिक स्वास्थ्य निर्भर करता है। रोगी व्यक्ति की मानसिक शक्तियाँ कुंठित और रुग्ण हो जाती हैं। स्वस्थ एवं प्रगतिशील विचारों का जन्म स्वस्थ शरीर में ही संभव है।

4. पर उपदेश कुशल बहुतेरे

दोष पराए देखकर, चले हसंत-हसंत ।
अपने याद न आवई, जिनका आदि न अंत ॥

इस दोहे का मूल भाव यही है कि व्यक्ति को अपने दोष दिखाई नहीं देते, परंतु वह दूसरों के दोषों को देखकर हँसता है। व्यक्ति का स्वभाव ही ऐसा है कि उसकी अहं भावना उसे अपने भीतर झाँकने नहीं देती, वरन दूसरों के दोष निकालने तथा उन्हें उपदेश देने की प्रवृत्ति को बढ़ावा देती है। प्रायः व्यक्ति भूल जाता है कि उसमें भी कुछ दोष हो सकते हैं। पर उपदेश कुशल बहुतेरे वाक्यांश का भी आशय यही है कि व्यक्ति को उपदेश देने में तनिक भी परिश्रम नहीं करना पड़ता। व्यक्ति को. दूसरे को उपदेश देने से पहले सोच लेना चाहिए कि जो उपदेश वह दूसरों को दे रहा है, क्या उसके अनुसार वह स्वयं भी आचरण करता है? यदि नहीं, तो उसको उपदेश देने का कोई अधिकार नहीं। व्यक्ति की कथनी और करनी में अंतर नहीं होना चाहिए तथा उसके व्यवहार एवं नैतिक मूल्यों में कोई दरार नहीं होनी चाहिए।

Creation Autonomous Academy

अध्याय 23 पत्र - लेखन
(Letter Writing)

पत्रों के माध्यम से लोग अपने मित्रों, रिश्तेदारों तथा सगे-संबंधियों से संपर्क बनाए रखते हैं तो दूसरी ओर तरह-तरह के कार्य करने-कराने के लिए विभिन्न कार्यालयों में, बैंकों में, विद्यालय तथा विश्वविद्यालयों आदि में तरह-तरह के पत्र नित्य लिखे जाते हैं।

पत्र-लेखन एक कला के रूप में

कहानी, कविता, उपन्यास, नाटक, एकांकी, निबंध आदि की तरह पत्र लिखना भी एक कला है। जो पत्र जितना अधिक रोचक तथा प्रभावशाली होगा, वह पाठक पर उतना ही गहरा प्रभाव डालेगा। पत्रों को प्रभावशाली एवं रोचक बनाकर हम अपना काम भी आसानी से सिद्ध करवा सकते हैं। अतः पत्र-लेखन की भी कुछ प्रमुख विशेषताएँ होती हैं-

(i) पत्र की भाषा शुद्ध एवं सरल होनी चाहिए। पत्र-लेखक जो कुछ भी कहना चाहता है, वह पाठक को आसानी से समझ में आ जाना चाहिए।

(ii) पत्र का अभिप्राय क्या है, यह बात पत्र से स्पष्टतः पता लगनी चाहिए।

(iii) पत्र बहुत लंबा नहीं होना चाहिए। जो भी बात हो संक्षेप में कह देनी चाहिए।

पत्र के प्रकार

पत्र मुख्यतः दो प्रकार के होते हैं-

1. अनौपचारिक पत्र-परिचित व्यक्तियों या सगे-संबंधियों आदि को जो पत्र भेजे जाते हैं, वे अनौपचारिक या व्यक्तिगत पत्र कहलाते हैं।

2. औपचारिक पत्र-जिन लोगों से कोई व्यक्तिगत संबंध नहीं होता, उन लोगों को जो पत्र लिखे जाते हैं, वे औपचारिक पत्र होते हैं। इनमें कई औपचारिक कथन या सूचना आदि होती है। इसके अंतर्गत तीन तरह के पत्र आते हैं-

(i) आवेदन पत्र या प्रार्थना पत्र (प्रधानाचार्य आदि को लिखे जानेवाले पत्र)

(ii) व्यावसायिक पत्र (व्यापारियों, दुकानदारों आदि को लिखे जानेवाले पत्र) तथा

(iii) सरकारी पत्र (सरकारी कर्मचारी या विभाग द्वारा किसी अन्य कर्मचारी या विभाग को लिखे जानेवाले पत्र)

पत्र के अंग

किसी पत्र के सामान्यतः निम्नलिखित अंग होते हैं-

Creation Autonomous Academy

1. पते और तिथि का निर्देश-पत्र के सबसे ऊपरी बाएँ किनारे पर पत्र लिखनेवाले का पता तथा उसके ठीक नीचे पत्र लिखने की तिथि लिखी जाती है।

2. संबोधन-पत्र के शुरू में बाईं ओर संबोधन शब्द लिखे जाते हैं। कुछ संबोधनों के उदाहरण नीचे दिए जा रहे हैं-

(i) अनौपचारिक/व्यक्तिगत पत्रों में संबोधन -

(क) अपने से बड़ों के लिए-श्रद्धेय, आदरणीय, पूज्य, पूजनीय, मान्यवर आदि।
(ख) अपने बराबरवालों के लिए-प्रिय, बंधु, प्रियवर, मित्रवर, बंधुवर आदि।
(ग) अपने से छोटों के लिए-प्रिय ... (नाम) ..., आयुष्मान, चिरंजीव आदि।

(ii) **औपचारिक पत्रों में संबोधन-**प्रिय महोदय, महोदय आदि।

3. अभिवादन-जैसा संबोधन होता है, वैसा ही अभिवादनसूचक शब्द लिखा जाता है; जैसे-प्रणाम, नमस्कार, चरणस्पर्श, आशीर्वाद, शुभाशीष आदि।

4. पत्र का कलेवर-जिस विषय में पत्र लिखा जा रहा है, उससे संबंधित सभी बातें यहाँ लिखी जाती हैं।

5. स्वनिर्देश या समापन निर्देश-पत्र का मूल विषय समाप्त हो जाने के बाद पत्र को समाप्त करने से पहले कुछ औपचारिक वाक्य; जैसे-सधन्यवाद, पत्रोत्तर की प्रतीक्षा में, बच्चों को स्नेह या माता-पिता को चरणस्पर्श आदि लिखे जाते हैं।

इसके बाद पत्र-लेखक आपका, आपका आज्ञाकारी, विनीत, तुम्हारा अभिन्न मित्र, तुम्हारा शुभचिंतक, शुभेच्छु आदि शब्दों का प्रयोग करता है।

6. हस्ताक्षर-पत्र के अंत में पत्र लेखक हस्ताक्षर करता है तथा कोष्ठक में अपना नाम भी लिखता है।

Creation Autonomous Academy

पत्रों के नमूने

अनौपचारिक पत्र:- सफलता पर प्रोत्साहित करते हुए छोटे भाई को पत्र।

परीक्षा भवन
अ०ब०स० विद्यालय, मेरठ
8 अगस्त, 20XX
प्रिय विनय
शुभाशीष !

आज ही तुम्हारा पत्र मिला। यह जानकर अत्यंत प्रसन्नता हुई कि तुमने अपने विद्यालय की ओर से वाद-विवाद प्रतियोगिता में भाग लिया और अपने क्षेत्र के सभी विद्यालयों में प्रथम स्थान प्राप्त किया। इससे तुमने न केवल अपने विद्यालय का बल्कि घर के सभी सदस्यों का भी सिर गर्व से ऊँचा कर दिया है। तुम्हारा नाम कल के अखबार में भी छपा है। इस सफलता के पीछे ज़रूर तुम्हारी कड़ी मेहनत ही रही होगी, ऐसा परिणाम से ज्ञात होता है। आशा है भविष्य में भी तुम इस प्रकार की प्रतियोगिताओं में भाग लेते रहोगे। तुम्हें यह जानकर प्रसन्नता होगी कि माता जी, पिता जी व तुम्हारी भाभी ने तुम्हें उपहार देने के लिए बहुत-सी चीजें अभी से खरीदकर रख ली हैं। जब तुम यहाँ आओगे, तब उन सभी चीज़ों को ले सकोगे।

शेष सब कुशल है। अपना ध्यान रखना।
तुम्हारा अग्रज
क० ख०ग०

Creation Autonomous Academy

औपचारिक पत्र:- पड़ोस में हुई चोरी की रिपोर्ट करते हुए थाना प्रभारी को पत्र।

अ०ब०स० नगर
नई दिल्ली
10 अप्रैल, 20XX
थाना प्रभारी
दरियागंज पुलिस स्टेशन
नई दिल्ली
विषय : चोरी की रिपोर्ट।
महोदय

मैं बाजार सीताराम क्षेत्र के मकान नं० 2142 में कल रात हुई चोरी की रिपोर्ट दर्ज कराना चाहता हूँ। यह मकान मेरे मकान से दो मकान छोड़कर है।

चोरी की यह घटना रात को उस समय हुई, जब श्री महावीर गोयल के परिवार के सभी सदस्य किसी शादी में शामिल होने के लिए दिल्ली से बाहर गए हुए थे। वैसे तो परिवार के सभी लोगों को उसी रात लौटना था, परंतु किसी कारण से ये लोग दो दिन के लिए और ठहर गए। न जाने इस बात का पता चोरों को कैसे चल गया। आज प्रातः मैं भी प्रतिदिन की तरह समय से अपने दफ़्तर निकल गया था, लेकिन जब शाम को घर वापस आया तो देखा कि गोयल साहब बहुत ही चिंतित से खड़े एक पुलिसकर्मी से बातचीत कर रहे थे तथा उनके परिवार के सदस्य गली के लोगों को चोरी के बारे में बता रहे थे। पूछने पर पता चला कि चोरों ने घर का कीमती सामान; जैसे-टी०वी०, वी०सी०आर०, फ्रिज, वाशिंग मशीन, मोटर साइकिल आदि तो चुरा ही लिया है, साथ ही सारे जेवर तथा लगभग साठ हजार रुपये नकद भी ले गए हैं।

श्री गोयल की स्थिति ऐसी नहीं है कि वे स्वयं आकर रिपोर्ट दर्ज करवा सकें। उन्हें मानसिक रूप से बहुत बड़ा आघात पहुँचा है। अतः आपसे अनुरोध है कि आप इस चोरी की रिपोर्ट दर्ज कर लें और इस संबंध में उचित कार्रवाई कर चोरों को जल्द से जल्द पकड़वाने का प्रयास करें।

Creation Autonomous Academy

सधन्यवाद।
भवदीय
क०ख०ग०

अध्याय 24 निबंध-लेखन
(Essay Writing)

निबंध उस गद्य-रचना को कहते हैं, जिसमें किसी विषय के बारे में कुछ कहा जाता है। निबंध के माध्यम से लेखक उस विषय के बारे में अपने विचारों और भावों को बड़े प्रभावशाली ढंग से व्यक्त करने की कोशिश करता है।

एक अच्छा, सुगठित एवं व्यवस्थित निबंध लिखने के लिए निबंध लेखक को विषय का अच्छा ज्ञान होना चाहिए तथा भाषा पर अच्छी पकड़ होनी चाहिए। फिर भी हर व्यक्ति की अपनी अलग अभिव्यक्ति होती है। इसलिए एक ही विषय पर हमें अलग-अलग तरीकों से लिखे गए निबंध मिल जाते हैं।

अच्छे निबंध की विशेषताएँ

एक अच्छे निबंध की प्रमुख विशेषताएँ निम्नलिखित हैं-

• जिस विषय पर निबंध लिखा जा रहा है, उस विषय के अनुरूप निबंध की भाषा होनी चाहिए।
• विचारों में परस्पर तारतम्य होना चाहिए।
• विषय में संबंधित सभी पहलुओं पर निबंध में चर्चा की जानी चाहिए।
• निबंध के अंतिम अनुच्छेद में ऊपर कही गई सभी बातों का सारांश आना चाहिए।
• वर्तनी शुद्ध होनी चाहिए तथा विराम चिह्नों का उचित प्रयोग किया जाना चाहिए।
• जितने शब्दों में निबंध लिखने को कहा गया है, उस शब्द-सीमा का ध्यान अवश्य रखना चाहिए।

निबंध के अंग

मुख्य रूप से किसी भी निबंध के तीन अंग होते हैं-

1. भूमिका
2. विस्तार
3. उपसंहार

Creation Autonomous Academy

1. भूमिका

भूमिका में विषय का परिचय दिया जाता है। यह वह दरवाज़ा है, जहाँ से निबंध शुरू होता है। अतः यह अंश जितना ही आकर्षक होगा, लोगों को निबंध पढ़ने के लिए उतना ही प्रेरित करेगा। भूमिका इस प्रकार से लिखी जानी चाहिए कि पाठक इसे पढ़कर पूरे निबंध को पढ़ने के लिए प्रेरित हो सके।

2. विस्तार

यह निबंध का प्रमुख अंग है। यहाँ विषय से संबंधित विभिन्न बिंदुओं पर अलग-अलग अनुच्छेदों में चर्चा की जाती है। यहाँ पर ध्यान रखना चाहिए कि प्रत्येक अनुच्छेद अपने पहले वाले तथा अपने बाद वाले अनुच्छेद से संबद्ध दिखाई दे और यह तभी संभव है, जब विचारों में क्रमबद्धता हो।

3. उपसंहार

उपसंहार निबंध का अंतिम अंग है। यहाँ तक आते-आते विषय की चर्चा समाप्त हो जाती है। यहाँ तो निबंध में कही गई सभी बातों को सारांश रूप में प्रस्तुत किया जाता है।

निबंध के भेद

विषय के प्रतिपादन की दृष्टि से निबंध के तीन भेद सामने आते हैं-

1. वर्णनात्मक निबंध
2. विवरणात्मक निबंध
3. विचारात्मक निबंध

1 . वर्णनात्मक निबंध

ये वे निबंध होते हैं, जिनमें वस्तुओं स्थानों दृश्यों, त्योहारों आदि का वर्णन किया जाता है। उदाहरण के लिए होली, दशहरा, वर्षा ऋतु आदि पर लिखे गए निबंध।

2. विवरणात्मक निबंध

इन निबंधों में घटनाओं, यात्राओं, उत्सवों तथा व्यक्तियों का परिचय आदि प्रस्तुत किया जाता है। नौका-विहार, रेल यात्रा विद्यालय का वार्षिक उत्सव, महात्मा गांधी आदि पर लिखे गए निबंध इसी प्रकार के उदाहरण हैं।

Creation Autonomous Academy

3. विचारात्मक निबंध

किसी समस्या, विचार, मनोभाव आदि पर लिखे गए विश्लेषणात्मक या व्याख्यात्मक निबंध इस कोटि में आते हैं। विज्ञान से लाभ-हानि, दूरदर्शन और शिक्षा, मित्रता, निंदा आदि इसी प्रकार के निबंधों के उदाहरण

निबंध के नमूने:-

1.स्वतंत्रता दिवस

संकेत-बिंदु :- •प्रस्तावना •परतंत्रता से स्वतंत्रता की कहानी •लालकिले पर झंडारोहण • राज्यों में स्वतंत्रता-समारोह •विदेशों के भारतीय दूतावासों में स्वतंत्रता-समारोह •उपसंहार।

स्वतंत्रता दिवस हर साल 15 अगस्त को मनाया जाता है। 15 अगस्त, 1947 को अंग्रेजों ने हमारे देश को स्वतंत्रता देने की घोषणा की थी। इसी दिन हमारे देश में लालकिले पर तथा अन्य सरकारी इमारतों पर पहली बार राष्ट्रीय ध्वज तिरंगा फहराया गया था। 15 अगस्त, 1947 को ही पं० जवाहरलाल नेहरू इस देश के प्रथम प्रधानमंत्री बने। लालकिले से झंडा फहराकर उन्होंने सारे देश की जनता को संबोधित किया। सारा देश 'भारत माता की जय, महात्मा गांधी की जय, पं० नेहरू की जय' के नारों से गूंज उठा। इस प्रकार हमारे देश के इतिहास में यह एक महान घटना थी।

इसी घटना की याद में हम हर साल 15 अगस्त के दिन इस पर्व को मनाते हैं। इस दिन देश के प्रधानमंत्री दिल्ली के लालकिले पर तिरंगा फहराकर सारे देश को संबोधित करते हैं। इस वार्ष लालकिले पर वर्तमान प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी ने झंडा फहराया और देशवासियों को संदेश दिया।

स्वतंत्रता दिवस के दिन हमारे देश के विद्यालयों, विश्वविद्यालयों, सरकारी, गैर-सरकारी संस्थाओं आदि में अवकाश रहता है। राज्यों की राजधानियों में विशेष समारोह मनाए जाते हैं। अलग-अलग प्रदेशों की राजधानियों में वहाँ के मुख्यमंत्री ध्वजारोहण करते हैं और वहाँ की जनता को संदेश देते हैं। इस दिन प्रत्येक सच्चा भारतीय अपने मन में यह प्रतिज्ञा करता है कि वह तन-मन-धन से अपने राष्ट्र की स्वतंत्रता की रक्षा करेगा।

स्वतंत्रता दिवस मनाए जाने से जनता में एक नए उत्साह की भावना का संचार हो उठता है। देशवासियों के मन में स्वाभिमान तथा देश-भक्ति की भावना जागृत होती है। अपने पुराने इतिहास की याद करके नागरिक यह प्रण लेते हैं कि जिस स्वतंत्रता को पाने के लिए हमारे नेताओं ने अपने जीवन अर्पित कर दिए, हमें किसी भी कीमत पर उसे बचाना है। हमें यह ध्यान रखना चाहिए कि देश की स्वतंत्रता से ही हमारा अस्तित्व जुड़ा हुआ है।

2. प्रदूषण एक विकट समस्या

संकेत-बिंदु :- •प्रस्तावना •विकट समस्या एवं प्रदूषण की व्यापकता •प्रदूषण के रूप •प्रदूषण के कारण एवं दुष्प्रभाव •प्रदूषण की रोकथाम •उपसंहार

Creation Autonomous Academy

'प्रदूषण' शब्द का अर्थ है-वायुमंडल या वातावरण का दूषित होना। आज हम जिस तरह के
वातावरण में जी रहे हैं, वह पूरी तरह प्रदूषित हो चुका है और प्रदूषण की मात्रा दिन-प्रतिदिन बढ़ती ही जा रही है। प्रदूषण की समस्या आज सारे विश्व के सामने विकराल रूप धारण करती जा रही है। आज प्रदूषण की समस्या ने संसार के समस्त प्राणियों के स्वास्थ्य के आगे प्रश्न चिह्न लगा दिया है।

प्रदूषण मुख्यतः तीन प्रकार का होता है-वायु-प्रदूषण, जल-प्रदूषण तथा ध्वनि-प्रदूषण। आइए तीनों ही प्रकार के प्रदूषण से संबंधित समस्याओं पर विचार करें।

वायु-प्रदूषण का प्रकोप सबसे अधिक महानगरों पर हुआ है। इसका कारण है गत दस वर्षों में भारत के प्रत्येक नगर में कारखानों की जितनी तेजी से वृद्धि हुई है, उससे वायुमंडल पर बहुत बुरा प्रभाव पड़ा है। इन कारखानों की चिमनियों से चौबीसों घंटे निकलने वाले धुएँ ने सारे वातावरण करा विषैला बना दिया है। इसके अलावा सड़कों पर चलनेवाले वाहनों के धुएँ से निकलनेवाली 'कार्बन मोनोऑक्साइड गैस' के कारण आज साँस और फेफड़ों की न जाने कितने प्रकार की बीमारियाँ आम बात हो गई हैं। शहरों की बढ़ती जनसंख्या के लिए आवास की सुविधाएँ उपलब्ध कराने के लिए वृक्षों और वनों को भी निरंतर काटा जा रहा है।

जल-प्रदूषण भी आज एक विकट समस्या बन गई है। गाँवों में तो लोगों को स्वच्छ हवा और स्वच्छ जल मिल जाते हैं, परंतु नगरों में वायु और जल दोनों ही दूषित हो गए हैं। कारखानों का दूषित जल, बचे हुए रसायन, कचरा सभी कुछ नालों से होता हुआ नदियों में बहा दिया जाता है। इसके अलावा नदी-तालाबों, जिनका जल पीने के लिए उपयोग में लाया जाता है, वहाँ लोगों का नहाना, कपड़े धोना, मल-मूत्र डालना, शवों की राख डालना, जानवरों की गंदगी डालना ऐसे अवगुण हैं, जिनके कारण जल-प्रदूषित हो जाता है और इससे तरह-तरह के रोग; जैसे-पीलिया, हैजा, पेचिश, मलेरिया, डेंगू आदि फैलते हैं।

नगरों और महानगरों में **ध्वनि प्रदूषण** भी मनुष्य के जीवन को तनावयुक्त बनाए रखने का एक प्रमुख कारण है। सड़कों पर शोर करते वाहनों की आवाज़ का हमारी श्रवण-शक्ति पर तो प्रभाव पड़ता ही है, यह हृदय-रोग तथा रक्त-चाप जैसी बीमारियों को भी जन्म देता है। लोग दूसरों की सुविधा का ध्यान न रखते हुए रेडियो, टेपरिकॉर्डर, लाउड स्पीकर तेज़ी से बजाकर ध्वनि-प्रदूषण फैलाते हैं। इन सब पर रोक लगाई जानी चाहिए।

पर्यावरण की सुरक्षा से ही प्रदूषण की समस्या को सुलझाया जा सकता है। वृक्षारोपण से यह समस्या कम हो सकती है। जनसंख्या-वृद्धि पर हमें अंकुश लगाना होगा। अणु/परमाणु परीक्षणों पर रोक लगानी होगी। रासायनिक पदार्थों का उपयोग कम करना होगा। शोर मचानेवाले यंत्रों, चिल्ल-पों करनेवाले वाहनों पर नियंत्रण रखना होगा। यदि हम ये सब कर पाने में अक्षम रहे तो आने वाले वर्षों में हमारा जीवन दूभर हो जाएगा।

Creation Autonomous Academy

अध्याय 25 चित्र-वर्णन तथा कहानी-लेखन
(Picture Description and Story Writing)

चित्रों को देखकर उनका वर्णन करना चित्र-वर्णन कहलाता है। चित्र-वर्णन के सशक्त उदाहरण चित्र-कहानियाँ, कार्टून, कॉमिक्स आदि हैं, जिन्हें बच्चे खूब पसंद करते हैं। हो सकता है, बड़े लोग उनको न समझ पाएँ लेकिन बच्चे अपनी कल्पना-शक्ति के बल पर इन चित्रों/कार्टूनों से अपनी नयी दुनिया खड़ी कर लेते हैं।

कल्पना-शक्ति सभी व्यक्तियों में होती है किंतु वे किसी एक ही वस्तु-संदर्भ के आधार पर अलग-अलग काल्पनिक निष्कर्ष तक पहुँच सकते हैं।

उदाहरण के लिए, किसी चित्र में यदि भौंकता हुआ कुत्ता दिखाया गया है, तो तीन बच्चे इसे अपने-अपने अनुभवों/अपने-अपने ढंग से समझ सकते हैं। यदि बच्चों से पूछा जाए कि चित्र का कुत्ता क्यों भौंक रहा होगा, तो तीनों बच्चों के तीन उत्तर हो सकते हैं-

1. कुत्ता भूखा है, इसलिए चिल्ला रहा है।
2. कुत्ता किसी व्यक्ति पर नाराज़ होकर भौंक रहा है।
3. उसने किसी दूसरे कुत्ते के भौंकने की आवाज सुनी है इसलिए भौंक रहा है। इन तीनों में से कौन-सा उत्तर अधिक सही है, यह इस पर निर्भर करेगा कि उसके आसपास के परिवेश में अन्य प्राणी उसके साथ किस रूप में व्यवहार कर रहे हैं।

वर्णन के लिए जो चित्र दिए जाते हैं उनमें किसी घटना का वर्णन हो सकता है। कुछ गतिविधियाँ हो सकती हैं, लोगों की विभिन्न भाव-भंगिमाएँ हो सकती हैं, कोई प्राकृतिक दृश्य हो सकता है आदि-आदि।

अध्यापक, छात्रों को चित्र-वर्णन करना कैसे सिखाएँ

प्रारंभ में छात्रों को चित्र-वर्णन करना सिखाने के लिए यह जरूरी है कि चित्र में जो कुछ भी दिखाई दे रहा है अर्थात स्थितियाँ, गतिविधियाँ, कार्यकलाप, घटनाएँ आदि से संबंधित लघु प्रश्न तैयार किए जाएँ और छात्रों से कहा जाए कि वे इन प्रश्नों के उत्तर चित्र देखकर एक जगह लिख लें।

Creation Autonomous Academy

छात्र इन प्रश्नों के उत्तरों के आधार पर आसानी से चित्र-वर्णन कर सकेंगे। इस तरह से कुछ अभ्यास कराने के बाद बिना प्रश्नों के चित्र-वर्णन कराए जा सकते हैं।

उदाहरण :- नीचे दिए गए चित्र को देखकर सहायक शब्दों की सहायता से कहानी लिखिए

1. सहायक शब्द (Helping words): ठंडी की छुट्टियाँ, दोस्तों के साथ जाना, मज़ा करना, ऊनी कपड़े पहनना, पिकनिक पर जाना, बर्फ पर खेलना, स्केटिंग, स्नोमैन, ठंड लगना ।

ठंडी की छुट्टियों के दिन आ गए। शीत ने अपनी ठंडी छाया फैलाई हुई थी, और बर्फ की चादर धक ली थी सबने। दोस्तों के साथ जाना और मज़ा करना तो बनता है। उन्होंने ऊनी कपड़े पहन लिए और पिकनिक के लिए तैयार हो गए।

पिकनिक स्थल पर पहुँचकर, वे स्नोमैन बनाने लगे। बर्फ की गोलाईयों से वे उसके शरीर को बनाने लगे, और उसकी आँखों में काले दाने डाले। एक छोटी सी नाक और मुंह बनाने में भी मज़ा आ गया।

स्केटिंग करने का भी मन किया। बर्फ पर जाकर वे अपने स्केट्स पहनकर धूम मचाने लगे। ठंड लगने लगी, लेकिन वे नहीं रुके। उन्होंने अपनी छुट्टियों को यादगार बना दिया।

ठंडी की छुट्टियों के दिन बिताने में वाक़िया मज़ा आया। दोस्तों के साथ बर्फ पर खेलने से उनकी यादें और भी ख़ास हो गई।

Creation Autonomous Academy

2. सहायक शब्द (Helping words): त्योहार मनाना, सफ़ाई करना, नए कपड़े, सजाना, खुश होना, मिठाइयाँ, पटाखे, सावधानी रखना, लक्ष्मी जी की पूजा

एक छोटे से गांव में, अपने आप में एक खास जगह थी। वहां त्योहार की खुशियों की बौछार थी। **दीपावली**, जिसे हम 'दीपावली' भी कहते हैं, उस गांव में बहुत ही धूमधाम से मनायी जाती थी।

राज, उत्सुकता से इस त्योहार का इंतजार कर रहा था। उसकी मां, मीरा, अपने घर को सजाने में लगी थी, धूल और जालियों को साफ करते हुए। वह एक पारंपरिक गीत गा रही थी, उसके हाथों में चूड़ियों की चमक जैसी बांधी थी।

नए कपड़े अलमारी में लटके थे - राज के लिए एक रंगीन कुर्ता और मीरा के लिए एक शानदार साड़ी। इन ताजगी कपड़ों में खुद को राजकुमार की तरह महसूस करने की उम्मीद थी।

सूर्य की गोलाई से नीचे जाते ही, गांव बदल गया। घरों की दीवारों पर तेल के दीपक जले, गरम रौशनी फैलाते हुए। लोग नए वस्त्र पहनकर आपस में मिलकर खुशियों का जश्न मनाते थे।

दीपावली के दिन, गांव की गलियों में खुशियों की रौशनी फैली रहती थी। राज और मीरा ने अपने घर की दीवारों पर दीपक जलाए, अपने प्रियजनों के साथ मिठाइयों का स्वाद लिया और खुशियों के लम्हों का आनंद उठाया।

इस दीपावली में राज ने अपने नए कपड़ों में खुद को राजकुमार बनाया और मीरा ने अपनी साड़ी में अपनी

Creation Autonomous Academy

अध्याय 26 मौखिक अभिव्यक्ति
(Oral Expression)

भाषा सीखते समय आप भाषा को कौशल (Skill) के रूप सीखते हैं अर्थात भाषा-अधिगम (Language Learning) कौशलों का अधिगम है।

हर भाषा के चार कौशल होते हैं-

- सुनना (Listening)
- पढ़ना (Reading)
- बोलना (Speaking)
- लिखना (Writing)

इन कौशलों में सुनना तथा बोलना कौशलों का संबंध भाषा के उच्चरित या बोलचाल के रूप से होता है तथा पढ़ना और लिखना दोनों में लिखित भाषा का प्रयोग होता है। इसीलिए सुनना व बोलना मौखिक कौशल (Oral Skills) तथा लिखना व पढ़ना लिखित कौशल (Written Skills) कहलाते हैं। भाषा के चारों कौशलों को अलग-अलग कैसे विकसित करें, अब हम इसकी चर्चा करेंगे।

श्रवण कौशल के विकास की विधि

श्रवण कौशलों को विकसित करने के लिए उचित होगा कि प्रारंभ में छात्रों को सरल कथन या वार्तालाप, चुटकुले, हास्य प्रसंग, देखे हुए नाटक, देखी हुई फ़िल्मों की कहानी सुनाएँ। बाद में सरल गद्यांश, कविताएँ आदि ली जा सकती हैं। जो भी सामग्री सुनाई जा रही है, उससे संबंधित लघु प्रश्न तैयार कर लें। ध्यान रखें, प्रश्न इस तरह के होने चाहिए कि छात्र एक शब्द या वाक्यांश में ही उनके उत्तर दे सकें। यहाँ हम केवल एक चुटकुला और एक संवाद उदाहरण के रूप में ले रहे हैं-

Creation Autonomous Academy

1. चुटकुले

पापा : प्रियंका, तुम्हारे गणित में इतने कम नंबर क्यों आए?
प्रियंका : गैरहाजिरी के कारण।
पापा : क्या? तुम गणित की परीक्षा देने नहीं गई थी?
प्रियंका : नहीं पापा, मैं तो गई थी। मेरे बगल में बैठने वाली लड़की गैरहाजिर थी।
• अब इस तरह के कुछ प्रश्न पूछे जा सकते हैं।

प्रश्न:- 1. पापा ने प्रियंका से क्या पूछा?

2. प्रियंका ने क्या उत्तर दिया?
3. गैरहाजिर का क्या अर्थ है?
4. क्या प्रियंका गणित की परीक्षा के दिन गैरहाजिर थी?
5. गणित की परीक्षा के दिन कौन गैरहाजिर थी?
6. प्रियंका के अंतिम उत्तर का क्या आशय है?
इसी तरह के अन्य चुटकुले छात्रों को सुनाएँ।

2. वार्तालाप

मदन : हैलो! सोहन, कैसे हो?
सोहन : ठीक हूँ। तुम कैसे हो? बहुत दिनों बाद याद आई?
मदन : अरे यार, बाहर गया हुआ था। अच्छा यह बताओ, कल का क्या प्रोग्राम है?
सोहन : कोई प्रोग्राम नहीं है। छुट्टी का दिन है। मस्ती करूँगा।
मदन : तो कल फ़िल्म देखने चलें?
सोहन : हाँ, चल सकते हैं। कौन-सी फ़िल्म?
मदन : थ्री ईडियट्स। सुना है, बहुत अच्छी है।
मोहन : ठीक है। कौन-सा शो?
मदज : दोपहर 12:30 वाला।
सोहन: कैसे चलेंगे?
मदन:कल ड्राइवर खाली है। हमें छोड़ देगा। मैं तुम्हें 12:00 बजे तुम्हारे घर से पिकअप कर लूँगा।
सोहन : और टिकट ?
मदन : ऑन लाइन बुक करा लूँगा।
सोहन : ठीक है। कल मिलते हैं। बाय।
मदन : बाय।
• इस वार्तालाप को सुनाकर निम्नलिखित प्रकार के लघु उत्तरात्मक प्रश्न पूछे जा सकते हैं-

प्रश्न:- 1. किन लोगों के बीच बात हो रही है?

2. मदन और सोहन के बीच क्या संबंध हो सकता है?
3. दोनों के बीच बातचीत कैसे हो रही है?
4. 'बहुत दिनों बाद याद आई' कथन से मदन का क्या तात्पर्य है?
5. वाक्य को पूरा करो- 'बाहर गया हुआ था...।'
6. मदन, सोहन को कहाँ ले जाना चाहता था?
7. दोनों कौन-सी फ़िल्म देखना चाहते हैं?
8. उन दोनों ने कौन-सा शो देखने का तय किया?
9. फ़िल्म देखने दोनों कैसे जाएँगे, इस बात का पता मदन के किस उत्तर से लगता है?
10. टिकट की व्यवस्था कौन करेगा?

Creation Autonomous Academy

वार्तालाप-उच्चारण

- जो वार्तालाप श्रवण कौशल के लिए प्रयोग में लाए गए थे, उन सभी का छात्रों को पात्र बनाकर उच्चारण का अभ्यास कराएँ।
- वार्तालापों के अभ्यास से विभिन्न संदर्भों में कैसे बातचीत की जाती है, छात्र यह समझ सकेंगे।
- उदाहरण के लिए, सब्जीवाले या फलवाले और ग्राहक के मध्य वार्तालाप के माध्यम से छात्र हिंदी की खरीददारी की शब्दावली और संरचनाओं से परिचित हो सकते हैं;

जैसे- उदाहरण- (श्याम सब्ज़ी खरीदने के लिए सब्ज़ीवाले की दुकान पर जाता है)

सब्जीवाला : आइए बाबूजी ! बताइए, क्या-क्या चाहिए?

श्याम : ये गोभी कैसे दी है?

सब्जीवाला : सस्ती ही है। कितनी चाहिए?

श्याम : पहले भाव तो बताओ।

सब्जीवाला : चालीस रुपये किलो।

श्याम : इतनी महँगी? यह तो बहुत महँगी है।

सब्ज़ीवाला : महँगी कहाँ बाबूजी ! जिस भाव मंडी से लाते हैं, उसी भाव बेच देते हैं। चलिए, आपके लिए 35 रुपये किलो लगा दूँगा। कितनी तौलूँ?

श्याम : आधा किलो दे दो और टमाटर क्या भाव हैं?

सब्जीवाला : पचास रुपये किलो।

श्याम : आधा किलो टमाटर भी दे दो। करेला कैसे दोगे?

सब्जीवाला : बेचा तो 35 रुपये है, पर आपके लिए 30 रुपये लगाऊँगा।

श्याम : ठीक है, आधा किलो करेला भी दे दो। हाँ, 100 ग्रा० हरी मिर्च और 250 ग्रा० हरा

धनिया भी दे देना। (सब्ज़ीवाला सब्ज़ियाँ तौलता है और श्याम को देता है)

श्याम : कितने पैसे हुए?

सब्ज़ीवाला : एक सौ पाँच हो गए। आप सौ रुपये ही दे दीजिए।

श्याम : (पैसे देता है और सब्ज़ी लेकर चला जाता है)

Creation Autonomous Academy

अध्यापक विभिन्न संदर्भों से जुड़े वार्तालाप तैयार कर सकते हैं और छात्रों को अभ्यास करा सकते हैं। कुछ संदर्भ हो सकते हैं-

चित्र देखकर कहानी सुनाना

चित्रों को देखकर कहानी सुनाना भी एक विशेषता है। यह विशेषता छोटे बच्चों में सबसे अधिक पाई जाती है। बच्चे चित्रों को देखकर अपनी कल्पना की उड़ान से उन चित्रों से अपने मन में तरह-तरह की कहानियों की कल्पना करते रहते हैं।

कहानी-वर्णन

सिंह और चूहा

एक बार एक छोटा-सा चूहा एक सिंह की माद में घुस गया । सिंह उसे देखकर बहुत क्रोधित हुआ और गरजकर बोला : "तुम्हारी हिम्मत कैसे हुई मैरी आज्ञा के बिना मेरी गुफा में घुसने की ? मैं तुम्हें जान से मार दूंगा ।"

बेचारा चूहा भय से कांपने लगा । उसने सिंह से विनती की : "महाराज ! कृपया मुझे मत मारिए । मेरी जिंदगी बखा दीजिए । वैसे तो मैं बहुत छोटा और दुर्बल हूं मगर मैं वादा करता हूं कि आपका एहसान जीवन भर न भूलूंगा और यदि कभी आपके किसी काम आ सका तो स्वयं को धन्य समझूंगा ।"

सिंह ने मुस्कराते हुए उस छोटे-से चूहे पर नजर डाली और बोला : "इसमें शक नहीं कि तुम एक अत्यन्त दुर्बल और छोटे से जीव हो । मगर हो बड़े वाचाल । तुम मेरे जैसे बलशाली के भला क्या काम आओगे ? फिर भी चिन्ता मत करो ।

मैं तुम्हें नहीं मारूंगा, मगर याद रखो, फिर कभी इस गुफा में कदम मत रखना ।" कहकर शेर ने उसे छोड़ दिया । "महाराज! मैं आपका कृतज्ञ हूं ।" कहकर चूहे ने हाथ जोड़ लिए । वह तो अभी भी भय से कांप रहा था । चूहा गुफा से निकलकर सिर पर पैर रखकर भाग गया ।

वैसे मन ही मन वह सिंह का बहुत एहसानमंद था । एक दिन की घटना है कि किसी शिकारी ने जंगल में जाल डाला हुआ था । सिंह शिकार की तलाश में भटक रहा था कि शिकारी के जाल में फस गया । बेचारा अभी कुछ समझ पाता कि उसका शरीर बुरी तरह जाल में लिपट गया ।

यह सब इतना अचानक हुआ था कि बेचारे सिंह को संभलने का अवसर ही नहीं मिला । घबराकर वह गरजने लगा । मगर जाल बहुत मजबूत था । बेचारे सिंह की एक न चली । जाल तोड़ना उसके लिए संभव नहीं था ।

असहाय सिंह की गर्जना उस चूहे ने सुन ली, जिसे सिंह ने एक बार जीवनदान दिया था । वह समझ गया कि सिंह किसी कष्ट में हैं । वह अपने बिल से बाहर आया । भागता हुआ सिंह के पास पहुंचा और सिंह के प्रति अपनी संवेदना जताई, बोला: "महाराज! चिन्ता मत कीजिए धैर्य रखें ।

मैं इस जाल को काट देता हूँ । आप अगले कुछ क्षणों में ही स्वतंत्र हो जाएंगे ।" और सचमुच देखते ही देखते उस छोटे से चूहे ने उस कठोर जाल को सैकड़ों स्थानों से कुतर दिया । अब क्या था, दूसरे ही क्षण सिंह जाल से आजाद हो गया । जाल से बाहर आते ही सिंह ने चूहे का आभार प्रदर्शन किया । उसे धन्यवाद दिया । चूहा भी बहुत प्रसन्न था कि आखिर वह सिंह के लिए कुछ तो कर सका ।

Creation Autonomous Academy

हिंदी
व्याकरण

Dr. Ram Raj David

Duluvamai, Manikpur, Pratapgarh,
Uttar Pradesh – 230202
Email: drramraj64@gmail.com

Creation Autonomous Academy